एतावन्तो ह्यलमल्पबुद्धीनां व्यवहाराय
बुद्धिमतां चानुक्तार्थज्ञानाय । —चरक

भेषज-संहिता

(आयुर्वेदिक फार्मेकोपिया)



प्रकाशक

बापालाल ग. वैद्य

आचार्य : श्री ओच्छवलाल नाझर आयुर्वेद महाविद्यालय,

सुपरिंटेंडेंट : श्री सुरत आयुर्वेदिक हॉस्पिटल, सुरत.

योगमासां तु यो विद्याद्देशकालोपपादितम् ।
पुरुषं पुरुषं वीक्ष्य स ज्ञेयो भिषगुत्तमः ॥

च सू. १ १२३

मूल्य : ३-८-०

मुद्रक
ध्रुवकुमार नटवरलाल माल्वी,
'गांडीव' मुद्रणालय
हवाडियो चकलो. सुरत.

कृतज्ञता–प्रकाशन

ग्रन्थकी उपयोगिता और उपादेयताके सम्बन्धमें हमें जो कुछ कहना है वह आगे प्रस्तावनामें हम कहेंगे। इस स्थल पर हम उन व्यक्तियोंके प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित करना अपना कर्तव्य समझते हैं, जिनके सहयोगसे यह ग्रन्थ तैयार होकर आयुर्वेद–प्रेमी जनता, स्नातकों एवं विद्यार्थियोंके कर–कमलोंमें अर्पित किया जा रहा है।

आयुर्वेद महाविद्यालय तथा आयुर्वेदिक हॉस्पिटल सुरत की संचालिका श्री तापी ब्रह्मचर्याश्रम सभा, सूरतके अध्यक्ष श्री. रणछोडदास त्रि. पोपावालाजी, आयुर्वेद अपना विषय न होते हुए भी, केवल इसकी उपयोगितासे आकृष्ट होकर इसे उत्कृष्ट स्थान देनेके लिये सदैव जागरूक रहते हैं। महाविद्यालय और हॉस्पिटलकी प्रत्येक प्रवृत्तिमें वे सुक्ष्म रस लेते हैं। इस भेषज–संहिताके निर्माण की मूल प्रेरणा आपकी ही थी। आरम्भसे ही इसकी रचनामें आपने रुचि दर्शायी है तथा इसकी प्रगतिको संतोषपूर्वक निहारा है। ग्रन्थ समाप्त होनेपर आपने श्री तापी ब्रह्मचर्याश्रम सभा द्वारा विशेष व्ययसे इसे प्रकाशित करनेका भार वहन किया है। आश्रम–सभाके नम्र प्रतिनिधिके रूपमें मैं इसे जनताके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। श्री पोपावालाजीके प्रति आभार व्यक्त करता हुआ, आशा रखता हूँ, कि उनकी आयुर्वेदकी उपासना इसी प्रकार स्थिर रहेगी।

ग्रन्थ तैयार करनेमें आरम्भमें तथा समय समय पर चर्चा-विचारणा, मंथन, दोहन, संकलन तथा शोभन मुद्रण आदिके कार्यमें महाविद्यालय एवं हॉस्पिटलमें हमारे सहयोगी वैद्य रणजितराय देसाई, वैद्य प्रभुभाई भक्त, वैद्य केशवभाई पटेल, वैद्य ओच्छवभाई भट्ट, वैद्य कन्हैयालाल ठाकर, वैद्य नरसिंहभाई तथा वैद्य प्रफुल्लभाईने अत्यन्त मनोयोगपूर्वक परिश्रम किया है। अतः उनका भी आभार मानता हूँ।

ग्रन्थको अल्प कालमें ही मुद्रित करने एवं सुन्दर और उठावदार होते हुए भी अल्प मूल्यमें ही इसे तैयार करनेमें गांडीव मुद्रणालयके मुद्रक श्री. ध्रुवकुमार मालवीजी, व्यवस्थापक श्री. हरगोविंद मोदीजी एवं उनके स्टाफने हमें सर्व प्रकारसे सहयोग देकर हमारा कार्य बहुत ही हलका कर दिया है। अतः उनका भी अन्तःकरणसे आभार मानता हूँ।

ता. २ जनवरी १९५७

—प्रकाशक

प्रस्तावना

श्री ओच्छवलाल हीरालाल नाझर आयुर्वेद महाविद्यालयसे संबद्ध श्री सूरत आयुर्वेदिक हॉस्पिटलके बाह्याभ्यन्तर विभागोंमें तथा स्वकीय व्यवसायमें हमें और हमारे सहकारियोंको जिस जिस रोगकी जिस जिस अवस्थामें जो–जो औषध निश्चित गुणकारी प्रतीत हुए उनका मात्रा तथा अनुपान सहित संग्रह इस भेषज–संहितामें किया गया है। अन्य संस्थाओं और व्यक्तियोंने भी समय–समय पर ऐसे संग्रह प्रकाशित किए हैं। मद्रासके राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालयने ऐसा संग्रह सर्व प्रथम प्रकट किया था। गत वर्ष उत्तर प्रदेशीय शासनने भी औषध-संग्रह (फार्मेकोपिया) बनानेके लिए एक समितिकी नियुक्ति की थी। समिति अपना कार्य समाप्त कर विसर्जित हो चुकी है। आशा है, यह संग्रह शीघ्र प्रकाशित होगा। ऋषिकुल हरिद्वारसे ऐसा ही संग्रह अभी ही प्रकाशित हुआ है।

व्यक्तिगत प्रयत्नोंमें स्व० वैद्यवाचस्पति आचार्य यादवजी त्रिकमजी, केन्द्रीय सरकार द्वारा आयुर्वेदीय स्नातकोत्तर शिक्षणके लिए जामनगरमें स्थापित संस्थाके आचार्य श्री भा० वि० गोखले तथा उत्तर प्रदेशके श्री रघुवीरप्रसादजी त्रिवेदीके ग्रन्थ स्मरणीय हैं।

संस्थाओं और व्यक्तियोंकी ओरसे ऐसे प्रयत्न होते रहे तो कुछ कालमें सामुदायिक प्रयत्न होकर आयुर्वेदका एक सर्व–भारत-मान्य संग्रह तैयार होनेका मार्ग प्रशस्त हो सकेगा। यह भेषज संहिता इसी प्रयोजनसे लिखी गयी है। औषधोंके रोगानुसार निर्देशके अतिरिक्त अन्तमें उनके पाठ भी दिये गए हैं। साथ ही संक्षेपमें आहार–द्रव्य एवं नव्य मतसे अगद और उनकी चिकित्सा भी दी है।

वाचकोंके करकमलोंमें यह तुच्छ प्रयत्न प्रस्तुत करते हुए महर्षि अग्निवेशके पदोंमें एक ही भावना हमारे मनमें कार्य कर रही है। और वह यह—

नहि विस्तरस्य प्रमाणमस्ति। न चाप्यति संक्षेपोऽल्पबुद्धीनां सामर्थ्यायोपकल्पते। तस्मादनतिसंक्षेपेणानतिविस्तरेण चोपदिष्टाः। एतावन्तो ह्यलमल्पबुद्धीनां व्यवहाराय, बुद्धिमतां च स्वालक्षण्यानुमानयुक्तिकुशलानामनुक्तार्थज्ञानायेति ॥

च० सू० ४/१६

बापालाल ग० वैद्य

सूरत — आचार्य : ओ० ना० आयुर्वेद महाविद्यालय,

२ जनवरी, १९५७ — सुपरिंटेंडेंट : श्री सूरत आयुर्वेदिक हॉस्पिटल, सूरत

भेषज-संहिता

विषयानुक्रमणी

भेषज-संहिता

भेषज-संहिता

सूरत आयुर्वेदिक हॉस्पिटल

ज्वर

प्रकार :	योग :	मात्रा	अनुपानम्
वातज :	दशमूलक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	सुदर्शनचूर्णम्	१ कर्षः	उष्णाम्बु
	महामृत्युंजयरसः	१ गुंजा	आर्द्रकरसः वा तुलसी स्वरसः
	महाज्वरांकुशरसः	,, ,,	तुलसीस्वरसः
	त्रिभुवनकीतिरसः	१–२ गुंजा	ताम्बूल, आर्द्रक, तुलसी } स्वरसः
	कल्पतरुरसः	,,	,,
	गुडूचीस्वरसः[१]	१–२ कर्षः	गुड
	शतावरीस्वरसः[२]	,,	,,
पित्तजः	पर्पट+मुस्ताक्वाथः[३]	१ कर्षः	मधु
	कटुरोहिणीचूर्णम्[४]	१/४–१/२ ,,	शर्करा

१, २–गुडूच्याः स्वरसो ग्राह्यः शतावर्याश्च तत्समः ।
निहन्यात्सगुडः पीतः सद्योऽनिलकृतं ज्वरम् ॥

३-आरोग्यलक्ष्मीरुपयाति पित्तज्वरातुरं रेणुकषायभाजम् ।
मां त्वं यथा रत्नकले स्मरार्तं कृतप्रकोपोपशमा सखीभिः ॥
(वैद्यजीवन)

४–सशर्करां कल्कपेष्यां पिबेत्कटुकरोहिणीम् ।
न हि तुल्यं तया किंचित् पित्तज्वरनिबर्हणम् ॥
(शोढल)

प्रकार :	योग :	मात्रा	अनुपानम्
	त्रिवृताचूर्णम्[१]	१/४-१/२ कर्षः	मृद्वीकारसः
	आमलक ,,	,,	,,
	आरग्वधमज्जाक्वाथः	१-२ ,, मज्जा १/४-१/२ कर्षः क्वाथः	मधु
	निम्बत्वक्क्वाथः	१-२ ,,	,,
	ज्वरघ्नक्वाथः	,, ,,	,,
	सुदर्शनचूर्णस्य फाण्टम्	२ कर्षः	शर्करा
	गोदन्तीभस्म	६-१२ गुंजा	चन्दन, बनफ्शा } शरबत
	सूतशेखररसः	२-४ ,,	,,
	ज्वरघ्नीवटी (शार्ङ्गधरः)	१-३	अमृताक्वाथः

यवपेया[२]

सर्वज्वर प्रशमनार्थ मुदाहरन्ति ।
विश्वौषधेन सह पर्पटकं मुनीन्द्राः ॥
(राजमार्तण्ड)

कफजः	पिप्पलीचूर्णम्[३]	२-४ गुंजा	मधु
	कट्फलादिक्वाथः (च.)	१-२ कर्षः	,,
	निम्बक्वाथः	१-२ कर्षः	,,
	द्वात्रिंशांगक्वाथः	,,	,,
	अभयादिक्वाथः	,,	,,

१-मृद्वीकानां रसेन वा, त्रिवृतां ज्वरितः पिबेत् ।
(च. चि. ३)

२-छर्द्यां ज्वरे पित्तभवेऽथ शूले घोरे विदाहे तृषितेऽतिमात्रम् ।
यवस्य पेयां मधुना विमिश्रां पिबेत्सुशीतां मनुजः सुखार्थी ॥
(शोढल)

३-क्षौद्रेण पिप्पली चूर्णम् लिह्यात् श्लेष्मज्वरापहम् ।
प्लीहानाहविबन्धार्ति कास श्वास विमर्दनम ॥
(हारीत चि. ३)

प्रकार :	योग :	मात्रा	अनुपानम्
	निर्गुंडीक्वाथ: समरिच:[1]	१–२ कर्ष:	,,
	सुदर्शनचूर्णम्	१ कर्ष:	उष्णजलम्
	त्रिभुवनकीर्तिरस:	१–३ गुंजा	आर्द्रकरस: वा तुलसीस्वरस:
	कल्पतरुरस:	,,	,,
	अश्वकंचुकीरस:	२–६ गुंजा	शीतजलम्
	बृहत्कस्तूरीभैरवरस:	१–२ गुंजा	आर्द्रकरस:
	संजीवनीवटी	१–३ गुंजा	,,
	आनंदभैरवरस:	१–३ गुंजा	,,
	कफकेतुरस:	१–३ गुंजा	,,
पित्तश्लेष्मज:	वासास्वरस:[2]	१–४ कर्ष:	मधु
	पटोलधान्यक्वाथ:[3]	१–२ कर्ष:	,,
	कटुरोहिणीचूर्णम्[4]	१/४–१/२ कर्ष:	उष्णाम्बु शर्करा
वातकफज:	देवदारुकषाय:[5]		

१–सिन्दुवारदलक्वाथ: सोषण: कफजे ज्वरे ।
जंघयोश्च बले क्षीणे कर्णे वा पिहिते पिबेत् ॥
(चक्रदत्त)

२–सपत्रपुष्पवासाया: रस: क्षौद्रसितायुत: ।
पित्तश्लेष्मज्वरेहन्ति साम्लपित्ते सकामलाम् ॥
(भावप्रकाश)

३- दीपनं कफविच्छेदि पित्तवातानुलोमनम् ।
ज्वरघ्नं पाचनं भेदि श्रृतं धान्यपटोलयो: ॥
(शोढल)

४–सशर्करामक्षमात्रां कटुकामुष्णवारिणा ।
पीत्वा जयेत् ज्वरं जन्तु: कफपित्तसमुद्भवम् ॥
(सु. उ. अ. ३९)

५–..........................देवदारुणि ।
कषायं विधिवत् कृत्वा पेयमेतत् ज्वरापहम् ॥ सु. उ. अ. ३९.

प्रकार :	योग :	मात्रा	अनुपानम्
	पिप्पलीक्वाथः[१]		
	ह्रस्वपञ्चमूलकक्वाथः[२]		
सन्निपातजः	द्वात्रिंशांगक्वाथः	१ कर्षः	मधु
	अभयादिक्वाथः	,,	,,
	तगरादिक्वाथः	,,	,,
	बृहत्कस्तूरीभैरवरसः	१ गुंजा	आर्द्रकस्वरसः+मधु
	सुवर्णमालिनीवसन्तः	,,	ताम्बूलरसः, मधु
	त्रिभुवनकीर्तिरसः	,,	आर्द्रक मधु, तुलसी स्वरस
	हेमगर्भपोट्टलीरसः	,,	,,
	चन्द्रोदयरसः	,,	,,
	हिंगुकर्पूरवटी	२ गुंजा	,,
विषमज्वरः	पारिजातस्वरसः		मधु
	कीडामारीचूर्णम्	१–२ माषा	उष्णाम्बु
	सुदर्शनचूर्णम्	,,	,,
	रसोनकल्कः[३]	—	—
	ज्वरघ्नक्वाथः	१ कर्षः	मधु
	हरीतक्यादिमल्लवटी	१ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	शीतांशुरसः	१ गुंजा	,,
	विषमज्वरघ्नीवटी	३–६ गुंजा	उष्णजलम्
	शीतभंजीरसः	१–२ गुंजा	आर्द्रक मधु

१–पिप्पलीभिः शृतं तोयं अनभिष्यन्दि दीपनम् ।
वातश्लेष्म विकारघ्नं प्लीहज्वर विनाशनम् ॥
(चक्रदत)

२-ह्रस्वमूलकयूषस्तु कफवातात्मके हितः (चक्रदत)

३–प्रातः प्रातः ससर्पिष्कम रसोनम् उपयोजयेत् । (सु. उ. अ. ३९)
रसोनस्य सतैलस्य प्राग्भक्तमुपसेवनम । (च. चि. ३.)

प्रकार :	योग :	मात्रा	अनुपानम्
	मेलेरीयावटी	३–६ गुंजा	उष्णजलम्
	ज्वरघ्नीवटी	१–३ गुंजा	जलम्
	सौराष्ट्रीमल्लः (सि. भे. म.)	१ गुंजा	जलम्
	त्रिभुवनकीर्तिरसः	१–३ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	अमृतारिष्टः	१–२ कर्षः	जलम्
	रसोनयोगः	—	—
जीर्णज्वरः	पारिजातपत्ररसः	१ कर्षः	मधु
(विषमः	गुडूचीस्वरसः वा क्वाथः[१]	१ कर्षः	मधु+पिप्पली
विषमेतरश्च)	वर्धमानपिप्पलीयोगः	१–३, ६ प्रत्यहं वर्धनम्	—
	गुडपिप्पलीयोगः[२]	१/४ कर्षः	दुग्धम्
	अभयादिक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	निदिग्धिकादिक्वाथः	,,	,,
	निम्बादिचूर्णम्	४–६ माषाः	उष्णजलम्
	सुवर्णवसन्तमालती	१–२ गुंजा	पिप्पली+मधु
	अग्नितुण्डीवटी	,,	जलम्
	संशमनीवटी	४–६ माषः	दुग्धम्
	आरोग्यवर्धनीरसः	३–६ गुंजा	दुग्धम्
	लघुवसन्तः	२–४ गुंजा	पिप्पली+मधु
	मुद्गामलकयूषः[३]		
	गुडपिप्पली[४]		

१–पिप्पलीमधु संयुक्तः क्वाथः छिन्नोद्भवोद्भवः ।
जीर्णज्वर कफध्वंसी........ (भावप्रकाश)

२, ४–कासाजीर्णारुचिश्वास हृत्पाण्डुकृमिरोगनुत् ।
जीर्णज्वरेऽग्निसादे च शस्यते गुडपिप्पली ॥
(शोढल)

३–मुद्गामलकयूषस्तु वातपित्तज्वरे हितः ।
(भावप्रकाश)

प्रकार :	योग :	मात्रा	अनुपानम्
सुतिकाज्वरः	देवदार्वादिक्वाथः	१ कर्षः	मधु
	दशमूलक्वाथः	१ कर्षः	,,
	कुबेराक्षचूर्णम्	१–२ माषः	जलम्
	प्रतापलंकेश्वररसः	३–६ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	त्रिभुवनकीर्तिरसः	३–६ गुंजा	,,

ज्वरे उपद्रवोपचाराः

वमने	शठीचूर्णम् (छर्दिरिपु)	२–४ गुंजा	मधु, शर्कराजलम्
	लोहबाणपुष्पम्	,,	,,
	षडङ्गपानीयः	—	—
	लाजमण्डः	—	—
	मृद्भृष्टलोष्टोद्भवं जलम्	२–४ कर्षः	—
	चन्दनशार्करम्	,,	—
	अनारशार्करम्	—	—
शिरोवेदना-याम्	दशांगलेपः कपाले प्रलेपार्थम्		
	लवङ्गलेपः ,,		
	कट्फलनस्यम्		
	सप्तामृतलोहम्	३–६ गुंजा	तुल्यभाग घृतमधु सहितम्
दाहे	चणकयूषः[1]		
	शतधौतघृतलेपः		
	चन्दनलेपः		
	चन्दनादितैलम्		
	निम्ब+अरिष्टफेनलेपः		
	धान्यक–शर्करा–पानीयम्[2]		
	उशीरासवः	२–२॥ कर्षः	जलम्
	चन्दनासवः	,,	,,

१–महादाहे प्रदातव्यो यूषश्चणकसम्भवः ॥
(भाव प्रकाश)

२–पर्युषितं धान्यजलं प्रातःपीतं सशर्करं पुंसाम् ।
अन्तर्दाहं शमयति प्रवृद्धमपि तत्क्षणात्सिद्धम् ॥
(शोढल)

प्रकार :	योग :	मात्रा	अनुपानम्
	मुक्तापिष्टि	२–३ गुंजा	मधु
	प्रवालपिष्टि	,,	
	किरात धान्य शर्करा पानीयम्	२–४ कर्षः	
	त्रिवृत्चूर्णम् [1]		
	आरग्वधम् [2]		
	गुडूचीक्वाथः [3]		
	आमलकरसः [4]		
	ज्वरपर्पटी	१–३ माषा	जलम्
आक्षेपके	पारसीकयवानी	३–६ गुंजा	जलम्
	तगरादिक्वाथः	१–१॥ कर्षः	मधु
	लक्ष्मीनारायणरसः	१ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	स्मृतिसागररसः	१ गुंजा	,,
	सौभाग्यम्	३ गुंजा	मधु
तृष्णायाम्	षडंगपानीयम्		
	धान्यकशर्करा		
	यष्टिमधुचूर्णम्		
	मृद्भृष्टलोष्टोद्भवं जलम्		
अनिद्रायाम्	पारसीकयवानी	३–६ गुंजा	मधु
	विजयाचूर्णम्	३–६ गुंजा	जलम्

१–शान्तिं नयेत् त्रिवृच्चापि सक्षौद्रं प्रबलं ज्वरम् ।
(सु. उ. अ. ३९)

२–आरग्वधं वा पयसा मृद्वीकानां रसेन वा ।
.... पयसा ज्वरितः पिबेत् ॥
(च. चि. ३)

३–शृतशीतकषायं वा गुडूच्याः पेयमेव तु ॥
(सु. उ. अ. ३–६)

४–रसमामलकानां वा घृतभृष्टं ज्वरापहम् ।
(च. चि. ३)

प्रकार :	योग :	मात्रा	अनुपानम्
	तशेखररसः	१–३ गुंजा	मधु
	निद्रोदयरसः	१ गुंजा	जलम्
	सर्पगंधाघनवटी	३–६ गुंजा	,,
	नागरामलकपेया[१]		
प्रलापे	तगरादिक्वाथः	१–१।। कर्षः	मधु
	कस्तूरीभैरवरसः	१ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	सूतशेखररसः	,,	,,
	हिंगुकर्पूरवटी	१–२ गुंजा	,,
मूत्रकृच्छ्रे	कुमारीस्वरसः[२]	१–४ कर्ष	
	ज्वरपर्पटी	०।–०।। कर्ष	गोक्षुरक्वाथः
ज्वरे	एरण्डमूल क्षीरपाकः[३]	०।।–१ कर्षः	
परिकर्ति-	शिवाचूर्णम्	१/८–१/४ कर्ष	घृत-मधु-तैल-गुड-सहितम्
कायाम्	नागरक्वाथे एरण्डतैलम्		
	कुटजक्वाथे ,,		
विसर्पज्वरे	आमलकरसः[४]	१ कर्षः	
	सारिवाक्वाथः		

आस्यवैरस्ये द्राक्षा शर्करा दाडिम[५]

१–अस्वेदनिद्रः तृष्णार्तः पिबेत्पेयां सशर्कराम् ।
नागरामलकैःसिद्धां घृतभृष्टां ज्वरापहाम् ।।
(च. चि. ३)

२–ज्वरेषु मूत्रकृच्छ्रं चेत् कुमारीस्वरसं पिबेत् ।
(वैद्यमनोरमा)

३–एरण्डमूलोत्क्वथितं ज्वरात् सपरिकर्तिकात् ।
पयो विमुच्यते पीत्वा... (च. चि. ३)

४–रसमामलकाद्वा घृतमिश्रं ज्वरापहम् । (च. चि. ११)

५–शर्करादाडिमाभ्याञ्च द्राक्षादाडिमयोस्तथा ।
वैरस्ये धारयेत्कल्कं गण्डूषश्च तथा हितः ।।
(बंगसेन)

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
	मातुलुङ्गफलकेसरम्[१]		
शीताङ्गे–	शुण्ठीचूर्णघर्षणम्		
हृदयावसादे	कस्तूरीभैरवरसः	१–२ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	चन्द्रोदयरसः	,,	,,
	हेमगर्भपोट्टलीरसः	,,	,,
मोह–	अरिष्टफेन नस्यम्		
मूर्च्छायाम्	सैन्धव+श्वेत मरिचनस्यम		
	सर्षप+कुष्ठ ,,		
	श्वासकुठारस्य नस्यम् अंजनं च		
हिक्कायाम्	कल्पतरुरसनस्यम[२]		
	छर्दिरिपु	३–६ गुंजा	मधु
	मयूरपिच्छभस्म	,,	,,
	सूतशेखररसः	१–३ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	श्वासकुठाररसः	,,	,,
	हिंगुनस्यम्		
	स्त्रीस्तन्यनावनम्		
	सैन्धवजलनस्यम्[३]		
	शुण्ठीशर्करानस्यम्[४]		
	हिङ्गुधूपः[५]		

१–साज्यसैन्धवमरोचकापहं मातुलुङ्गफलकेसरं स्मृतम् । (वैद्यजीवन)
केसरं मातुलुङ्गस्य मधुसैन्धव संयुतम् ।
वैरस्ये धारयेत्कल्कम्...... ॥ (सु. उ. अ. ३९)

२–मोहामयेन मुग्धं, बोधयितुं यादृशः शक्तः ।
कल्पतरुनामधेयो रसो न तादृक् परं किंचित् ॥
(भावप्रकाश)

३, ४, ५–नीरेण सिन्धूत्थरजोऽतिसूक्ष्मं
नस्येन नूनं विनिहन्ति हिक्काम् ।
शुण्ठी हठाद् वा सितया समेता
धूपोऽथवा हिङ्गुसमुद्भवश्च ॥
(भावप्रकाश)

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
मधुरज्वरः (टायफॉयड)	अभयादिक्वाथः	१–१॥ कर्षः	मधु
	मधुरज्वरान्तक-क्वाथः (यो. र.)	,,	,,
	सुदर्शनचूर्णस्य फाण्टः	१–३ कर्षः	
	ज्वरघ्नीवटी (शार्ङ्गधरः)	१–३ गुंजा	गुडूचीक्वाथः
	स्वर्णवसन्तः	१ गुंजा	मधु–पिप्पली
	मुक्तापिष्टिः	३ गुंजा	मधु
	प्रवालपिष्टिः	,,	,,
पुनरावर्तकः	सुदर्शनयोगः	१ कर्षः	जलम्
	वर्धमानपिप्पलीयोगः		
	सुदर्शनचूर्णम्	१ कर्षः	उष्णजलम्
	स्वर्णवसन्तः	१ गुंजा	मधु

अतीसार रोग

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
वातजः	आम्रमज्जाचूर्णम्	१–२ माषाः	तक्रम्
	अरलुपुटपाकः		
	चित्रकचूर्णम्	१–२ माषाः	तक्रम्
	निर्मलीचूर्णम्	,,	जलम्
	अतिविषाचूर्णम्	,,	,,
	हिंग्वष्टकचूर्णम्	,,	तक्रम्
	शुण्ठीएरण्डपुटपाकः	,,	,,
	आनंदभैरवरसः	२–३ गुंजा	आर्द्रक+मधु
कफजः	चित्रकचूर्णम्	१–२ माषाः	तक्रम्
	अग्निकुमाररसः	२–३ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	आनंदभैरवरसः	,,	,,
	अग्नितुण्डीवटी	३ गुंजा	जलम्
	संजीवनीवटी	३–६ गुंजा	तक्रम्
पित्तजः	मुस्ताचूर्णम्	२–४ माषाः	,,
	बिल्वचूर्णम्	,,	,,
	शक्रयवचूर्णम्	,,	,,
	कुटजत्वक्चूर्णम्	,,	,,

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
	नागपुष्पचूर्णम्	२–४ माषाः	तक्रम्
	स्निग्धजीरकचूर्णम्	,,	,,
पित्तजः	मोचरसचूर्णम्	२–४ माषाः	,,
	शंखजीरकचूर्णम्	,,	,,
	बिल्वादिचूर्णम्	,,	,,
	वृद्धगंगाधरचूर्णम्	,,	,,
	कामदुधारसः	१–२ गुंजा	मधु
	कुटजघनवटी	३–६ गुंजा	तक्रम्
आमातीसारः	शिवा+नागरचूर्णम्	२–४ माषाः	जलम्
	बिल्वादिचूर्णम्	,,	,,
	शुण्ठीएरण्डपुटपाकः	,,	,,
	रसपर्पटी	१–२ गुंजा	तक्रम्
	शिवा	३–६ ,,	घृत तैल मधु गुड
रक्तजः	नागपुष्पचूर्णम्	२–४ माषाः	जलम्
	हिरादक्खनचूर्णम्	,,	,,
	मोचरस ,,	,,	,,
	सर्जरस ,,	,,	,,
	स्निग्धजीरकचूर्णम्	,,	,,
	वृद्धगंगाधर ,,	,,	तक्रम
	जातीफलादि ,,	,,	,,
	जम्बूत्वक् ,,	,,	दुग्धम्
	कोमल बब्बूलपत्रचूर्णम्	,,	,,
	कुटजादिघनवटी (अहिफेनयुक्ता)	३–६ गुंजा	तक्रम्
	कर्पूररसः	,,	दाडिमस्वरसः
	कुटजारिष्टः	१–२ कर्षः	जलम्
	प्रियङ्गु·	३–६ माषाः	दुग्धम्
	रसाञ्जनम्		
ज्वरातीसारः	मुस्ताचूर्णम्	२–४ माषाः	,,
	अरलुपुटपाकः	,,	,,
	कुटजत्वक्चूर्णम्	४–६ ,,	तक्रम्

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
	शक्रयवचूर्णम्	४–६ माषाः	तक्रम्
	अतिविषा ,,	,,	,,
	बालचातुर्भद्रचूर्णम्	,,	,,
	गुलेअरमानी जलम्		
	आनंदभैरवरसः	३–६ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	रामबाणरसः	,,	,,
	संजीवनीवटी	,,	जलम्
प्रवाहिका	शिवाचूर्णम	२–४ माषाः	घृत+तैल+मधु+गुड
	स्निग्धजीरकम्	,,	शर्करा+जलम्
	जातीफलादिचूर्णम्	,,	तक्रम्
	एरण्डमूलक्वाथः	१ कर्षः	मधु
	पलाशफलनिर्यूहः	२–४ माषाः	पयः
	कर्पूररसः	१–२ गुंजा	मधु
	वेदनान्तकरसः	,,	,,
	आमराक्षसी	,,	,,
	चॉकमिश्रणम्	,,	,,

ग्रहणीरोगः

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
वातजा	चित्रकादिवटी (चरक)	३–६ गुंजा	तक्रम्
	रसोनादिवटी (वै. जी.)	,,	,,
	जीरकादिमोदकः	२–४ माषाः	,,
	ग्रहणीगजकेसरी	१–२ गुंजा	,,
पित्तजा	वृद्धगंगाधरचूर्णम्	२–४ माषाः	,,
	भूनिम्बादिचूर्णम (चरक)	,,	,,
	ताम्रपर्पटी	१–२ गुंजा	,,
	कुटजावलेहः	१ कर्षः	,,
	कुटजारिष्टः	२ ,,	जलम्
कफजा	चित्रकादिवटी (चरक)	३–६ गुंजा	तक्रम्
	ग्रहणीक्षारः (चरक)	२–४ माषाः	,,
	क्षारगुटिका (चरक)	३–६ गुंजा	तक्रम्
	पंचामृतपर्पटी	१–३ ,,	,,
	रसपर्पटी	,,	,,

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
त्रिदोषजा	लोकनाथरसः	१–३ गुंजा	मधु
	रसपर्पटी	,,	तक्रम्
	स्वर्णपर्पटी	,,	,,
	पंचामृतपर्पटी	,,	,,
	कठिन्यादिपेया (भै. र.)		
	तक्रारिष्टः	१ कर्षः	जलम्

अर्शोरोगः

वातजः	चित्रकचूर्णम्	२–४ माषाः	तक्रम्
	सुरणम् (वन्यम्)	,,	,,
	नारसिंहचूर्णम्	,,	घृत+शर्करा
पित्तजः	तक्रारिष्टः	१ कर्षः	जलम्
	कुटजारिष्टः	,,	,,
	अभयारिष्टः	,,	,,
	द्राक्षारिष्टः	,,	,,
कफजः	अभयाचूर्णम्	२–४ माषाः	गुडम्
	अर्शोघ्नीवटी	३–६ गुंजा	तक्रम्
रक्तार्शः	कुटजचूर्णम्	२–४ माषाः	,,
	कुटजधन		
	नागपुष्पचूर्णम्	२–४ माषाः	शर्करा
	अर्शोघ्नीवटी	३–६ गुंजा	तक्रम्
	चाङ्गेर्यादिघृतम	१ कर्षः	दुग्धम

बाह्योपचारेः—

लेपः कासीसादितैलम

रसकर्पूर+नवनीतम्

स्नुहीदुग्धभावितहरिद्रा

ऐलेय+एरण्डतैलम्

मायुपालम्+अहिफेनम् एरण्डतैलेन सहितम्

आर्कं पयः सुधाकाण्डं कटुकालाबुपल्लवाः।

करञ्जो बस्तमूत्रंच लेपनं श्रेष्ठमर्शशाम् (च.)

प्रकार:	योग:	मात्रा	अनुपानम्
धूम:	देवदालीफलानाम्		
	कोषातकीफलानाम्		
	अर्कपत्राणाम्		
	शमीपत्राणाम्		
	नृकेशाः		
	सर्पनिर्मोक:		

अग्निमान्द्यरोगः

वातज:	हिंग्वष्टक चूर्णम्	२–४ माषाः	घृतौदनम् (प्राग्भक्तम्)
	शिवात्रयी ,,	,,	जलम्
	अग्नितुंडीवटी	३–६ गुंजा	,,
	चित्रकादिवटी	,,	तक्रम्
	विषतिन्दुकवटी	,,	जलम्
	रसोनादिवटी	,,	तक्रम्
	आर्द्रकावलेह:[1]	१ कर्ष:	
पित्तज:	कपर्दिकाभस्म	२–३ गुंजा	मधु
	शंखभस्म	,,	,,
	शुक्तिभस्म	,,	,,
	प्रवालभस्म	,,	,,
कफज:	विषतिन्दुकचूर्णम्	१–३ गुंजा	जलम्
	वर्धमानपिप्पलीयोग:		दुग्धम्
	त्रिकटुचूर्णम्	३–६ गुंजा	मधु वा तक्रम्
	हिंग्वष्टकचूर्णम्	२–४ माषाः	घृतम् वा तक्रम्
	अग्निकुमाररस:	१–३ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	क्रव्यादरस:	,,	,,
	चित्रकादिवटी	३–६ गुंजा	तक्रम्
	लोकनाथरस:	१–२ ,,	मधु
	रसोनादिवटी	३–६ ,,	तक्रम्
	द्राक्षारिष्ट:	१–२ कर्ष:	जलम्

१—समशुक्तार्द्रकमाषा मन्दे वह्नौ (वाग्भट)

अजीर्णरोगः

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
आमाजीर्णम्	चित्रकचूर्णम्	१–२ माषा.	जलम्
	अजमोदाचूर्णम्	,,	,,
	नागर+गुड	२–४ माषाः	,,
	अमया+गुड	,,	,,
	लवणभास्करचूर्णम्	,,	तक्रम्
	शिवात्रयी ,,	,,	,,
	दावानल ,,	,,	,,
	षड्धरणयोगः (सुश्रुत)	,,	,,
विदग्धाजीर्णम्	अभयाचूर्णम्	४–८ माषाः	जलम्
	मत्स्याचूर्णम्	१–२ ,,	,,
	अविपत्तिकरचूर्णम्	२–४ ,,	,,
	आरोग्यवर्धनी	३–६ गुंजा	दुग्धम्
	कल्याणवटकः	२–४ माषाः	जलम्
विष्टब्धाजीर्णम्	शिवाचूर्णम्	०।–०॥ कर्षः	घृत+तैल+मधु
	द्विरुत्तरचूर्णम्	,,	जलम्
	हिंग्वष्टकचूर्णम्	,,	,,
	शिवात्रयीचूर्णम्	०।–०॥ कर्षः.	तक्रम्
	लवणभास्करचूर्णम्	,,	,,

विषूचिकारोगः

विषूचिका	चिंचाभल्लातकयोगः	२–४ माषाः	तक्रम्
	रसोनादिवटी (वै. जी.)	३–६ गुंजा	,,
	संजीवनीवटी	,,	,,
	क्रव्यादरसः	१–२ माषाः	,,
	कर्पूरासवः	१–२ कर्षः	जलम्

कृमिरोगः

गंडूपदकृमिः (राउंड वर्म)	कम्पिल्लकचूर्णम्	३–६ गुंजा	जलम्
	विडंग ,,	१–२ माषाः	,,
	किरमाणीयवानी	३–६ गुंजा	,,

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
	कृमिमुद्गररसः	३–६ गुंजा	मधु
	कृमिकुठाररसः	,,	,,
	कृमिघ्नक्वाथः		
सूत्रकृमिः (थ्रेड वर्म)	निम्बक्वाथबस्तिः		
	कुबेराक्षपत्ररसः		
	कुबेराक्षचूर्णम्	३–६ गुंजा	जलम्
ब्रध्ननिभाः (टेप वर्म)	विडंगचूर्णम्	०।–०॥ कर्षः	जलम्
बडिशकृमि (हुक वर्म)।	यवानीसत्त्वम्	१ गुंजा	,,
	हंसपदीसारः	३–६ ,,	,,

पांडुरोगः

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
वातजः	रौप्यभस्म	१ गुंजा	मधु
	अभ्रकभस्म	,,	,,
	नागभस्म	,,	,,
	नवायसलोहः	,,	घृत+मधु
	ताप्यादिलोहः	,,	,,
	लोहगर्भः	१–३ गुंजा	मधु
	दशमूलारिष्टः	१–२ कर्षः	जलम्
	लोहासवः	,,	,,
	कुमारीआसवः	,,	,,
	धात्रीलेहः (वाग्भट)	,,	—
पित्तजः	धात्रीचूर्णम्	२–४ माषाः	जलम्
	आरोग्यवर्धनीरसः	३–६ गुंजा	दुग्धम्
	धात्रीलोहः	१–३ ,,	,,
	सप्तामृतलोहः	,,	घृत+मधु
	स्वर्णमाक्षिकभस्म	,,	मधु
	प्रवालभस्म	,,	,,
	मुक्ताभस्म	,,	,,
	त्रिफलारिष्टः	१–२ कर्षः	जलम्

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
कफजः	हरीतकीचूर्णम्	०।-०॥ माषः	गोमूत्रम्
	पुनर्नवामंडूरम्	३-६ गुंजा	तक्रम् वा गोमूत्रम्
	मंडूरवटकः	,,	,,
मृत्-पांडुः	मृद्दारशृंगः	,,	गोमूत्रम्
	हरिद्राचूर्णम्	०।-०॥ कर्षः	जलम्
	आरोग्यवर्धनीरसः	३-६ गुंजा	गोमूत्रम्
	ताप्यादिलोहः	१-२ ,,	मधु
	मंडूरभस्म	,,	गोमूत्रम्
	लोहभस्म	,,	मधु
कृमिजपांडुः	कृमिवत् पांडुवच्च		

कामलारोगः

१-रुद्धपथ कामला (शाखाश्रित) २-कोष्ठशाखाश्रित कामला ३-कुंभकामला	हरीतकीचूर्णम्	०।-०॥ कर्षः	गुडम् वा गोमूत्रम्
	कटुकी+नवसिन्धु	३-६ गुंजा	गोमूत्रम्
	हरिद्राचूर्णम्	०।-०॥ कर्षः	कुमारीस्वरसः
	निम्बरसः+मरिचम्	,,	जलम्
	इंगुदीपत्ररसः	,,	,,
	वासादिक्वाथः	१-२ कर्षः	मधु
	आरोग्यवर्धनीरसः	३-६ गुंजा	दुग्धम्
	नवायसलोहः	१-३ ,,	घृत+मधु
	मंडूरवटकः	,,	तक्रम् वा गोमूत्रम्
	अगस्त्यहरीतकीलेहः	१-२ कर्षः	——
	अभयारिष्टः (सुश्रुत)	,,	जलम्
	कुमारीआसवः	,,	,,
	शिलाजतु	०।-०॥ कर्षः	गोमूत्रम्
नस्यार्थे	देवदालीचूर्णम्		
	तिक्तकोषातकी ,,		
	द्रोणपुष्पीरसः		
	अर्कमूल+तण्डुलजलम्		
हलीमकः	यष्टिमधुचूर्णम्	०-०॥ कर्षः	मधु

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
(एडीसन्स डिसीज़)	गुडूची घृतम्[1]		

रक्तपित्तरोगः

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
ऊर्ध्वगम्	विरेचनं देयम्-		
	त्रिवृत्चूर्णम्+शर्करा	०।-०॥ कर्षः	दुग्धम्
	द्राक्षा	,,	जलम्
	यष्टिमधुचूर्णम्	,,	,,
	वासाचूर्णम्	२-४ माषाः	दुग्धम्
	दूर्वास्वरसः	२-५ कर्षः	मधु
	कटुरोहिणीचूर्णम्	३-६ गुंजा	जलम्
	प्रियङ्गु (घऊंला)	,,	शर्करा+दुग्धम्
अधोगम्	वमनं कार्यम्		
	यष्टिमधुचूर्णम् (वमनार्थम्)	०।-०॥ कर्षः	जलम्
	निम्बस्वरसः (वमनार्थम्)	,,	,,
	बोलपर्पटी	३-६ गुंजा	,,
सामान्य चिकित्सा	वासाक्वाथः चूर्णम् स्वरसो वा[2]	२-४ माषाः	शर्कराजलम्
	उशीर चूर्णम्	,,	,,
	चन्दन ,,	,,	,,
	नागपुष्प ,,	,,	,,
	प्रियङ्गु ,,	,,	,,

१-गुडूची स्वरसे सर्पिः सक्षीरं माहिषं घृतम् ।
चतुर्गुणेन पयसा पाययेत् तत् हलीमके ॥ (शोढल)

२-आटरूषक मृद्वीकापथ्याक्वाथः सशर्करः ।
मधुमिश्रः श्वासकास रक्तपित्तनिबर्हणः ॥ (चरक)
अटरूषक निर्यूहे प्रियङ्गुमृत्तिकाञ्जने ।
विनीय लोध्रं क्षौद्रं च रक्तपितहरं पिबेत् ॥ (चरक)

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
	लाक्षा चूर्णम्	२–४ माषाः	शर्कराजलम्
	यष्टिमधु ,,	,,	,,
	गैरिक ,,	,,	,,
	रसाञ्जनम्	,,	,,
	कामदुघारसः	१–३ गुंजा	गोदुग्धम्
	चन्द्रकलारसः	,,	,,
	एलादिवटी	३–६ ,,	,,
	गोदन्तीभस्म	१–२ माषाः	मधूदकम
	प्रवालभस्म	३–६ गुंजा	,,
	मुक्ताभस्म	,,	,,
	तुगाक्षीरीभस्म	,,	,,
	सौराष्ट्रीभस्म	,,	शर्कराजलम्
	कूष्माण्डअवलेहः	१–२ कर्षः	----
	अरविंदासवः	,,	——
	वासाघृतम्	,,	सक्षौद्रम्
मेढ्रप्रवृत्ते	शतावरीगोक्षुरकक्वाथः	२–४ कर्षः	शर्करा
	कमलक्वाथः	,,	,,
	यष्टिमधुक्वाथः	,,	,,
	चन्दनक्वाथः	,,	,,
	लोष्टपक्वजलम्[1]		
	मृत्प्रसादम्[2]		
	पञ्चगुणजले शृतं गव्यं वा छागं पयः[3]		
घ्राणप्रवृत्ते	ऊर्ध्वगरक्तपित्तवत्		

१–पक्वस्य लोष्टस्य च यः प्रसादः
सशर्करः क्षौद्रयुतः सुशीतो
रक्तातियोगप्रशमाय देयः ॥ (चरक)

२–समृत्प्रसादं सह यष्टिकाम्बुना ।
सशर्करं रक्तनिबर्हणं परम् ॥ (चरक)

३–पञ्चगुणे जले शृतं गव्यं दुग्धम्, छागं पयः वा रक्तपित्ते अतीव प्रशस्तम् ।

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
नस्यार्थे	स्त्रीस्तन्यम्		
	दाडिमपत्रतोयम्		
	द्राक्षारसः		
	इक्षुरसः		
विट्पथसंप्रवृत्ते	मोचरसेन सिद्धं पयः (च०)		
	रक्तातिसारवत्		

राजयक्ष्मा-उरःक्षत-क्षीणरोगाः

सामान्यचिकित्सा	वर्धमानपिप्पलीयोगः		दुग्धम्
	रसोनदुग्धकल्पः		
	नागबलाचूर्णम्	०॥-१ तोलकम्	,,
	सितोपलादिचूर्णम्	२-४ माषाः	,,
	कुलीरभस्म	३-६ गुंजा	मधु
	एलादिवटी	,,	दुग्धम्
	संशमनीवटी	,,	अमृताक्वाथः
	वासावलेहः	१-२ कर्षः	दुग्धम्
	अमृतप्राशावलेहः	,,	,,
	च्यवनप्राशावलेहः	,,	,,
	अगस्त्यहरीतकीलेहः	,,	,,
	जीवन्त्यादिघृतम्	,,	,,
	बृहच्छागलादिघृतम्	,,	,,
अभ्यङ्गार्थे	लाक्षादितैलम्		
	चन्दनादितैलम्		
	नारायणतैलम्		
यक्ष्मणि			
सततज्वरे	अमृताक्वाथः	२-४ कर्षः	मधु
	पुनर्नवाक्वाथः	,,	,,
	दशमूलक्वाथः	,,	,,
	अभयादिक्वाथः	,,	,,
	जयमंगलरसः	१-२ गुंजा	,,
	सुवर्णवसन्तमालती	,,	,,

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
	राजमृगांकरसः	१–२ गुंजा	मधु
	त्रैलोक्यचिन्तामणिरसः	,,	,,
	संशमनीवटी	०॥–१ कर्षः	दुग्धम्
	अभ्रक भस्म	२ गुंजा	मधु
	प्रवाल ,,	,,	,,
	शृंग ,,	,,	,,
	मुक्तापिष्टि	,,	,,
	अमृतासत्व	,,	,,
	प्रवालपंचामृत	,,	,,
यक्ष्मणि			
प्रततकासे	जूफादिक्वाथः	१–३ कर्षः	मधु
	सितोपलादिचूर्णम्	२–४ माषाः	,,
	एलादिवटी	३–६ गुंजा	,,
	खदिरादिवटी	,,	,,
	लवंगादिवटी		
	एलादिघृतम्	१–२ कर्षः	दुग्धम्
	वासाघृतम् (चरक)	,,	,,
	कंटकारी अवलेहः	,,	,,
	च्यवनप्राशावलेहः	,,	,,
	यष्टिमधुवटी		
यक्ष्मणि			
रक्तष्ठीवने	लाक्षाचूर्णम्[1]	२–४ माषाः	शृतक्षीरसर[2]
	वासाचूर्णम्	,,	,,
	प्रियंगुचूर्णम्	,,	,,
	यष्टिमधुचूर्णम्	,,	,,
	लाजभक्षणम्		
	धात्रीचूर्णम्	,,	,,

१–उरो मत्वा क्षतं लाक्षां पयसा मधु संयुताम् ।
सद्य एव पिबेज्जीर्णे पयसाऽद्यात् सशर्करम् ॥ (चरक)

२–क्षामः क्षीणः क्षतोरस्कस्त्वनिद्रः सबलेऽनिले ।
शृतक्षीरसरेणाद्यात् सक्षौद्रघृतशर्करम् ॥ (चरक)

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
	चंद्रकलारसः	२–४ गुंजा	शृतक्षीरसर
	मुक्तापिष्टि	,,	मधु
	कहरबापिष्टि	,,	,,
	सौराष्ट्री	,,	जलम्
	च्यवनप्राशावलेहः	१–२ कर्षः	दुग्धम्
	अगस्त्य हरीतकी अवलेहः	,,	,,
यक्ष्मणि अतीसारे	जातीफलादिचूर्णम्	२–४ माषाः	तक्रम्
	लोकनाथरसः	२–४ गुंजा	मधु
	ग्रहणीगजकेसरीरसः	,,	,,
	कर्पूररसः	,,	,,
	वेदनान्तकरसः	,,	,,
	सुवर्णपर्पटी	१–२ गुंजा	,,
	पंचामृतपर्पटी	,,	,,
	रसपर्पटी	,,	,,
	ताम्रपर्पटी	,,	,,
यक्ष्मणि स्वरभेदे	यष्टिमधुचूर्णम्	२–४ माषाः	मधु
	सितोपलादिचूर्णम्	,,	,,
	एलादिवटी	३–६ माषाः	दुग्धम्
	यशदभस्म	१–२ गुंजा	मधु
	च्यवनप्राशावलेहः	१–२ कर्षः	दुग्धम्
	अमृतप्राशघृतम्	,,	,,
यक्ष्मणि अरुचौ	लवणार्द्रक भक्षणम्		
	रसोनदुग्ध कल्पः		
	वर्धमान पिप्पलीयोगः		
	यवानीषाडवम्		
	तालीसादिचूर्णम्	१–२ कर्षः	मधु
	समशुक्तार्द्रकप्राशः		
यक्ष्मणि वमने	लाजभक्षणम्		
	सुरमावटी	२–४ गुंजा	दुग्धम
	मयूरपिच्छभस्म	३–६ ,,	मधु

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
यक्ष्मणि दाहे	प्रियंगुचूर्णम्	२–४ माषाः	दुग्धम्
	यष्टिमधुचूर्णम	,,	,,
	वासाचूर्णम	,,	,,
	धान्यशर्करा	पानीयम्	
	चन्दनकिरात	,,	
	मुक्तापिष्टि	३–६ गुंजा	मधु
	प्रवालपिष्टि	,,	,,
	प्रवाल पंचामृत	,,	,,
	रौप्य भस्म	१–२ गुंजा	,,
	यशद भस्म	,,	,,
	वासाघृतं[१]		
	शतावरीघृतं[१]		
	शतधौत घृतलेपः		
यक्ष्मणि अतिस्वेदे	सौराष्ट्री	३–६ गुंजा	दुग्धम्
	बेलेडोना वा धत्तरपत्रम्	१ ,,	जलम्
	कर्पूररसः	१–२ ,,	मधु
	यशदभस्म	,,	,,
	कनकारिष्टः	१ कर्षः	जलम्
यक्ष्मणि ग्रथिते कफे	अर्करसः	१–२ गुंजा	मधु
यक्ष्मणि पार्श्वशूले	पुनर्नवाक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	काकमाचीक्वाथ	,,	,,
	पुष्करमूलचूर्णम्	२–४ माषाः	वासावलेहः
	शृंगभस्म	३–६ गुंजा	मधु
	समीरपन्नगः	१ ,,	,,
	रससिन्दूरम्	,,	,,

१–हस्तपादाङ्गदाहेषु ज्वरे रक्ते तथोर्ध्वगे ।
वासाघृतं शतावर्या सिद्धं वा परमं हितम् ॥ (चरक)

प्रकार:	योग:	मात्रा:	अनुपानम्
आंत्रक्षये	लोकनाथरस:	१–३ गुंजा	तक्रम्
	स्वर्णपर्पटी	,,	,,
	ताम्रपर्पटी	,,	,,
	पंचामृतपर्पटी	,,	,,
	कुटजावलेह:	१–२ कर्ष:	दुग्धम्
	कुटजारिष्ट:	,,	जलम्
अस्थिक्षये	दशमूलक्वाथ:	१–२ कर्ष:	मधु
	रास्नादिक्वाथ:	,,	,,
	महायोगराज गुग्गुलु	३–६ गुंजा	रास्नादि वा दशमूलक्वाथ:
	कैशोर ,,	,,	,,
	वसंतकुसुमाकररस:	१–३ गुंजा	दुग्धम्
	बृहत्वातचिंतामणिरस:	,,	मधु
	अस्थिभस्म	३–६ गुंजा	,,
	शृंगभस्म	,,	,,
	कुलीरभस्म	,,	,,
	कुक्कुटाण्डत्वक्भस्म	,,	,,
	मत्स्यवसा	१ कर्ष:	दुग्धम्
	शिलाजतु	०।–०।। ,,	,,
उर:क्षते	लाक्षाचूर्णम्	२–४ माषा:	दुग्धम्+शर्करा
	वासाचूर्णम्	,,	,,
	नागपुष्पचूर्णम्	,,	,,
	प्रियंगु ,,	,,	,,
	गैरिक ,,	,,	आमलक स्वरस:
	यष्टिमधुचूर्णम्	२–४ माषा:	दुग्धम्
	सौराष्ट्रीचूर्णम्	१ २ ,,	,,
	प्रवालभस्म	१–३ गुंजा	मधु वा वासावलेह:
	प्रवालपंचामृत	,,	,,
	मुक्तापिष्टि	,,	,,
	रक्तपित्तवत् चिकित्सा		

कासरोगः

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
वातजः	स्नुहीक्षीरभावित यवचूर्णम्	१–३ गुंजा	मधु
	अर्करसः	१–२ ,,	,,
	यष्टिमधुचूर्णम्	३–६ गुंजा	,,
	मागधी ,,	,,	,,
	तालीसादिचूर्णम्	१–२ माषाः	घृत+मधु
	बृहतीलवणचूर्णम्	,,	हरिद्रास्वरसः
	सितोपलादिचूर्णम्	,,	घृत+मधु
	रसमाणिक्यम्	१ गुंजा	ताम्बूलस्वरसः+मधु
	समीरपन्नगरसः	,,	,,
	अर्कपुष्प+मरिचम्	,,	,,
	अगस्त्यहरीतकीअवलेहः	१–२ कर्षः	दुग्धम
	दशमूलारिष्टः	,,	जलम्
	एलादिघृतम्	,,	दुग्धम्
	कण्टकारी घृतम्[1]		
धूमयोगः	मनःशिला, पिप्पली, नागर		
	इंगुदीत्वक्, यष्टि, मांसी		
	हरितालम्, हरिद्रा, यवासकः		
पित्तजः कासः	वासाचूर्णम्	१–२ माषा	मधु
	यष्टिमधुचूर्णम्	,,	,,
	सितोपलादिचूर्णम्	,,	,,
	द्राक्षादिवटी	,,	,
	खदिरादिवटी		
	प्रवालभस्म	१–३ गुंजा	मधु
	मुक्ताभस्म	,,	,,
	अभ्रकभस्म	,,	,,
	वासावलेहः	१–२ कर्षः	दुग्धम्

१–कण्टकारी गुडूचीभ्यां पृथक् त्रिंशत्पलाद्रसे ।
प्रस्थः सिद्धो घृताद्वातकासनुद्वह्निदीपनः ॥

रः	योगः	मात्राः	अनुपानमः
	वासाहरीतकीलेहः	१–२ कर्षः	दुग्धम्
	द्राक्षालेहः[१]	,,	,,
कफजः कासः	कट्फलचूर्णम्	२–४ माषाः	मधु
	द्वात्रिंशांगक्वाथः	१–२ कर्षः	,,
	तालीसादिचूर्णम्	२–४ माषाः	,,
	बृहतीलवणचूर्णम्	,,	हरिद्रास्वरसः+मधु
	अग्निरसः	३–६ गुंजा	,,
	रसमाणिक्यम्	१–२ ,,	आर्द्रक+मधु
	समीरपन्नगरसः	,,	,,
	मल्लपुष्पम्	१ गुंजा	घृत+मधु
	शृंगभस्म	३–६ ,,	मधु
	सौभाग्यम्	,,	,,
	कंटकारी अवलेहः	१–२ कर्षः	दुग्धम्
	आर्द्रकावलेहः	,,	,,
	हरीतकीलेहः (चरक)	,,	,,
	कनकासवः	,,	,,
	कंटकारीयूषः[२]		
श्लैष्मिककासे			
वमनार्थम्	कंकुष्ठचूर्णम् (बालेभ्यः)	३–६ गुंजा	उष्णजलम्+मधु
	मदनफलमज्जाचूर्णम्		निम्बपल्लवरस
	माणिमन्थचूर्णम्	०॥–०॥ कर्षः	,,
क्षतजकासः	उरःक्षतवत् चिकित्सा		
	लाक्षाचूर्णम्	०।–०॥ कर्षः	दुग्ध+शर्करा
	सितोपलादिचूर्णम्	,,	मधु
	चन्द्रामृतरसः	१–२ गुंजा	,,
	मुक्तापिष्टि	३–६ ,,	,,

१–मृद्वीकार्धशतं त्रिंशत्पिप्पलीः शर्करापलम् ।
लेहयेन्मधुना .... ॥ (चरक)

२–कंटकारिरसे सिद्धो मुद्गयूषः सुसंस्कृतः ।
सगौरामलकः साम्लः सर्वकासभिषग्जितम् ॥

प्रकार:	योग:	मात्रा:	अनुपानम्
	वासावलेह:	१–२ कर्ष:	दुग्धम्
	कूष्माण्डावलेह:	,,	,,
	नागबलाप्रयोग:	,,	—
धूमयोग:	मन:शिला+आर्द्रवटशुंगा:		
क्षयजकास:	अभयादिक्वाथ:	१–२ कर्ष:	मधु
(ब्रॉङ्किएक्टिसिस)	गोजिह्वादिक्वाथ:	—	—
	सितोपलादिचूर्णम्	१–२ माषा:	,,
	सुवर्णवसन्तमालती	१–२ गुंजा	मधु+पिप्पली
	वसन्तकुसुमाकररस:	,,	मधु
	च्यवनप्राशावलेह:	,,	
	द्राक्षासव:	,,	जलम्
	नागबलाप्रयोग: (चरक)		
कफदुर्गंधनाशार्थे	कंकोल,–गुग्गुलु, शिलाजतु+क्रियोसोट यूकेलिप्टस, लोहबाण धूम:		
जीर्णकास:	लक्ष्मीविलासरस:	१–२ गुंजा	मधु
	समीरपन्नगरस:	,,	,,
	लोकनाथरस:	,,	,,
	सुवर्णवसन्तमालती	,,	,,
	श्वासकुठाररस:	,,	,,
	अभ्रकभस्म	,,	,,
	प्रवालपिष्टि	,,	,,

श्वासरोग:

तमकश्वास:	दशमूलक्वाथ:	२ कर्ष:	मधु
	देवदारुक्वाथ:	,,	,,
	कासमर्दपत्रक्वाथ:		
	शुष्कमूलकक्वाथ:		
	कंटकारीक्वाथ:	१–२ कर्ष:	मधु
	कुष्ठचूर्णम्	०।–०।। कर्ष:	कोष्णजलम्+मधु
	भार्गीचूर्णम्	,,	,,
	पुष्करमूलचूर्णम्	,,	,,

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
	सोमचूर्णम्	०।–०॥ कर्षः	कोष्णजलम्+मधु
	कंटकारीचूर्णम्	,,	,,
	कंटकारीलवणम्	१–२ म षाः	हरिद्रास्वरस+मधु
	मल्लसिंदूरम्	१ गुंजा	मधु
	रससिन्दूरम्	,,	,,
	हेमगर्भपोट्टलीरसः	,,	,,
	समीरपन्नगरसः	,,	,,
	रसमाणिक्यम्	,,	,,
	अभ्रकभस्म	,,	,,
	शृंगभस्म	,,	,,
	मयूरनाल–पिच्छभस्म	,,	,,
	कंटकारी अवलेहः	१–२ कर्षः	—
	कनकासवः	,,	जलम्
	मनःशिलादिघृतम्	३–६ गुंजा	दुग्धम्
	श्वासकुठाररसः		
	मनःशिला+मरिचम्		मधु
श्वासे धूमयोगः	वासा, धत्तूरपत्र, विजया, खोरासानीयवानीपत्र, सूर्यक्षार		
हृद्जन्यतमक-श्वासः	अर्जुनचूर्णम्	२–४ माषाः	मधु
	हृदयचिंतामणिरसः	१–२ गुंजा	,,
	श्वासकासचिंतामणिरसः	,,	,,
	मकरध्वजवटी	,,	,,
	हृद्यपत्रम् (डिजिटेलिस)	,,	,,
	बृहत्सुवर्णवसन्तमालती	,,	,,
छिन्नश्वासः	लक्ष्मीविलासरसः	,,	आर्द्रक+मधु
(चाइन स्टोक्स ब्रीथिंग)	हेमगर्भपोट्टलीरसः	,,	,,

हिक्कारोगः

सामान्य-चिकित्सा	श्वासवत्
नस्यार्थे	नारीक्षीर नस्यम्

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
	घृतमण्डं ससैन्धवम्		
	गुडशुण्ठी नस्यम्		
	रसोनस्वरस नस्यम्		
	मयूरपिच्छभस्म	३–६ गुंजा	मधु
	मागधी	,,	,,
	कटुरोहिणी+यष्टिमधु	—	जल
	दशमूलक्वाथः[1]		
	मदिरा[2]		
धूमयोगः	कृष्णमरिच, माषपिष्टि		

स्वरभेदरोगः

सामान्य-चिकित्सा	यष्टिमधुचूर्णम्	२–४ माषाः	मधु
	कट्फल ,,	,,	,,
	एलादिवटी	३-६ गुंजा	,,
	एलादिघृतम्	०।–०॥ कर्षः	दुग्धम्
	खदिरादिवटी	—	मुखे धार्या
	अमृतप्राशघृतम्		
	बदरीपत्रकल्कं वा घृतभृष्टं ससैन्धवम् ।		

अरोचकरोगः

सामान्य-चिकित्सा	निम्बुस्वरसः		
	लवणार्द्रकभक्षणम्		
	मातुलुङ्गफलकेसरम् साज्य सैन्धवम्		
	यवानीषाडवचूर्णम्	३–६ माषाः	जलम्
	दाडिमाष्टक ,,	,,	,,
	लवणभास्कर ,,	,,	,,
	रसोनादिवटी	१–२ माषाः	,,
	शंखवटी	,,	,,
	नाडीहिंगुचूर्णम् निम्बूफले स्थापयित्वा, उष्णीकृत्य चूषणम्		

१, २–दशमूलस्य वा क्वाथमथवा देवदारुणः ।
तृषितो मदिरां वाऽपि हिक्काश्वासी पिबेन्नरः ॥ (चरक)

छर्दिरोगः

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
सामान्य-चिकित्सा	लाजमण्डः		
	छर्दिरिपुचूर्णम्	१–२ माषाः	मधु वा शर्कराजलम्
	दुरालभा ,,	,,	,,
	मनःशिला+पिप्पली	१–३ गुंजा	मधु
	मयूरपिच्छभस्म	,,	,,
	लोहबाणपुष्प (एसिड बेंज़ोइक)	,,	,,
	जम्बीरत्वक्मसी (जम्बीरलवणम्)	,,	,,
	लवणभास्करचूर्णम्	२–४ माषाः	जलम्
	शिवात्रयीचूर्णम्	,,	,,
	सुरमावटी	३–६ गुंजा	अनारशार्करम् निम्बुशार्करम्
	सूतशेखररसः	१–३ गुंजा	आर्द्रकमधु
	जहरमोहरापिष्टि	१–६ ,,	मधु

अश्वत्थत्वचं दग्ध्वा मसी कार्या भस्म (मसी) रात्रौ जले स्थाप्यं, तज्जलं पेयम्

भ्रमरोगः

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
वातिकभ्रमः	धन्वयासकक्वाथः	१–२ कर्षः	घृतम्
	ग्रंथिकचूर्णम्	१–२ माषाः	घृत+शर्करा
	पिप्पलीचूर्णम्	,,	,,
	मांसीचूर्णम्	,,	,,
	ब्राह्मीवटी	१–२ गुंजा	मधु
पैत्तिकभ्रमः	सर्पगन्धाचूर्णम्	२–४ माषाः	शर्कराजलम्
	ब्राह्मीवटी	१–२ गुंजा	मधु
	ताम्रभस्म	,,	,,
	प्रवालभस्म	,,	,,
	कूष्माण्डअवलेहः	१–२ कर्षः	दुग्धम्

मू र्छारोगः

प्रकारः	योगाः	मात्राः	अनुपानम्
वातजा	कस्तूरीभैरवरसः	१–२ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	चन्द्रोदयरसः	,,	,,
पित्तजा	कामदुघारसः	,,	,,
	मुक्ता पिष्टि	,,	,,
नस्यार्थ	श्वासकुठाररसः		
	कल्पतरुरसः		
	अरिष्टफेनः		

उन्मादरोगः

सामन्य-चिकित्सा	शंखपुष्पीचूर्णम्	०॥ १ कर्षः	दुग्धम्+शर्करा
	वाताम, खसखस, मिसि, मरिचम्, एला, शर्करा, दुग्धम् एतैः सह मर्दयित्वा पेयम् ॥		
	ब्राह्मीस्वरसः	,,	,,
	सर्पगन्धाचूर्णम्	२–४ माषाः	,,
	सारस्वत ,,	,,	,,
	कूष्माण्डस्वरसः	५ कर्ष	,,
	ब्राह्मीवटी	३–६ गुंजा	दुग्धम्
	साइलेडिन टेबलेट्स	,,	,,
	सुचेता		
	उन्मादगजकेसरीरसः	१–३ गुंजा	मधु
	स्मृतिसागररसः	,,	,,
	ब्राह्मीघृतम्	१–२ कर्षः	दुग्धम्
	ज्योतिष्मती तैलम्		
नस्यार्थ	पञ्चगव्यघृतम्		
	गोघृतम्		
	ब्राह्मीघृतम्		

अपस्माररोगः

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
सामान्य-चिकित्सा	उन्मादवत् चिकित्सा		
	वचाचूर्णम्	३-६ गुंजा	मधु
	महापैशाचघृतम्	१-२ कर्षः	दुग्धम्
	पुराणघृतम्	,,	,,
नस्यार्थे	पंचगव्यघृतम्, ब्राह्मीघृतम्		

वातव्याधिः

आक्षेपकः	दशमूलक्वाथः	१—२ कर्षः	मधु
	रास्नादिक्वाथः	,,	,,
	पारसीकयवानीचूर्णम्	३—६ गुंजा	जलम्
	सौभाग्य ,,	,,	,,
	राजिका स्नानम्		
	समीरपन्नगरसः	१—२ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	लक्ष्मीनारायणरस.	१—२ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	वातविध्वंसरसः	,,	रास्नादिक्वाथः
अपतन्त्रकः	सर्पगन्धाचूर्णम्	२—४ माषाः	दुग्ध+शर्करा
	जटामांसीचूर्णम्	,,	,,
	हिंगु	१—३ गुंजा	जलम्
	रास्नादिक्वाथः	१—२ कर्षः	मधु
	दशमूलक्वाथः	,,	,,
	द्विरुत्तरचूर्णम्	२-४ माषाः	जलम्
	योषापस्मारवटी	३—६ गुंजा	मांसी, पारसीकयवानी
	एकाङ्गवीररसः	१—३ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	तीक्ष्णप्रधमनम्		
अपतानक— धनुःस्तम्भ— आयाम—			
पक्षवधाः	महारास्नादिक्वाथः	१—२ कर्ष	मधु
	भल्लातकक्वाथः	१ ,,	घृत+मधु

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
	नारसिंहचूर्णम्	२–४ माषाः	घृत+मधु
	समीरपन्नगरसः	१–२ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	एकाङ्गवीररसः	,,	मधु
	मल्लसिन्दूरम्	,,	,,
	महायोगराजगुग्गुलु	२–६ गुंजा	रास्नादिक्वाथः
	ज्योतिष्मती तैलम् (पानार्थे)	३–६ बिन्दवः	,,
	महानारायण तैलम् (पानार्थे)	०॥–१ कर्षः	,,
	महानारायणतैलस्य अनुवासनबस्तिप्रयोगः		
अभ्यङ्गार्थे	नारायणतैलम्		
	बलातैलम्		
	माषतैलम्		
	विषगर्भतैलम्		
फिरङ्गजन्य			
पक्षवध	चोपचीनीचूर्णम्	१–२ माषाः	मधु
	अमीररसः	१ गुंजा	—
	मल्लसिन्दूररसः	,,	आर्द्रक+मधु
	भैरवरसः (भै. र.)	—	दुग्धम्
	केसरादिवटी	३–६ गुंजा	दुग्धम्
अर्दित	नवनीतशर्कराभ्यासः		
	समीरपन्नगरसः	१–२ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	महायोगराजगुग्गुलु	३–६ ,,	रास्नादिक्वाथः
	तिलतैलमिश्र रसोनकल्कः[1]		
	महायोगराज गुग्गुलु		
हनुग्रहः	अस्थिसंहारलेपः		

१-रसोनकल्कं तिलतैलमिश्रं खादेन्नरो योऽर्दितरोगयुक्तः।
तस्यार्दितं नाशमुपैति शीघ्रं वृन्दं घनानामिव वायुवेगात्॥ (भावप्रकाश)

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
गृध्रसी	निर्गुंडीक्वाथः[१]	२–४ कर्षः	मधु
	एरण्डबीज क्वथित दुग्धम्		
	एरण्डतैलं गोमूत्रेण एकमासपर्यन्तम् प्रत्यहं प्रातःकाले ।		
	बकायनक्वाथः	२–४ कर्षः	मधु
	भल्लातकक्वाथः	१ ,,	घृत+मधु
	दशमूलक्वाथः	१–२ ,,	मधु
	रास्नादिक्वाथः	,,	,,
	नारसिंहचूर्णम्	२–४ माषाः	घृत+मधु
	संधिवातहररसः	३–६ गुंजा	निर्गुंडीपत्रक्वाथ.[२]
	बृहद्वातचिंतामणिः	१–२ ,,	मधु
अभ्यङ्गार्थे	नारायणतैलम् , विषगर्भतैलम्		
	वातघ्नपत्रस्वेदः		
विश्वाची	अश्वगंधाचूर्णम्	०।–०॥ कर्षः	दुग्धम्
	निर्गुंडीक्वाथः[१]	१–२ ,,	मधु
	दशमूल भल्लातकक्वाथः दशमूल ,, + वर्धमानभल्लातक		,,
	संधिवातहररसः	३–६ गुंजा	निर्गुंडीपत्रक्वाथः
नस्यार्थे	षड्बिन्दुतैलम्	—	सायं भुक्त्वा
	माषतैलम्	—	,,
अवबाहुकम्	पारिभद्रस्वरसः वा क्वाथः	१–२ तोला	
	बलामूलक्वाथः	,,	
	माषरसेन नस्यम्		
	माषतैलनस्यम्		
क्रोष्टुशीर्षकम्	मयूरपिच्छचंद्रकम् (सि. भे. म.)	१	गुडम्
	वृद्धदारुचूर्णम्	०।–०॥ कर्षः	एरण्डमूलक्वाथः
	गुग्गुलुः	,,	गुडूचीत्रिफलाक्वाथः
	क्षीरेण एरण्डतैलम्		
कलायखञ्जः	निदानपरिवर्जनम्		

१- शेफालिकादलैः क्वाथो मृद्वग्निपरिपाचितः ।
दुर्वारं गृध्रसीरोगं पीतमात्रः प्रयोजयेत् ॥ (भावप्रकाश)

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
	महायोगराजगुग्गुलु	३-६ गुंजा	रास्नादिक्वाथः
	लक्ष्मीविलासरसः	१-२ ,,	मधु
वातकंटकम्	एरण्डतैलपानम्		
	पुनर्नवातैलाभ्यङ्गः		
पाददाहः	शाल्मलीत्वक्लेपः		
	मदयन्तिकापत्रलेपः		
	शतधौतघृतलेपः		
	शृतशीतेन वारिणा मसूरविदलैः पिष्टैः चरणौ लेपयेत्।		
	पित्तहरी क्रिया		
अंसशोषः	नारायणतैलपानम्-अभ्यङ्गः		
	बलामूलक्वाथः	२ कर्षः	सैन्धवम्
तूनी-प्रतितूनी	उष्णजलावगाहनम्		
	पारसीकयवानीचूर्णम्	१-३ गुंजा	जलम्
	वेदनान्तकरसः	,,	,,
	यवक्षार+हिंगु	,,	उष्णजलम्
मन्यास्तम्भ	बलामूलक्वाथः	१-२ कर्ष	सैन्धवम्
	दशमूलक्वाथः	२-४ ,,	मधु
	तैलेन आज्येन वा ग्रीवामभ्यज्य अर्कदलैः एरण्डपत्रैर्वा आच्छाद्य ग्रीवाम् स्वेदयेत्		
	कुक्कुटाण्डद्रवं उष्णं कृत्वा, सैन्धवाज्य समन्वितेन, तेन ग्रीवाम् मर्दयेत्		
	रूक्षस्वेदः		
	रूक्षनस्यम्		
ऊर्ध्ववातः	सौवर्चलचूर्णम्	१-२ माषाः	उष्णजलम
	हिंगु ,,	१-३ गुंजा	,,
	हिंग्वष्टकचूर्णम्	०।-०॥ कर्ष	घृतौदन
	शिवात्रयी ,,	,,	जलम्
	द्विरुत्तर ,,	,,	,,
	षड्धरणयोगः	,,	,,
	रसोनादिवटी	३-६ गुंजा	,,
	गोमूत्रबस्तिः		

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
त्रिकग्रहः	वालुकास्वेदः		
	शय्याया अधस्तात् करीषाग्नेः सततं धारणम् ।		
	चतुर्बीज	१/४–१/२ कर्ष	जलम्
आमाशयगतवातः	षड्धरणयोगः	०।–०॥ कर्षः	जलम्
	वचादिगणः		
	द्विरुत्तरचूर्णम्	०।–०॥ कर्षः	जलम्
पक्वाशयगतवातः	क्षारचूर्णानि		
	दीपन–पाचनचूर्णानि		
	अनुवासन बस्तयः		
हृदगतवातः	देवदारुनागरचूर्णम्	२–४ माषाः	उष्णजलम्
	अश्वगंधा ,,	,,	दुग्धम्
	बृहत्वातचिंतामणिरसः	१–३ गुंजा	मधु
	हृदयचिंतामणिरसः	,,	,,
	द्विरुत्तरचूर्णम्	०।–०॥ तोला	उष्णजलम्
बस्तिगतवातः	यवपानीयम्		
	नारिकेलजलम्		
	वरुणादिक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	नारायणतैलबस्तिः		
	वातघ्नपत्रस्वेदः बस्तिप्रदेशोऽपरि		
	वातघ्नपत्रक्वाथे अवगाहनम्		
धातुगतवातः	स्नेहनम्		
	स्वेदनम्		
	सेकः		
वातरक्तम्	कुष्ठवत् उपचारः		
	अश्वत्थत्वक्		
	सुरिंजनम्		
	दुग्ध+एरण्डतैलम्		
	मंजिष्ठादिक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	सारिवाक्वाथः	,,	,,
	अमृताक्वाथः	,,	,,

प्रकार:	योग:	मात्रा:	अनुपानम्
	वासाक्वाथः	१–२ कर्ष	मधु
	शिवाचूर्णम्	०।–०।। ,,	जलम्
ऊरुस्तंभः	अग्निमंथकरंजौ गोमूत्रे पिष्ट्वा लेपः		
	वल्मीकमृत्तिका...चित्रकगोमूत्र प्रलेपः		
	गुंजाभद्ररसः	१–२ गुंजा	मधु
	वायसी-पुनर्नवाशाकम्		
आमवातः	लंघनम्		
	पुनर्नवाष्टकक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	दशमूलक्वाथः	,,	,,
	रास्नादिक्वाथः	,,	,,
	रसोनादिक्वाथः[1]	३ कर्षः	——
	निर्गुंडीक्वाथः	,,	मधु
	बलाक्वाथः	,,	,,
	एरण्डतैलम्[2]	२–२।। कर्ष	रास्नादिक्वाथः
	आर्द्रकगुडप्रयोगः		
	संधिवातहररसः	३–६ गुंजा	रास्नादिक्वाथः
	योगराजगुग्गुलुः	,,	,,

शूलरोगः

प्रकार:	योग:	मात्रा:	अनुपानम्
वातिकशूलम्	विश्वाएरण्डमूलक्वाथः	१–२ कर्षः	सौवर्चलम्
	यवपेया		
	बेलेडोना	१ गुंजा	जलम्
	धत्तूरपत्रस्वरसः	,,	,,
	पारसीकयवानीचूर्णम्	३–६ गुंजा	,,
	द्विरुत्तरचूर्णम्	२–४ माषाः	,,
पैत्तिकशूलम्	शंखभस्म	३–६ गुंजा	जलम्
	शठी	,,	,,

१–रसोनविश्वनिर्गुण्डीक्वाथमामार्दितः पिबेत् ।
नातः प्रतरं किञ्चित् आमवातस्य भेषजम् ।। (भावप्रकाश)

२–आमवातगजेन्द्रस्य शरीरवनचारिणः ।
एक एव निहन्ताऽलम् एरण्डस्नेहकेसरी ।।

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानमः
	सर्जक्षारः	३–६ गुंजा	जलम्
	प्रवालपिष्टिः	२–६ गुंजा	जलम्-मधु
	पारसीकयवानीचूर्णम्	,,	जलम्
	अविपत्तिकर ,,	०।–०॥ कर्षः	शर्करा+जलम्
	स्वादिष्टविरेचनचूर्णम्	,,	जलम्
	कटुकीचूर्णम्	२–६ गुंजा	शर्कराजलम्
	इक्षुरकक्षारः	,,	,,
	सूतशेखररसः	१–२ ,,	आर्द्रकमधु
	धात्रीलोहः	,,	,,
	गोदन्तीभस्म	,,	दुग्धम्
	कल्याणवटकाः	०।–०॥ कर्षः	जलम्
	शिवात्रयीचूर्णम	,,	,,
परिणामशूलम्	नारिकेललवणम्	०।–०॥ कर्षः	जलम्
	शिवात्रयीचूर्णम्	,,	,,
	लीलाविलासरसः	१–३ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	कामदुधारसः	,,	,,
	धात्रीलोहः	,,	,,
	प्रवालपंचामृतम्	,,	मधु
पार्श्वशूलम्	पुष्करमूलचूर्णम्	१–२ माषाः	उष्णजलम्
	द्वात्रिंशांगक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	समीरपन्नगरसः	१–२ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	शृंगभस्म	१–३ ,,	,,
	शिग्रुमूललेपः		
	शिग्रुमूलक्वाथः	१–२ कर्षः	हिंगुप्रक्षेपसहितम्
हृच्छूलम्	चन्द्रोदयरसः	१–२ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	रससिन्दूरम्	,,	,,
	बृहद्वातचिंतामणिरसः	१–२ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	हृदयचिंतामणिरसः	,,	,,
	शृंगभस्म	,,	,,
अन्नद्रवशूल	परिणामशूलवत		

प्रकार:	योग:	मात्रा:	अनुपानम्
उदावर्त:	एरण्डतैलम्	२–५ कर्ष:	शुण्ठीक्वाथ:
	शिवाचूर्णम्	०॥–१ ,,	जलम्
	शिवात्रयीचूर्णम्	,,	,,
	द्विरुत्तर ,,	,,	,,
आनाह	उदावर्तवत् चिकित्सा		

गुल्मरोग:

सामान्य चिकित्सा	हरीतकीचूर्णम्	०।·०॥ कर्ष:	गुड:
	शरपुंखलवणम्	,,	हरीतकी
	कुमारिकामांसकल्क:	,,	गोघृतम्
	लवणभास्करचूर्णम्	,,	जलम्
	हिंग्वष्टक ,,	,,	घृतम्
	त्रिवृत्+नागर+एरण्डतैलम् —		वारुणीमंडसहितम्
	शंखद्राव:	०।-०॥ कर्ष:	जलम्
	कुमारीआसव:	१–२ कर्ष:	,,
	पुनर्नवा ,,	,,	,,
	पलाश क्षार:	१–२ माषा:	,,
	स्नुही ,,	,,	,,
	अपामार्ग क्षार:	,,	,,
	चिंचाक्षार:	१–२ माषा:	जलम्
	अर्कक्षार:	,,	,,
	तिलनालजक्षार:	,,	,,
	दन्तीहरीतकी (चरक)		,,
	भल्लातकादिघृतम् (च.)	१ कर्ष:	दुग्धम्
	वासाघृतम्	,,	,,
	त्रायमाणघृतम्	,,	,,
	त्रिवृत्चूर्णं सुधाक्षीरभावितम् मधुसर्पिर्भ्याम् (चरक)		
रक्तगुल्म:	मासे व्यतीते दशमे चिकित्स्य:–शस्त्रकर्म		
	तिलक्वाथ:	१–२ कर्ष:	घृत+गुड+व्योष भार्गीरजोन्वित:

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
	शुष्कमत्स्यपोट्टली–योन्यां धारयेत् कटुकमत्स्यकाः (चरक)		
आध्मान	सौवर्चलचूर्णम्	१–२ माषाः	जलम्
	हिंगु ,,	१–२ गुंजा	,,
	द्विरुत्तर ,,	०।–०॥ कर्षः	,,
	हिग्वष्टकचूर्णम्	,,	,,
	पंचसकार ,,	,,	,,
	शिवात्र्यीचूर्णम्	,,	,,
	शंखवटी	३–६ गुंजा	,,
	रसोनादिवटी	,,	,,
	राढधूमादिवर्ति (गुदे धारणीया)		
वाताष्ठीला प्रत्यष्ठीला	शिलाजतु	१–२ माषाः	दुग्धम्
	रसायनचूर्णम्	०।–०॥ कर्षः	,,
	वरुणादिक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	पुनर्नवादिक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	चन्द्रप्रभावटी	३–६ गुंजा	दुग्धम्
	चविकासवः	१ २ कर्षः	जलम्

हृद्रोगः

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
सामान्य-चिकित्सा	हृद्रोगे वमनं पथ्यम्		
	रसोनक्षीर–पाकः		
	अर्जुनक्षीर–पाकः		
	नागर+देवदारुचूर्णम्	१–२ माषाः	जलम्
	हृद्यपत्रचूर्णम्	१–३ गुंजा	,,
	हृदयचिंतामणिरसः	१–२ ,,	मधु
	प्रभावतीवटी (भै. र.)	,,	दुग्धम्
	आरोग्यवर्धनीरसः	३–६ गुंजा	गोमूत्रम्
	चन्द्रोदयरसः	१–२ ,,	आर्द्रक+मधु
	हेमगर्भरसः	,,	,,

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
	अभ्रकभस्म	१–२ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	स्वर्णभस्म	,,	,,
	मुक्तापिष्टिः	,,	मधु
	जहरमोहरापिष्टिः	,,	,,
	प्रवालपंचामृतम्	३–६ गुंजा	,,
	अर्जुनारिष्टः	१–२ कर्षः	,,
	पुनर्नवारिष्टः	,,	,,
	च्यवनप्राशावलेहः	,,	दुग्धम्

मूत्रकृच्छ्ररोगः

सामान्य-चिकित्सा	पलाशपुष्पक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	पुनर्नवादिक्वाथः	(शिग्रुवरुण सहितः)	,,
	वरुणक्वाथः	,,	,,
	कुलत्थक्वाथः	,,	,,
	गोक्षुरचूर्णम्	०।–०॥ कर्षः	सूर्यक्षारः+जलम
	पाषाणभेदचूर्णम्	,,	जलम्
	कर्कटीबीजानि	,,	,,
	रसायनचूर्णम्	,,	,,
	इक्षुरसः		
	वारुणी		
	नारिकेलजलम्		
	खर्जूरीरसः (नीरो)		
	केसरम्	१ कर्षः	दुग्धम
	कंटकारीस्वरसः	५ ,,	—
	शिलाजतु	६–२ गुंजा	,,
	चंद्रप्रभावटी	,,	,,
	हजरुलयहुद	,,	,,
	उष्णजलबस्ति		
	उष्णजलावगाहनम्		

मूत्राघातरोगः

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
सामान्य-चिकित्सा	एर्वारुबीजानि (सु. उ. ५८)	१ कर्षः	सैन्धव+धान्याम्ल
	सौवर्चलम्	,,	सुरा
	कुंकुमम्	,,	मधूदकम्
	रासभपुरीषरसः	कुडवमितः	
	वाजिपुरीषरसः	,,	
	द्राक्षाकल्कः	१ कर्षः	पर्युषितवारि
	कंटकारीस्वरसः	कुडवमितः	मधु
	आमलकस्वरसः	कुडवमितः	मधु
	त्रपुस ,,	,,	,,
	वरुणादिक्वाथः	१–२ कर्षः	,,
	गुडूची ,,	,,	,,
	वीरतर्वादिगणः (सु.)	,,	,,
	तालस्य तरुणं मूलम्	,,	शालितण्डुलवारि
	नारिकेलोदकम्	कुडवमितम्	
	अष्टक्षाराः		
	एलाचूर्णम्	१ कर्षः	धात्रीस्वरसः
	शितिवारक (सुरवाली)–		
	बीजचूर्णम्	१ कर्षः	तक्रम्
	चन्द्रकलारसः	१–३ गुंजा	दुग्ध+शर्करा
	चन्द्रप्रभावटी	३–६ ,,	,,
	कामदुघारसः	१–३ ,,	,,
	चन्दनासवः	१–२ कर्षः	जलम्
	उशीरासवः	,,	,,
	गोक्षुरादिगुग्गुलुः	३–६ गुंजा	,,

अश्मरीरोगः

सामान्य-चिकित्सा	तृणपंचमूलक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	वरुणक्वाथः	,,	,,
	शिग्रुक्वाथः	,,	,,

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
	पुनर्नवाक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	गोपालकर्कटीमूलक्वाथः (पपैया, एरण्डकर्कटी)	,,	,,
	अश्मरीहरक्वाथः (सि. यो. सं.)	,,	,,
	मयूरशिखा	,,	तण्डुलाम्बु
	नृत्यकुण्डलबीज– (विंछूडो) चूर्णम्	२–४ माषाः	अवीक्षीरम्+मधु
	पुनर्नवाक्षीरपाकः		
	त्रिविक्रमरसः	१–३ गुंजा	मधु

प्रमेहरोगः

कफजमेहे :—

उदकमेहः	पारिजातककषायः	१–२ कर्षः	मधु
इक्षुमेहः	वैजयन्ती ,,	,,	,,
सुरामेहः	निम्ब ,,	,,	,,
शनैर्मेहः	खदिर ,,	,,	,,
लवणमेहः	पाठा+अगुरु+हरिद्राकषायः	,,	,,
पिष्टमेहः	हरिद्रा+दारुहरिद्राकषायः	,,	,,
सान्द्रमेहः	सप्तपर्णकषायः	,,	,,
शुक्रमेहः	दूर्वा+शैवाल+प्लव+हठ (जलकुंभी)+करञ्ज+ कसेरुकषायः	,,	,,
	सालम, मुसली, आत्मगुप्ता, इक्षुरक, अश्वगंधा, बलबीज चतुष्पत्री(उटींगण)कषायः	,,	,,
फेनमेहः	त्रिफला, आरग्वध,– मृद्वीकाकषायः	,,	,,

पित्तजमेहे :—

नीलमेहः	सालसारादिगणकषायः	१–२ कर्ष	मधु
हरिद्रामेहः	राजवृक्ष ,,	,,	,,

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
अम्लमेहः	न्यग्रोधादिगण ,,	१–२ कर्षः	मधु
मंजिष्ठामेहः	मंजिष्ठाचंदन ,,	,,	,,
क्षारमेहः	त्रिफला ,,	,,	,,
शोणितमेहः	गुडूची, तिंदुकास्थि, काश्मरी,–		
	खर्जूरकषायः	,,	,,
	शतावरीगोक्षुरुक्वाथः	,,	

वातजमेहे :—

सर्पिर्मेहः	कुष्ठ, कुटज, पाठा, शिग्रु–		
	कटुरोहिणीकषायः	,,	,,
बसामेहः	अग्निमन्थकषायः	,,	,,
	शिंशपा ,,	,,	,,
क्षौद्रमेहः	खदिर, क्रमुक कषायः	,,	,,
हस्तिमेहः	तिन्दुक, कपित्थ, शिरीष,–		
	पलाश, पाठा, मूर्वा,		
	दुःस्पर्शा……कषायः	,,	,,
	शिलाजतु	२–४ माषाः	दुग्धम्
	ताप्यादिलोहः	१–३ गुंजा	मधु
	अश्वगंधारिष्ट	१–२ कर्षः	जलम्
सर्वमेहेषु	धात्रीहरिद्राकषायः	१–२ ,,	—
	गुडूचीस्वरसः	२–५ ,,	—
	आमलकस्वरसः	,,	—
	प्रमेहहरकषायः		
	(सि. यो. सं.)	,,	—
	शिलाजतु	२–४ माषाः	दुग्धम्
	चंद्रप्रभा	३–६ गुंजा	,,
	वसंतकुसुमाकररसः	१–३ ,,	,,
	बंगभस्म	१–२ ,,	,,
	त्रिबंगभस्म	,,	,,
	लोध्रासवः	१–२ कर्षः	जलम्

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
मधुमेहः	असनादिगणः	१–२ कर्षः	जलम्
	विजयसारकषायः	,,	,,
	बिल्वपत्रस्वरसः	२–५ ,,	,,
	यवभक्षणम्		
	शिलाजतु	२–४ माषाः	दुग्धम्
	बसन्तकुसुमाकररसः	१–३ गुंजा	,,
	जाम्बवासवः	१–२ कर्षः	जलम्
	धान्वन्तरं घृतम्	,,	दुग्धम्
	अहिफेनम्	१ गुंजा	,,
औपसर्गिकमेहः	कंकोलचूर्णम्	२–४ माषाः	दुग्धम्
	मूत्रलकषायः (सि. यो. सं.)	१–२ कषायः	मधु
	शिलाप्रवंगम्	१–२ गुंजा	,,
	त्रिवंगभस्म	,,	,,
	सुवर्णबंगः	,,	,,
	चन्द्रप्रभा	३–६ गुंजा	दुग्धम्
	चन्दनतैलम्	५–१० बिन्दवः	,,
	चन्दनासवः	१-२ कर्षः	जलम्
प्रमेहपिडका	शस्त्रकर्म, पश्चात् पारदादिघृतम्, जात्यादिघृतम्		
बहुमूत्रता	मूत्रसंग्रहणीय दशेमानि (चरक)		
	धात्रीनिशायोगः		
	आनन्दभैरवरसः	३–६ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	यशदभस्म	१–३ ,,	मधु
	प्रकुञ्च तिलभक्षणम्		

मेदोरोगः

सामान्य-चिकित्सा	चित्रकमूलचूर्णम्	२–४ माषाः	मधु
	वातारिपत्रक्षार+हिंगु (बंगसेन)	१–२ माषाः	जलम्
	हरीतकीचूर्णम्	०।–०।। कर्षः	गोमूत्रम्

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
	नवायसचूर्णम्	३–६ गुंजा	घृत+मधु
	खदिरसारः	१ कर्षः	शीतजलम् ; प्रातःकाले षण्मासपर्यन्तम्
	त्रिफलागुग्गुलु	३ गुंजा	जलम्

रुबूकमूलं मधुदिग्धम् रात्रौ स्थापयित्वा प्रातःकाले तज्जलं पिबेत्
(भा. प्र.)

यवसक्तु भक्षणम्

उदररोगः

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
वातजः	एरण्डतैलम्	२–२॥ कर्षः	दशमूलक्वाथः
	दशमूलक्वाथः	१–२ ,,	मधु
	शिवाचूर्णम्	०॥–१ ,,	जलम्
	द्विरुत्तर ,,	,,	,,
	क्रव्यादरसः	१–३ गुंजा	मधु
पित्तजः	कटुकीचूर्णम्	१–२ माषाः	जलम्
	इन्द्रवारुणीचूर्णम्	,,	,,
	दन्ती ,,	,,	,,
	त्रिवृत् ,,	,,	,,
	आरग्वधमज्जा	१ कर्षः	,,
	आरोग्यवर्धनीरसः	३–६ गुंजा	दुग्धम्
कफजः	पुनर्नवाष्टकक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	दशमूलक्वाथः	१–२ ,,	,,
	शिवाचूर्णम्	०॥–१ ,,	गोमूत्रम्
	आरोग्यवर्धनी	१–२ माषाः	,,
	नाराचरसः	३–६ गुंजा	जलम्
	इच्छाभेदीरसः	१–३ ,,	,,
	जलोदरारिरसः	१–२ ,,	,,
	अश्वकंचुकीरसः	२–६ ,,	,,
	अभयारिष्टः	१–२ कर्ष	,,
अकृत्प्लीहोदरम्	गोमूत्रम्	५ कर्ष	
	रोहितकक्वाथः	१–२ ,,	मधु

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
	शिग्रुक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	वरुण ,,	,,	,,
	पुनर्नवाष्टकक्वाथः	,,	,,
	कटुकी+नवसिन्धुचूर्णम्	०।-०॥ कर्ष	जलम्
	शरपुंखलवणम्	,,	,,
	क्रव्यादरसः	१–३ गुंजा	मधु
	आरोग्यवर्धिनीरसः	,,	गोमूत्रम्
	शंखद्रावः		
	कुमारीआसवः	२–२॥ कर्षः	जलम्
हृद्जन्ये उदरे	हृद्यपत्रचूर्णम्	१–४ गुंजा	जलम्
	दशमूलक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	आरोग्यवर्धनीरसः	३–६ गुंजा	दुग्धम्
	पुनर्नवासव, दशमूलासव,– कुमारीआसव मिश्रणम्	२–६ कर्षः	
जलोदरम्	पुनर्नवादिक्वाथः	१-२ कर्षः	मधु
	दशमूलक्वाथः	,,	,,
	पुनर्नवाचूर्णम्	२–४ माषाः	जलम्
	दन्ती ,,	,,	,,
	हरीतकीचूर्णम्	०॥–२ कर्षः	गोमूत्रम्
	इच्छाभेदीरसः	१–३ गुंजा	जलम्
	अश्वकंचुकीरसः	,,	,,
	जलोदरारिरसः	१ ,,	,,
	नाराचरसः	,,	,,
	आरोग्यवर्धनीरसः	,,	गोमूत्रम्
	क्षारगुटिका	३–६ गुंजा	जलम्
	स्नुहीघृतम्	१–२ माषाः	दुग्धम्

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
	स्नुहीघृतभावित–		
	त्रिवृत्चूर्णम्	३–६ गुंजा	जलम्
	स्नुक्पल्लवशाकभक्षणम्–		
	माणकंदपेया[1]		
बद्धगुदोदरम् छिद्रोदरम्	शस्त्रकर्मसाध्ये		

शोथरोगः

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
वातजः	दशमूलक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	शिवाचूर्णम्	०।–०॥ ,,	गोमूत्रम्
	त्रिफलाद्यरिष्टः	१–२ ,,	जलम्
पित्तजः	कटुकीचूर्णम्	०।–०॥ ,,	,,
	आरोग्यवर्धनीरसः	३–६ गुंजा	गोमूत्रम्
कफजः	पुनर्नवादिक्वाथः	१–२ कर्ष	मधु
	हरीतकीचूर्णम्	०।–०॥	गोमूत्रम्
	गुडार्द्रकयोगः (चरक)		
	शिलाजतुरसायनम्		
	आरोग्यवर्धनीरसः	३–६ गुंजा	गोमूत्रम्
	दुग्धवटी	१–३ ,,	दुग्धम्
	पुनर्नवामंडूरः	३–६ ,,	गोमूत्रम् वा तक्रम्
हृद्जन्यः	हृद्यपत्रचूर्णम्	१–३ ,,	पुनर्नवादिक्वाथः
	आरोग्यवर्धनीरसः	३–६ ,,	गोमूत्रम्
	हृदयचिंतामणिरसः	१–३ ,,	मधु
वृक्कजन्यः	इक्षुरकमूलक्वाथः	१–२ कर्षः	
	अयोरजस्त्र्यूषणयावशूकं मूत्रं च पीतं त्रिफलारसेन (चरक)		
	शिलाजतु	०।–०॥ कर्षः	उष्णदुग्धम्
शोथे बाह्योपचारः	काकमाचीस्वरसः		
	धत्तूरस्वरसः		

१–माणककल्कक्वाथाभ्यां द्विगुणीकृत तण्डुलम्
साधितं क्षारतोयाभ्यां अभ्यस्येत् पायसं तु तत् (च. द.)

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
	अग्निमन्थस्वरसः		
	पुनर्नवालेपः		
	दशांगलेपः (पित्तजे शोथे)		
	दोषघ्नलेपः (कफजे शोथे)		
	बिभीतकफलमज्जालेपः		
	उमा–उपनाहः		
	वातघ्नपत्रस्वेदः		

वृद्धिरोगः

सामान्य-चिकित्सा	हरीतकीचूर्णम्	०।–०॥ कर्षः	गोमूत्रम्
	गोमूत्रक्लिन्न–हरीतकीचूर्णम्	,,	,,
	एरण्डतैलम्	१–२॥ कर्षः	,,
	एरण्डमूलक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	अर्कमूलक्वाथः	,,	,,
	तृणपंचमूलक्वाथः	,,	,,
	कुबेराक्षचूर्णम्	२–४ माषाः	गोमूत्रम्
	विशालामूलचूर्णम्	,,	,,
	वृद्धिबाधिकावटी	१–३ गुंजा	पुनर्नवाष्टकक्वाथः
	आरोग्यवर्धिनीरसः	,,	गोमूत्रम् वा पुनर्नवादिक्वाथः
बाह्योपचारः	शिलारसलेपः		
	अर्कमूलकल्कलेपः		
	ऐलेयलेपः		
	पूतिकरंजबीजलेपः		

गलगण्डरोगः

जलकुम्भीभस्म
गिरिकर्णिकामूलम्
तिक्तालाबुफले जलं मद्यं वा पातव्यम्
दग्धसर्पमसीप्रलेपः
मालाकंदः भक्षणे प्रलेपने च

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्:
गण्डमाला			
अपची	निर्गुण्डीमूलनस्यम्		
	शाखोटकतैलनस्यम्		
	निम्बतैलनस्यम्		
	गुंजातैलनस्यम्		
	कोषातकीनस्यम्		
	आरग्वधमूलनस्यम्		
	वर्धमानपिप्पलीयोगः		
	अलम्बुषास्वरसः	२ कर्षः	मधु
	वरुणक्वाथः	१–२ ,,	,,
	काञ्चनारगुग्गुलुः	३–६ गुंजा	वरुणक्वाथः
	गण्डमालाकंडनरसः	१–३ ,,	,,
बाह्योपचारः	भारंगमूललेपः		
	वाकेरीमूललेपः		
	गुंजालेपः		
	मालाकन्दप्रलेपः		
ग्रंथि अर्बुद	शस्त्रकर्मोपचारः		

श्लीपदरोगः

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्:
नवोत्थिते सामान्य चिकित्सा	शाखोटकक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	अर्कमूलत्वक्क्वाथः	०।–०॥ ,,	,,
	पूतीकरंजपत्ररसः	१ ,,	,,
	हरीतकीचूर्णम्	०।–०॥ ,,	गोमूत्रम्
	गंधकरसायनम्	,,	दुग्धम्
	महायोगराजगुग्गुलुः	६–१२ गुंजा	मंजिष्ठादिक्वाथः
	नित्यानंदरसः	१–३ ,,	गोमूत्रम्
बाह्योपचारः	धत्तूरलेपः		
	वंध्याकर्कोटकीलेपः		
	चित्रकलेपः		
	पूतिकरंजलेपः		
	अर्कमूलत्वचं शुक्ते पिष्ट्वा लेपः कार्यः		

विद्रधिरोगः

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
सामान्य-चिकित्सा	शिग्रुक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	वरुणक्वाथः	,,	,,
	मंजिष्ठादिक्वाथः	,,	,,
	वरुणादिक्वाथः	,,	,,
	त्रिफलाचूर्णम्	०।–०॥ कर्षः	जलम्
	आरोग्यवर्धनी	६–१२ गुंजा	वरुणादिक्वाथः
	चंद्रप्रभावटी	,,	,,
	शिलाजतु	०। कर्षः	,,

व्रणशोथरोगः

सामान्य-चिकित्सा	दशांगलेपः		
	दोषघ्नलेपः		
	उमालेपः		
	कृष्णमलहरपट्टी		

भगंदररोगः

	नारसिंहचूर्णम्	२–४ माषाः	घृत+मधु
	गुग्गुलुः	,,	पुनर्नवादिक्वाथः
	त्रिफलागुग्गुलुः	,,	,,
	निम्बतिलवर्तिः		
	क्षारसूत्रम्–क्षारकर्म		
	करवीरतैलम्		
	निम्बतैलम्		
	कोषातक्यादितैलम्		
	भगंदरारिमलहरः (आ. नि. मा.)		

कुष्ठरोगः

सामान्य-चिकित्सा	खदिरत्वक्कषायः	१–२ कर्षः	मधु
	निम्बस्वरसः वा क्वाथः	,,	,,

प्रकार:	योग:	मात्रा:	अनुपानम्
	बाकुचीक्वाथ:	१–२ कर्ष:	मधु
	तुवरक बीजं वा तैलम्	—	—
	हरिद्राक्वाथ:	,,	,,
	आरग्वधक्वाथ:	,,	,,
	गुडूचीक्वाथ:	,,	एरण्डतैलम्
	सारिवाक्वाथ:	,,	,,
	महामंजिष्ठादिक्वाथ:	२–४ माषा:	घृत+शर्करा
	गंधकरसायनम्	,,	दुग्धम्
	महातिक्तघृतम्	१ कर्ष:	,,
	तालसिन्दूरम्	१–२ गुंजा	मधु
	हरितालम्	,,	,,
	पंचतिक्तघृत गुग्गुलु:	१–२ कर्ष:	दुग्धम्
	महायोगराजगुग्गुलु:	३–६ गुंजा	दुग्धम् मंजिष्ठादिक्वाथ:
	फलत्रिक ,,	,,	,,
	आरोग्यवर्धनी	,,	,,
	खदिरासव:	१–२ कर्ष:	जलम्
	मध्वासव:	,,	,,
	लोध्रासव:	,,	,,
कुष्ठे बाह्योपचार:	करंजतैलम्		
	तुवरक ,,		
	बाकुची ,,		
	निम्ब ,,		
	करवीर ,,		
	तिक्तघृतम्		
	धौतघृतम्		
श्वित्रकुष्ठ:	गिरिकर्णिकामूललेप:		
	सर्पमसी+बिभीतकतैललेप:		
	बाकुची, हरिताल,– कासीस, मन:शिला– भृंगराज लेप: (भा.प्र.)		

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
दद्रुः	ऐडगजबीजचूर्णम्		निम्बूरसः तक्रं वा
	ऐडगज–करंजलेपः		
	हरीतकीचूर्णम्	०।–०॥ कर्षः	जलम्
	मंजिष्ठादिक्वाथः	१–२ ,,	मधु
	दद्रुघ्नसोगठी	लेपः	निम्बुस्वरसः
कच्छू	शुद्धबलिचूर्णम्	२–४ माषाः	कदलीफलम्
(स्केबीज़; इच)	सारिवाचूर्णम्	,,	जलम्
	हरीतकी ,,	,,	,,
	मंजिष्ठादिक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	केवल शर्कराप्रयोगः	यथाबलम्	जलत्यागः
बाह्योपचारे	बलिमलहरः		
	पामाहर पावडर		
किटिभकुष्ठः	आरग्वधत्वक् पत्रं वा लेपार्थं		
(सोराइसीस)	रक्तशुद्धियोगः (र. र. समुच्चयः)		
	आरग्वधक्वाथः		
	आरग्वधत्वक् कषायः		
	पञ्चतिक्तघृत गुग्गुलु (चक्रदत्त) १–२ कर्षः		
पामा–(वीपिंग एग्ज़ीमा)			
बाह्योपचारः	खर्परमलहरः		
	मदयन्तिकापत्रकल्कलेपः		
	रसपुष्प–बटाटायोगः		
	सूक्ष्मशिवाचूर्णस्य जलेन सह लेपः ।		
हस्तिचर्म–चर्मकुष्ठः	पारदादिमलहरः		
(ड्राई एग्ज़ीमा)	नारिकेलतैलम्		
	नारिकेल कवच चुआ (पातालयंत्र तैलम्)		
	भल्लातकतैलम्		

शीतपित्त–उदर्द–कोठरोगाः

शीतपित्तम्	मत्स्याचूर्णम्	३–६ गुंजा	शर्करा+जलम्
	अविपत्तिकरचूर्णम्	२–४ माषाः	जलम्

प्रकार:	योग:	मात्रा	अनुपानम्
	स्वादिष्टविरेचनचूर्णम्	२–४ माषाः	,,
	अर्कदुग्धभावित–प्रवालपिष्टि:	०॥ गुंजा	वासाचूर्णम्–घृतम्
	गोदन्तीभस्म+गैरिकम्	२–४ माषाः	शर्करा+जलम्, घृत+शर्करा
	मरिचचूर्णम्	३–६ गुंजा	घृत+शर्करा
	संजीवनीवटी	३–६ गुंजा	दुग्धम्
	सूतशेखररस:	१–३ ,,	आर्द्रकं+मधु
	कामदुघारस:	,,	,,
	हरिद्राखण्डम्		
बाह्योपचारे	प्रियाल दुग्धलेप:		
	अरण्योत्पलभस्मलेप:		
	स्वर्जिकाक्षारमिश्रितजलप्रलेप:		

अम्लपित्तरोग:

सामान्य चिकित्सा	निम्बपत्रस्वरस: ५ कर्ष:	वमनार्थे	
	मदनफलमज्जा १/४ कर्ष:	,,	
	मत्स्याचूर्णम्	३–६ गुंजा	शर्कराजलम्
	अविपत्तिकरचूर्णम्	०।–०॥ कर्ष:	,,
	त्रिवृत् ,,	२–४ माषाः	,,
	दन्तीमूल ,,	,,	,,
	शंखभस्म, शठीचूर्णम्, स्वर्जिकाक्षार: } त्रयाणां मिश्रणम्	२–४ माषाः	,,
	सूतशेखररस:	१–३ गुंजा	आर्द्रकं+मधु
	कामदुघारस:	,,	,,
	कल्याणवटका:	०।–०॥ कर्ष:	जलम्
	कूष्माण्डअवलेह:	१ कर्ष:	दुग्धम
	सुधाम्बु	२ ,,	,,

विसर्प-विस्फोटकौ

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
चिकित्सासूत्रम्	आदौ एव विसर्पेषु हितं लंघन रूक्षणम् । रक्तावसेको वमनं विरेकः स्नेहनं न तु ॥ (अ. हृ. चि. अ. १८)		
	निम्ब स्वरसः	५ कर्षः	जलम्
	गुडूची निर्यूहः	,,	,,
	मंजिष्ठादिक्वाथः	३–२ कर्षः	मधु
	बलिरसायनम्	२–४ माषाः	दुग्धम्
	मुक्तापिष्टिः	३–६ गुंजा	,,
	प्रवालपिष्टिः	,,	,,
विसर्पज्वरे			
	आमलकस्वरसः घृतमिश्रितः ॥[1]		
बाह्योपचारे :	शुण्ठीलेप		
	काकमाचीस्वरसः		
	दशांगलेपः		
	शतधौतघृतलेपः		
	चंदनकर्पूरलेपः		
	गैरिक+खर्पर+अश्वत्थत्वक्		
	गुलेअरमनी–कृष्णमृत्तिकालेपः		

मसूरिका, रोमान्तिका, शीतलिका रोगाः

चिकित्सा विसर्पवत्

उपदंश फिरंग रोगौ

उपदंशः	मंजिष्ठादिक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	सारिवाचूर्णम्	२–४ माषाः	जलम्
	अष्टमूर्तिरसः	१–२ गुंजा	मंजिष्ठादिक्वाथः
	अमीररसः	१ गुंजा	शीरा
	केसरादिवटी	१–३ गुंजा	दुग्धम्
	मल्लसिन्दूरम्	१ गुंजा	,,
	भैरवरसः (भै. र.)		
	रसगुग्गुलुः	२–४ माषाः	,,

१ रसमामलकाद्वा घृतमिश्रं ज्वरापहम् (चि. चि. ११)

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
बाह्योपचारे	जात्यादिघृतम्		
	रसपुष्पमलहरः		

क्षुद्ररोगाः

अजगल्लिका	मलमार्गमार्जनम्		
	खर्परमलहरः		
	यशदपुष्पम्		
यवप्रख्या विवृता कच्छपिका	कांचनारगुग्गुलुः		
वल्मीक इन्द्रविद्धा गर्दभिका	शस्त्रकर्म		
पाषाणगर्दभः (मम्स)	शिग्रुलेपः; वरुणशिग्रुलेपः		
	दोषघ्नलेपः		
	अतसीलेपः		
	गुलेअरमनोलेपः		
	ज्वरघ्नक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	ज्वरघ्नीवटी	३–६ गुंजा	गुडूचीक्वाथः
पनसिका जालगर्दभ	विसर्पवत्		
कदर चिप्प अनुशयी विदारी शर्करार्बुद	शस्त्रकर्म		
पाददारी	मंजिष्ठादिक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
बाह्योपचारः	जीवन्त्यादि मलहरः, शतधौतघृतम्		
	कोकम (वृक्षाम्ल) घृतम्		
	एरण्डतैलम्		

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
अलसक (वेढापाक)	पाददारिकावत्		
इन्द्रलुप्तम्	हस्तिदन्तमसी+रसांजनलेपः		
	रसांजनम् लेपार्थे		
	कासीसम् ,,		
	भृंगराजः ,,		
दारुणकः	इन्द्रलुप्तसदृशचिकित्सा		
रुही–रुध्या			
खालित्यम्	इन्द्रलुप्तवत्		
अरुंषिका	निम्बतैलमर्दनम्		
	पारदादिलेपः		
	कुष्ठ+कंटकारी अंतर्धूमभस्म–निम्बतैलेन लेपः		
पलितम्	भृंगराजलेपः		
	निम्बतैलनस्यम्		
यौवनपिटिका	शाल्मलीकंटकानि मसूरविदलं च लेपः		
	लोध्र+वचा+आम्रहरिद्रालेपः		
	त्रिफलाचूर्णम्	०।–०॥ कर्ष	जलम्
	मंजिष्ठादिक्वाथः	१–२ ,,	मधु
	सुधापर्पटी (केल्शियम सल्फेट)	१–२ वल्लाः	जलम्
पद्मिनीकंटकः	वमनं कार्यम्		
जतुमणि			
मशक	कर्तनम्		
तिलकालक, न्यच्छ, व्यंग, नीलिका	जातीफलम्–दुग्धेन सह लेपः इंगुदीफलमज्जालेपः		
परिवर्तिका, अवपाटिका, निरुद्धप्रकश, सन्निरुद्धगुद	शस्त्रकर्मसाध्य		

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
अहिपूतना	निम्बतैललेपः		
	खर्परमलहरलेपः		
गुदभ्रंशः	कुकुंदरतैलम्, कासीसद्रवः, स्फटिकाद्रवः — बाह्योपचारः		
	कोमल कमलदल भक्षणम् शर्करा सहितम्		
ओष्ठगतरोगाः	जात्यादितैलम्, इरिमेदादितैलम्, जीवन्त्यादिघृतम् — बाह्योपचारः		
दन्तमूलगताः रोगाः			
दन्तवेष्टकः, शीतादः, दन्तपुप्पुटः, उपकुशः, दन्तनाडी	जात्यादितैलम्, इरिमेदादितैलम्, पायोरिया प्रवाही — बाह्योपचारः, यष्टिमधु कल्क कवलग्रहः घृतेन सह, सौराष्ट्री+रसांजन गण्डूषः		
	सैरेयकक्वाथगण्डूषः		
	त्रिफलागुग्गुलुः	४–८ गुंजा	घृत–मधु
	प्रवालभस्म	२–४ ,,	,, गुलकंद
कृमिदन्तः	फलत्रिकचूर्णम्	२–३ माषाः	घृत+मधु
	रसोनादिवटी	२–३ ,,	जलम्
	पारसीकयवानी+गोदन्ती	१–२ ,,	,,
	उत्तरभक्ति स्नेहपानम्		
	कंटकारीबीजधूमः		
	इरिमेदादितैलपिचुधारणम्		
	लवंगतैल पिचुधारणम्		
जिह्वारोगाः, मुखपाकः	शोणित मोक्षः		
	रसवन्ती+सौराष्ट्री–गण्डूषः		
	गुडूचीकल्कधारणम्		
	गुंजापत्रकल्कधारणम्		
	गैरिकचूर्ण प्रतिसारणम्		
	इरिमेदादितैलप्रतिसारणम्		
	फलत्रिकचूर्णम्	२–३ माषाः	जलम्
	मंजिष्ठादिक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
गलरोगः	रजतद्रवप्रतिसारणम्		
(गिलायु	मेंडल्सपेइन्टप्रतिसारणम्		
गलशुण्डी	कंकोल+यष्टिमधु प्रतिसारणम्		
गलग्रहः)	त्रिकटु+कासीसप्रतिसारणम् (सुश्रुत.)		
	कालकचूर्णम्		
	पीतक ,,		
	दार्वी+सोराष्ट्री गण्डूषः		
	इरिमेदादि तैल प्रतिसारणम्		
	ग्लिसरीन टेनिक प्रतिसारणम्		
	टंकणमधु प्रतिसारणम्		
	मंजिष्ठादिक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	फलत्रिकचूर्णम्	०।–०॥ कर्षः	,,
	कट्फलादिचूर्णम्	०। कर्षः	,,
	सितोपलादिचूर्णम्	,,	,,
	तालीसादि ,,	,,	,,
	त्रिभुवनकीर्तिरसः	३–६ गुंजा	,,
	खदिरादिवटी / लवंगादिवटी } मुखे धारणार्थम्		

नेत्ररोगाः

	लंघनम् । विरेचनम् ।		
अभिष्यन्दः	रसवन्तीद्रवः	आश्च्योतनम्	
	पलाशपुष्परसक्रिया	,,	
	शिग्रुपत्रस्वरसः समभाग मधुयुक्तः	,,	
	कुस्तुम्बरी स्वरसः	,,	
	बिडालकलेपः		
	दशांगलेपः		
	टंकणाम्लस्वेदः		
	(बोरिक एसिड)		
	त्रिफलाक्वाथधावनम्		
	मंजिष्ठादिक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	फलत्रिकचूर्णम्	०।–०॥ ,,	,,

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
अधिमन्थः	अभिष्यन्दवत् क्रिया		
	उत्तरभक्तिकः स्नेहः वेदनाशमनार्थे		
	इसरीनद्रव आश्च्योतनम्		
	शंखप्रदेशे विस्फोट जननम्		
	शिरोवस्तिधारणम् (वातहरद्रव्यक्वाथः; घृतम् इत्यादि)		
अक्षिपाकः	जात्यादिअंजनम् (सुश्रुत)		
(हायपोपिअन)	पैत्तिकाभिष्यन्दवत्		
अंजननामिका	सिन्दूरलेपः		
	रजतद्रवप्रतिसारणम्		
	टंकणाम्लस्वेदः		
	बिडालकलेपः		
	त्रिफलाचूर्णम्	०।–०।। कर्षः	मधु
अर्जुनः	सैन्धवेन कतकफलम् – अंजनम्		
(सब कंजंक्टा-	रसवन्तीद्रव आश्च्योतनम्		
इवल हेमोरेज)	शंखः, मधुना अंजनम्		
	त्रिफलाचूर्णम्	०।–०।। कर्षः	दुग्धम्
पोथकी	तुत्थप्रतिसारणम्		
(ખીલ,	मृदुरजतद्रवप्रतिसारणम्		
ट्रेकोमा)	शर्कराप्रतिसारणम्		
	चन्द्रोदयावर्तिः अंजनम्		
	टंकणाम्लस्वेदः		
	रसकर्पूरद्रवधावनम्		
	वासादिक्वाथः		
	(शार्ङ्गधरः)	१–२ कर्षः	मधु
	मंजिष्ठादिक्वाथः	,,	,,
	फलत्रिकचूर्णम्	०।–०।। कर्षः	दुग्धम्
पिल्लरोगः+			
प्रक्लिन्नवर्त्म	तुत्थप्रतिसारणम्		
(ब्लेफराइटिस)	रजतद्रवप्रतिसारणम्		
	रसवन्तीद्रवआश्च्योतनम्		
	पीतमलहरः (येलो ऑइन्टमेन्ट)		
	चन्द्रोदयावर्तिः- अंजनम्		

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
शुक्रम् अव्रणम्	चन्द्रोदयावर्तिः अंजनम्		
	वटक्षीर+कर्पूर ,,		
	शृंगः–अंजनम्		
	नृसारद्रवः आश्च्योतनम्		
	पीतमल्हरः (येलो ऑइंटमेंट)		
	सप्तामृतलोहः	३–६ गुंजा	घृत+मधु
सव्रणशुक्रम्	रजतद्रव प्रतिसारणम्		
	आर्जीरोल		
	रसवन्तीद्रव आश्च्योतनम्		
	शिग्रुघनद्रव आश्च्योतनम्		
	बब्बुलरसक्रिया—अंजनम्		
	एट्रोपीनद्रवः आश्च्योतनम्		
	दुग्धसूचीवेधः		
	सप्तामृतलोहः	३ ६ गुंजा	घृतं+मधु
	धात्रीचूर्णम्	०। कर्षः	दुग्धम्
रात्र्यान्ध्यम्	चन्द्रोदयावर्तिः	हरेणुमात्रा	मधुनांजनम् रात्रौ
	अजायकृति भृष्टा पिप्पली	अंजनम्	मधुना
	यकृद्भक्षणम्	द्वि-पलम्	
	त्रिफलाचूर्णम्	२ माषौ	घृतम्+मधु
	भुजंगवसा	अंजनम्	
	जीवन्तीशाकम्	घृतभृष्टम्	भोजने
शुक्तिका	एरण्डस्नेहाश्च्योतनम्	१–२ बिंदवः	प्रातः
	कतकफलं सैन्धवेन मधुना च	अंजनम्	सायं
	स्वर्णवसंतः	३–६ गुंजा २ वारम्	नवनीतशर्कराभ्याम्
अर्मरोगे	चन्द्रोदयावर्ति	अंजनम्—घर्षणम् च	
काचरोगे च	,,		
	गुडूचीरसक्रिया	अंजनम्	(शार्ङ्गधरः)
	पलाशमूलार्कः	,,	
	सप्तामृतलोहः	२–४ वल्लाः	घृतं-मधु
अलजीपर्वणी	रसवंतीद्रवाश्च्योतनम्		
	रसपुष्पावचूर्णनम्		

कर्णरोगाः

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
कर्णस्रावः	विष्णुपदामृतेन, सुराष्ट्रजाद्रवेण वा धावनम्		
	समुद्रफेनचूर्णप्रक्षेपः-नीबुद्रवानुक्षेपः		
	रसवंतीद्रवः पूरणे		
	पूर्वम् शोधन तैलम् कर्णपूरणे; अनंतरम् रोपणतैलम् (इरिमेदादि तैलम्);		
	पंचगुणतैलम् कर्णपूरणे		
	त्रिफलाचूर्णम्	१-५ माषाः	मधु-घृताभ्याम्
	रसायन ,,	२-४ ,,	दुग्धेन
	अभ्रक+बंग+प्रवालयोगः	१-६ गुंजा	घृतं-मधु
पूतिकर्णः कृमिकर्णश्च	कर्णस्रावहराः योगाः यवानीपुष्पचूर्णप्रक्षेपः, नीलगिरितैलप्रक्षेपः		
	त्रिफलागुग्गुलः	२-४ वल्लाः द्विवारम् अधोभक्तम्	घृतम्-मधु
कर्णस्वेदः कर्णनादःच	कर्णानंदतैलं पूरणे अपामार्गक्षारतैलं पूरणे		
	गोदंती+नवायसलोहः	२-३ वल्लाः	घृत-मधु
	योगराजगुग्गुलः	२-४ ,, अधोभक्तम्	घृतम्-मधु
	बाताम, खाखस, मरीचानां पेया, दुग्धेन		
	विषतिन्दुकवटी	२-३ गुंजा ,,	घृतेन
	उष्ण सर्षपतैलपूरणम्		
बाधिर्यम्	कर्णानंदतैल पूरणम्		
	मुसलीबाकुचीचूर्णम्		
	स्वर्णयोगराजः	२-४ गुंजा अधोभक्तम्	घृतमधु
	विषतिन्दुकवटी	३-६ ,, ,,	घृतेन
	रसायनचूर्णम्	२ माषौ	दुग्धेन
	सारिवादिवटी	,,	जलम्
कर्णशूलः	कर्णानंद तैलम् पूरणे		
	क्षार तैलम् ,,		
	दीपिकातैलम् ,,		
	लशुन तैलम् ,,		
	पक्वस्य अर्कपत्रस्य स्वरसः पूरणे		
	कंटकारीचूर्णधूमः		

प्रकारः	योगः	मात्रा		अनुपानम्
	अहिफेनासवः पूरणे (सिडेटिव ड्रॉप्स)			
	तापस्वेदः, नाडीस्वेदः च			
	सर्पगन्धाघनवटी	२–६ गुंजा	अधोभक्तम्	जलम्
	वेदनान्तकरसः	१ ,,		दुग्धेन
	पारसीकयवानीचूर्णम	१–३ ,,		,,

नासारोगाः

पीनसः	लवणजल प्रक्षालनम्			
	रक्तस्फटिकद्रवेण प्रक्षालनम्			
	पंचगव्यघृतनस्यम्			
	षड्बिन्दुनस्यम्			
	समीरपन्नगः	१/४–१/२ गुंजा	अधोभक्तम् २ वारम्	घृतं+क्षीरम्
	व्योषादिवटी	३-६ गुंजा	,,	जलेन
	तालीसादिचूर्णम्	३–६ वल्लाः	प्रातः–सायं	घृतेन
	सितोपलादिचूर्णम्	,,	,,	मधुना घृतेन वा
	अभ्रकं+प्रवालं+यशदं च	३ गुंजा	,,	,,

गुडमरिचविमिश्रं पीतमाशु प्रकामम् ।
हरति दधि नराणां पीनसं दुर्निवारम ॥ (यो. र.)

नासापाकः	पद्मकादितैलनस्यम् (चिकित्साप्रदीपः)		
	रसवंतीद्रवनस्यम्		
	दशांगलेपः		
	प्रवालभस्म	२–६ गुंजा	
	वासावलेहः	१–२ माषाः	
	वासादिक्वाथः (शार्ङ्गधरः)	१–२ पलम्	मधुना
पूतिनस्यम्			
पूयरक्त म्	नासापाकवत् चिकित्सा		
	रक्तनस्यमः पश्चात् प्रधमननस्यम्		
भ्रंशथुः	पीनसवत्		

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
क्षवथुः	पंचगव्य घृतं नस्यार्थे		
	षड्बिन्दु तैलम् (योगरत्नाकर)		
	घृतपानम्		
	एलादिघृतम्	२—४ माषाः	
	घृत गुग्गुलु मिश्रितस्य सिक्थकस्य धूमः		
दीप्तम्	निम्बपत्रस्वरस+रसवन्तीद्रवः नस्यार्थे		
	दशांगलेपः		
प्रतिनाह	एरण्डतैलम् नस्यार्थे		
(क्रॉनिक नेज़ल	गृहधूमादितैलम् (शा. सं.) नस्यार्थे		
केटार)	सर्पिष्पानम्		
	तालीसादिचूर्णम्	१—२ माषाः	घृत—मधु
	हरिद्राधूमः		
नासास्रावः	एरण्डतैलनस्यम्		
	षड्बिन्दुनस्यम्		
नासास्रावः	कर्पूरशिला +		
	तालीसादिचूर्णम्	१—२ माषाः	घृतमधु
	त्रिकटुचूर्णम्	,,	,,
नासाशोषः	गोघृतनस्यम् ससैन्धवम्		
प्रतिश्यायः	तालीसादिचूर्णम्	१-२ माषाः	घृतं+मधु
(वातिक)	शिवात्रयी ,,	,,	जलम्
	त्रिकटु ,,	,,	घृत+मधु
	कण्टकार्यादिक्वाथः[१]		मधु
	श्वासकुठारः	२-३ गुंजा	आर्द्रकस्वरसः
	गुडशुण्ठी नस्यम्		
	अजमोदाधूमयोगः		
	उष्णस्य एरण्डतैलस्य नासायाम् द्विबिन्दुक्षेपणम्		
पित्तजः			
प्रतिश्यायः	सितोपलादिचूर्णम्	१—२ माषाः	घृतं—मधु
	नागपुष्पचूर्णम्	,,	घृतं+मधु

१—कण्टकारिकामूलं-गुडूची, नागरं—समानभागगृहीतानां २ कर्षस्य क्वाथः ।

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
	वासादिक्वाथः (शा. सं.)	१–२ कर्षः	मधु
	पर्पटक्वाथः	,,	,,
	पंचगव्यनस्यम्		
	गोघृतनस्यम्		
कफजः			
प्रतिश्यायः	कंटकार्यादिक्वाथः		
	(शा. सं.)	१–२ कर्षः	मधु
	तालीसादिचूर्णम्	१–२ माषाः	,,
	बृहतीलवणचूर्णम	,,	,,
	त्रिकटुचूर्णम्	,,	,,
	त्रिफलाचूर्णम्	,,	,,
	षड्बिन्दुनस्यम्	—	—
	श्वासकुठाररसः	३ गुंजा	आर्द्रकस्वरसः
	रक्तचन्दनलेपः		
	कर्पूरलेपः		
	शटीलेप		
	दशांगलेपः		
सान्निपातिक–			
प्रतिश्यायः	दोषोद्रेकानुसारिणी चिकित्सा		
कृमिज –			
नासारोगः	विडंगतैलनस्यम्		
	करंजतैलनस्यम्		
	निम्बस्वरसनस्यम्		
	श्वासकुठारादि प्रधमननस्यम्		
	कृमिमुद्गररसः	१–३ गुंजा	जलम्
	कृमिकुठाररसः	,,	,,

शिरोरोगः (शिरोवेदना)

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
वातजः	शिवात्रयीचूर्णम्+		
	पारसीकयवानीचूर्णम्	०।-०॥ कर्षः	जलम्
	पथ्यादिक्वाथः	१-२ ,,	मधु
	नारिकेलपाकः		
	षड्बिन्दुनस्यम्		
	नृसारबाष्पः		
	एरण्डतैलमर्दनम्		
	शिरोबस्तिधारणम्		
	वचाशुण्ठीदेवदारुलेपः		
	प्रतिमर्शनस्यं गोघृतस्य		
पैत्तिकः; रक्तजः	सर्पगन्धाचूर्णम्+मांसी	४-८ गुंजा	दुग्धशर्करा
	सुवर्णमाक्षिकभस्म	१-३ ,,	घृत+शर्करा
	प्रवालभस्म	,,	,,
	कर्पूरशिलाभस्म	,,	,,
	सुतशेखररसः	,,	आर्द्रक+मधु
	धात्रीरसायनम्	१-२ कर्षः	
	कूष्माण्डअवलेहः	,,	
कफजः			
शिरोरोगः	त्रिभुवनकीर्तिः	३-६ गुंजा	मधु
	षड्बिन्दुनस्यम्		
	कट्फलनस्यम्		
	शुण्ठी-कुष्ठ-देवदारु-लेपः गोमूत्रेण		
	हरिद्राधूमः		
सांनिपातिकः	पुराणसर्पिष्पानम्		
	षड्बिन्दुनस्यम्		

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपान
	गुडशुण्ठीनस्यम्		
	पथ्यादिक्वाथः (शा. सं.)	१–२ कर्षः	मधु
	शठी+धात्री+शिवायोगः	१–२ माषाः	जलेन
	सप्तामृतलोहः	,,	समभाग मधु घृत
क्षयज शिरोरोगः	क्षीरसर्पिष्पानम्		
	क्षीरसर्पिः नस्यम्		
	जीवनीय द्रव्यस्वेदः		
	तिल दुग्धस्वेदः		
	ब्राह्मीघृतम्	१–२ कर्षः	दुग्धम्
	छागलाद्यघृतम्	१–२ ,,	,,
	सूतशेखररसः	१–३ गुंजा	आर्द्रक+मधु
	सप्तामृतलोह	१–२ माषाः	समभाग घृत मधु
कृमिजः	कृमिमुद्गररसः	१–३ गुंजा	विडंगक्वाथः
	विडंगतैलनस्यम्		
	सीताफलस्वरसनस्यम्		
सूर्यावर्तः	भल्लातकक्षीरपाकः	०॥–३ भल्लातकानि	घृतं+शर्करा
	शष्कुली(जलेबी)भक्षणम्	सूर्योदयात् प्राक्	
	पथ्यादिक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	क्षीरसर्पिर्नस्यम्		
	भृंगराजस्वरसनस्यम्		
	गुडशुण्ठीनस्यम्		
	दशांगलेपः		
अर्धावभेदकः	भल्लातकक्षीरपाकः		घृतं+शर्करा
	त्रिभुवनकीर्तिरसः	१–३ गुंजा	दुग्धम्
	गुडशुण्ठीनस्यम्		
	षड्बिन्दुनस्यम्		
अनंतवातः	समीरपन्नगरसः+सर्पगंधा	३–६ गुंजा	ब्राह्मीघृतम्
शंखकः	असाध्यः		

स्त्रीरोगाः

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
प्रदरः वातजः	दार्व्यादिक्वाथः	१-२ कर्षः	मधु
	कुशमूलं	०।-०।। कर्षः	तण्डुलाम्बु
	बलामूलं	१ कर्षः	छागीदुग्धम्
	कार्पासमूलार्कः	०।।-१ ,,	जलम्
	बोलपर्पटी	२-४ गुंजा	उष्णजलम् वा घृतं+मधु
	प्रदरान्तकरसः	,,	घृतं+मधु
	दशमूलारिष्टः	१-२ कर्षः	जलम्
	बलातैलम्	१ ,,	क्षीरम्
	बलातैलपिचुधारणम्		
	फलवर्ति धारणम्		
	सन्धिवातहररसः		
पैत्तिकप्रदरः	गुडूचीस्वरसः	१-२ कर्षः	मधु+शर्करा
	आमलकस्वरसः	,,	शर्करा
	रसायनचूर्णम्	०।-०।। कर्षः	तण्डुलधावनम्
	नागपुष्पचूर्णम्	,,	,,
	चन्दनादिचूर्णम्	,,	,,
	पुष्यानुगचूर्णम्	,,	,,
	चंद्रकलारसः	१-२ गुंजा	चन्दनजलेन
	प्रदरारिलोहः	,,	कुशमूलक्वाथः
	लोध्रासवः	१-२ कर्षः	जलम्
श्लैष्मिकप्रदरः	रोहितकमूलकल्कः	०।-०।। कर्षः	मधु-शर्करा
	धातकीपुष्पकल्कः	०। ,,	मधु
	कार्पासीमूलकल्कः	,,	,,
	पुष्यानुगचूर्णम्	०।-०।। कर्षः	तण्डुलोदकम्
	प्रदरारिलोहः	२-४ गुंजा	कुशमूलक्वाथः
सान्निपातिक प्रदरः	दार्व्यादिक्वाथः	१-२ कर्षः	मधु
	पुष्यानुगचूर्णम्	०।-०।। ,,	तण्डुलाम्बु

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
	पारावत शकृत्	६–८ गुंजा	शर्करा
	प्रदरारिलोहः	२–४ ,,	घृतं+मधु
	बोलपर्पटी	३–६ ,,	शर्करा+मधु
	शुद्ध मृद्दारः+पाषाणभेद	२ रती+०। कर्षः	तण्डुलजलम्

योनिव्यापदः

वातजासु–उदावर्ता	दशमूलक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	रास्नादिक्वाथः	,,	,,
	नारसिंहचूर्णम्	१–२ माषाः	घृतं+शर्करा
	बलातैल पिचुधारणम्	—	—
	एरण्डतैल पिचुधारणम	—	—
	भार्ग्यादिक्वाथः	१–२ कर्षः	गुड+हिंगु
	योगराजगुग्गुलुः	१ -२ माषाः	रास्नादिक्वाथः
	रजःप्रवर्तिनीवटी	६–१२ गुंजा	कुमारीआसवः
वन्ध्या	आरोग्यवर्धनीरसः	०॥–१ माषाः	दुग्धम्
	नागकेशरचूर्णम्	१॥–२ माषाः	दुग्धम्+शर्करा
	पुष्यानुगचूर्णम्	,,	,,
	कृष्णतिलक्वाथः	२–४ कर्षः	सगुडः
	पलाशपत्रम	१ नग	दुग्धेन पिष्ट्वा
	शतावरीतैलम् (पानेबस्तिकर्मणि च)	१–२ कर्षः	दुग्धेन
	नारायणतैलम् (,,)	,,	,,
	बलातैलम् (,,)	,,	,,
	फलघृतं पानार्थे	,,	,,
	रसोनकल्पः		
विप्लुता	हिंग्वष्टकम्	१–३ माषाः	घृतम+उष्णोदकम्
	रास्नादिक्वाथः	२–४ कर्षः	दुग्धेन

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
	तिलतैलम्	पिचुधारणार्थम्	
	स्वेदनम्		
	उष्णवातहरद्रव्यबस्तिः		
	एरण्डतैलम्	,,	,,
परिप्लुता	वातविध्वंसरसः+		
	योगराजगुग्गुलुः	६–१२ गुंजा	घृतं+शर्करा
	कोकेन्द्रवलेपः		
	अहिफेन+कर्पूरलेपः		
	वेदनान्तकरसः	१-२ गुंजा	दुग्धेन
अन्तर्मुखी	महायोगराजगुग्गुलुः	६-१२ गुंजा	दुग्धेन
	बलातैलपिचुधारणम्		
पित्तजासु–लोहितक्षया	पंचवल्कलक्वाथः	पानबस्त्यर्थम्	
	पुष्यानुगचूर्णम्	०।–०॥ कर्षः	तण्डुलोदकम्
	नागपुष्प ,,	०।–०॥ कर्षः	तण्डुलोदकम्
	प्रवालभस्म	२-८ गुंजा	धात्रीस्वरसः वा दूर्वास्वरसः
	चन्द्रकलारसः	,,	क्षीर+शर्करा
	अशोकारिष्टः	१–२ कर्षः	जलम्
	लाक्षा+रसाञ्जनम्	१–२ माषाः	दुग्धम्
	फलघृतम्	१–२ कर्षः	दुग्धम्
प्रस्रंसिनी	दशमूल क्षीरपाकः		
	अर्जुन क्षीरपाकः		

प्रस्रंसिनीं घृताभ्यक्तां क्षीरस्विन्नां प्रवेशयेत् ।
विधाय वेसवारेण[1] ततो बन्धं समाचरेत् ॥

स्फटिकाद्रव योनिबस्तिः

कारवेल्लमूललेपः

१–शुण्ठी मरीच कृष्णाभि धान्यकाजाजिदाडिमैः ।
पिप्पलीमूलसंयुक्तैः वेसवारः स्मृतो बुधैः ॥

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
वामिनी; पुत्रघ्नी	पुष्यानुगचूर्णम्	०।–०।। कर्षः	तण्डुलोदकम्
	फलघृतम्	१–२ कर्षः	दुग्धम्
	बलातैल पिचुधारणम्		
पित्तला	धात्रीरसायनम्	१–२ कर्षः	दुग्धम्
	खदिरघृतम्	,,	,,
	बनफसा शार्करः	,,	,,
	नागपुष्पचूर्णम्	०।–०।। कर्षः	,,
	प्रवाल+बंगभस्म	२–४ गुंजा	घृतं+शर्करा
	चन्दनतैल पिचुधारणम्		
कफजासु–			
अत्यानंदा	निम्बपत्रस्वरसः	१–२ कर्षः	मधु
	गोमूत्रलवण योनिबस्तिः		
	धत्तूररस प्रलेपः		
	निम्बादिचूर्णम्	०।–०।। कर्षः	जलम्
कर्णिनी	फलवर्तिधारणम्		
	गोमूत्रेण प्रक्षालनम्		
	मंजिष्ठादिक्वाथः	२–४ कर्षः	जलम्
प्राक्चरणा	स्नेहपिचुधारणम्		
अतिचरणा	पुष्यानुगचूर्णम्	१–३ माषाः	तण्डुलोदकं+मधु
	कपिकच्छुचूर्णम्	,,	दुग्धम्
	स्वर्णवसंतः	३–६ गुंजा	,,
श्लेष्मला	फलवर्ति–माजुफलवर्तिधारणम्		
	सुरामण्डपिचुधारणम्		
	गोमूत्रेण प्रक्षालनम्		
	करंजक्वाथः पाने, बस्तिकर्मणि च		
त्रिदोषजासु–			
षंढी	असाध्या		
अंडिनी	शस्त्रकर्मसाध्या		

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
महायोनिः	त्रिफलागुग्गुलुः	१–२ माषाः	दुग्धम्
	महायोगराजगुग्गुलुः	,,	,,
	लोध्रासवः	१–२ कर्षः	
	नारायणचूर्णम्	१ माषः	दुग्धम्
	सौराष्ट्रीद्रवबस्तिः		
	माजुफलवर्तिः		
सूचिवत्का	शस्त्रकर्म (D. & C)		
	नारायणतैलपानम्	१–२ कर्षः	क्षीरम्
	बलातैलपिचुधारणम्		
त्रिदोषजा	पुष्यानुगचूर्णम्	१–२ कर्षः	क्षीरम्
	फलघृतम्	,,	,,

सूतिकारोगाः

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
मक्कलशूलम्	यवक्षारः	०।–०॥ कर्षः	उष्णाम्बु वा घृतम्
	दशमूलक्वाथः	१–२ ,,	मधु
	पंचकोलचूर्णम्	१–२ माषाः	उष्णाम्बु
	बोलचूर्णम्	,,	जलम्
	हिंग्वष्टकचूर्णम्	,,	घृतम्
ज्वरः	देवदार्वादिक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
	दशमूलक्वाथः	,,	घृतम्
	ज्वरघ्नक्वाथः	,,	,,
	कुबेराक्षचूर्णम्	०।–०॥ कर्षः	जलम्
	प्रतापलंकेश्वररसः	२–४ गुंजा	मधु
अतीसार; ग्रहणी	अतीसार–ग्रहणीवत् चिकित्सा		
	लाईचूर्णम्		
वातव्याधिः	सौभाग्य शुण्ठीपाकः	१–२ कर्षः	
	महायोगराज गुग्गुलुः	१ माषः	
	बृहत्वात चिंतामणिः		दुग्धम्

प्रकारः	योगः	मात्रा	अनुपानम्
स्तन्यक्षयः	विदारीचूर्णम्	१–२ कर्षः	दुग्धम्
	शतावरीस्वरसः वा चूर्णम्	,,	,,
	नारिकेलपाकः	१–२ कर्षः	,,
स्तन्यदुष्टिः–			
वातदुष्ट स्तन्यम्	दशमूलक्वाथः	१–२ कर्षः	मधु
पित्तदुष्ट स्तन्यम्	अमृता–पटोल, शतावरी,– निंब, चंदनक्वाथः		शर्करा
कफदुष्ट स्तन्यम्	वमनम् देयम्		
	निम्बादिचूर्णम्	०।–०।। कर्षः	जलम्
सान्निपातिकम्	स्तन्यशुद्धिकरो वर्गः[१]		

बालरोगाः

कुकूणकः	चन्द्रोदयावर्तिः अंजनम्		
	धात्रीस्तन्यनिश्चोतनम्		
पारिगर्भिकः	लघुवसन्तः	१ गुंजा	मधु+घृतम्
	क्षीरपिप्पली		
	कुमारीआसवः	१/८ कर्षः	जलम्
	कुमारकल्याणरसः		
शकृद्द्रवम्	बालचातुर्भद्रचूर्णम्	१–३ गुंजा	मधु
	शुण्ठी+हरीतकी	,,	,,
तालुकंटकः	उदुम्बरदुग्धेन तालुलेपः		
	कुक्कुटाण्डस्नेहेन तालुलेपः		
	हरीतकी+वचा+कुष्ठकल्कः	१–३ गुंजा	मधु
महापद्मः	विसर्पवत् चिकित्सा		
दन्तोद्भेदः	बालचातुर्भद्रम्	१–३ गुंजा	मधु
	पाषाणभेदलेपः मधुना दन्तपाल्याम्		

१-पाठा नागर सुरतरु घना मृता सारिवेन्द्रयवमूर्वाः ।
कटुका किराततिक्तं वर्गोऽयं स्तन्य शुद्धिकरः ।।

प्रकारः	योगः	मात्राः	अनुपानम्
	रेवंचिनियोगः[1]	१–३ गुंजा	मधु
	दन्तोद्भेदगदान्तकरसः	१–३ गुंजा	मधु
मुखपाकः	गैरिकम् क्षौद्रेण लेपः		
	हरीतकी ,, ,,		
	रसांजनद्रवलेपः		
अहिपूतना	शंख+यष्टि+रसांजनलेपः		
	धातकीकुसुमलेपः		
नाभिपाकः	पंचगुणतैलपिचुः		
	पंचवल्कलचूर्णावचूर्णनम्		
कार्श्यम्	लाक्षादितैलमर्दनम्		
	सुवर्णवसंतः	१ गुंजा	क्षीरम्
	प्रवालपञ्चामृत	,,	,,
फक्कः	सुवर्णवसंतः	१–२ गुंजा	क्षीरम्
	अजास्थिभस्म+प्रवालभस्म	,,	,,
	पंचामृतपानम्		
	मत्स्यवसा पानाभ्यंगार्थम्		
बालग्रहः	पारसीकयवानीचूर्णम्	१–२ गुंजा	जलम्
	सर्पगन्धाघनः	,,	,,

१–रेवंचिनि+मुग्धरसः+शुण्ठी+स्वर्जिका

भेषज-संहितोक्तानामौषधकल्पानां पाठा :

अगस्तिहरीतकी

द्रव्याणि :—दशमूलं २० तोला, कपिकच्छू, शंखपुष्पी, कर्चूरः, बला, गजपिप्पली, चित्रकं, भारंगमूलं, पुष्करमूलं प्रत्येकं २ तोला; यवाः ६४ तोला; हरीतकी २५ तोला, जलं ३२० तोला।

विधि :—सर्वं एकत्र क्वाथयेत् यवहरीतक्योः आस्विन्नभावात्। पश्चात् क्वाथं वस्त्रपूतं कृत्वा स्विन्नाः च हरीतक्यः, १०० तोला गुडस्य, घृतं, तैलं, पिप्पलीचूर्णम् च प्रत्येकं ४ तोला प्रमाणेन गृहीत्वा......एकत्र क्वाथयेत् अवलेहस्य-सम्यक् पाकं यावत्। स्वांगशीते तस्मिन् मधुनः ४ तोला प्रक्षिपेत्। सुष्ठु स्थापयेत्।

मात्रा १–२ हरीतक्यौ यावत्, सावलेहरसम्।

प्रयोग :—रसायनार्थे, कासे, श्वासे, यक्ष्मणि, हिक्कायां, विषमज्वरे, अर्शःसु, अरुचौ पीनसे च युज्यते। बलप्रदः......वली पलित नाशको भवति।

(शार्ङ्गधर)

अग्निकुमाररसः

पारदः, गन्धकं, वत्सनाभः, टंकणं, शंखभस्म प्रत्येकं १ तोला, वराटिका-भस्म २ तोला, मरिचम् ८ तोला, निम्बुस्वरसस्य ७ भावनाः। (यो. र.)

अग्नितुण्डी वटी

शुद्धपारदः, वत्सनाभः, शुद्धगन्धकः, अजमोदा, हरीतकी, बिभीतकः, आमलकम्, सर्जक्षारः, यवक्षारः, चित्रकः, सैन्धवम्, जीरकम्, सौवर्चलम्, विडङ्गम्, शुण्ठी, मरिचम्, पिप्पली, सामुद्रलवणम् प्रत्येकं १ भागः, विषमुष्टिः १८ भागाः। जम्बीराम्लेन मर्दयेत्। मात्रा २–४ गुंजाः। (शा. सं.)

अभयादिक्वाथः

अभया, मुस्ता, धान्यकम्, रक्तचन्दनम्, पद्मकम्, वासा, इन्द्रयवः, उशीरः, गुडूची, कृतमालः, पाठा, शुण्ठी, तिक्ता, पिप्पली प्रत्येकं १ भाग। मात्रा २–४ कर्षाः। (शा. सं.)

अभयारिष्टः

पिप्पली, मरिचम्, विडङ्ग, एलवालुकम्, लोध्रः प्रत्येकं ८ भागाः इन्द्रवारुणी २० भागाः, कपित्थगर्भः ४० भागाः, हरीतकी ३२ भागाः, आमलकम् ६४ भागाः, जलम् ४०१६ भागाः।

क्वाथः कार्यः। पादावशेषम् परिस्रावयेत्।

गुडः......८०० भागाः।

घृतलिप्ते भाजने निक्षिप्य यवपल्ले पक्षम् उपेक्षेत।

मात्रा १–२ कर्ष। (सु. चि. अ. ६)

अमीररस

रसकर्पूरं, हिंगुलं, दालचिकना, रजतसूत्रं प्रत्येकं १ तोला।

अमृतप्राशः

द्रव्याणि :—क्षीरम्, धात्रीरसः, विदारीरसः, इक्षुरसः, क्षीरिवृक्षकषायः, घृतम् प्रत्येकं ६४ तोला।

कल्कद्रव्याणि :— मधुकम्, इक्षु, द्राक्षा, श्वेतचन्दनम्, रक्तचन्दनम्, उशीरम्, शर्करा, उत्पलम् पद्मकम्, मधूकम, धातकीकुसुमं, अनन्तमूलम्, काश्मरी, भूस्तृणम् प्रत्येकम् १ तोला।

विधि :—एतैः द्रव्यैः घृतं पाचयेत्, तस्मिन् शीते मधुनः १२४ तोलकान्, शर्करायाः ४०० तोलकान्, त्वकचूर्णम्, एलाचूर्णम्, तमालचूर्णम्, नागकेसरम प्रत्येकं २ तोला प्रक्षिपेत।

सर्वम् आलोड्य खादेत। क्षीरमांसाशी स्यात्।

मात्रा १–२ तोला यावत्।

प्रयोग :—रक्तपित्तं, क्षतक्षयं, उरःक्षतं, तृष्णां, श्वासं, हिक्कां छर्दिं, मूत्रकृच्छ्रं नाशयति; बल्यं, स्त्रीरतिवर्धनम् च।

अमृतारिष्टः

अमृता ४०० भागाः, दशमूलक्वाथः ४०० भागाः, जलम् ४०९६ भागाः।

क्वाथः कार्यः। चतुर्थांशम् अवशेषयेत॥

प्रक्षेपद्रव्याणि :—गुडः १२०० भागाः, कृष्णश्वेतजीरकम् ६४ भागाः, पर्पटकः ८ भागाः, सप्तपर्णः, शुण्ठी, मरीचम्, पिप्पली, मुस्ता, नागकेशरम्, मत्स्या, अतिविषा, इन्द्रयवः प्रत्येकम् ४ भागाः। विधिवत् साधयेत्।

मात्रा १–२ कर्षः। (भा. भै. र.)

अरविन्दासवः

अरविन्दम्, उशीरम्, काश्मरी, नीलमुत्पलम्, मंजिष्ठा, एला, बला, मांसी, मुस्ता, सारिवा, शिवा, बिभीतकं, वचा, आमलकम्, शठी, श्यामा,

नीलिनी, पटोलः, पर्पटः, अर्जुनः, मधूकः, मधुकम् , मुरामांसी प्रत्येकं १ भागः, द्राक्षा २० भागाः, धातकी १६ भागाः, जलम् २०४८ भागाः, शर्करा १०० भागाः, मधु ५० भागाः । मासं मृदभाण्डे स्थापयेत् । मात्रा ०।।–१ कर्षः

अर्कलवणः

अर्कपत्रं, सैन्धवम् प्रत्येकम् १ भाग. ।

मृत्पात्रे निधाय पुटम् दद्यात् । मात्रा ०। कर्षः ।

अर्जुनारिष्टः (पार्थाद्यरिष्टः)

अर्जुनत्वक् ४०० भागाः, द्राक्षा २०० भागाः, मधूकपुष्पम् ८० भागाः, जलम् ४०९६ भागाः ।

क्वाथः कार्यः । चतुर्थांशम् अवशेषयेत् ।

प्रक्षेपद्रव्याणि :— धातकीपुष्पम् ८० भागाः, गुडः ४०० भागाः ।

घृतलिप्ते भाण्डे मासमेकम् स्थापयेत् । मात्रा १–२ कर्षः । (भै. र.)

अर्शोघ्नी वटी

निम्बफलमज्जा २ भागौ, महानिम्बफलमज्जा (बकायन) २ भागौ, खूनखराबा (दमउलअखवेन) २ भागौ, तृणकान्तपिष्टि (कहेरबा) ११ भागाः, रसांजनं ६ भागाः ।

गुलाबजलेन चन्दनार्केण वा मर्दयेत् । वल्लमात्रा गुटिका कार्या । मात्रा २–४ वल्लः । (सि. यो. सं.)

अविपत्तिकरचूर्णम्

शुण्ठी, मरिचम् , पिप्पली, हरीतकी, बिभीतकम, आमलकम् , मुस्ता, बिड्लवणम् , विडंगम, एला, पत्रम् प्रत्येकं १ भागः, लवङ्गकुसुमम् ११ भागाः, त्रिवृत् २२ भागाः, शर्करा ४४ भागाः ।

मात्रा ०।।–१ कर्षः । (भै. र.)

अश्वकंचुकीरसः

पारदः, गन्धकं, वत्सनाभः, टंकणम् , हरितालम् , शुण्ठी, मरिचम् , मागधी, हरीतकी, बिभीतकं, आमलकं प्रत्येकं १ तोला, जयपालः ११ तोला, भृंगराजस्वरसस्य २१ भावनाः । (र. री. सु.)

अश्वगंधादिघृतम्

द्रव्याणि :— अश्वगंधा, विदारी, शतावरी, गोक्षुरः, आमलकी, यष्टिमधु, पुनर्नवा, उशीरः, तृणपंचमूलम् , एरण्डमूलम् , निम्बुकरसः, घृतम प्रत्येकं २४ भागाः ।

विधि :– घृतम् यथाविधि पाचयेत्। मात्रा १–४ कर्षाः दुग्धेन।

प्रयोग :– कार्श्ये, बालशोषे, हृद्रोगे, शुक्रक्षये। (भै. र.)

द्वितीयः पाठः

अश्वगंधाकल्कः ३२ तोला, गोदुग्धम् ४ प्रस्थाः, गोघृतम् २ प्रस्थौ, जलम् ८ प्रस्थाः।

विधि :—यथाविधि......पाच्यम्।

प्रयोग :— बालानां कार्श्ये। मात्रा २–३ बिन्दवः पानार्थम्।

अश्वगंधारिष्टः

अश्वगंधा २०० भागाः, मुषली ८० भागाः; मंजिष्ठा, हरीतकी, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, मधुयष्टी, रास्ना, विदारी, अर्जुनः, मुस्ता, त्रिवृत प्रत्येकं ४० भागाः; अनन्ता, श्यामा, चन्दनम्, रक्तचन्दनम्, वचा, चित्रकः प्रत्येकम् ३२ भागाः, जलम् ८१९२ भागाः। क्वाथः कार्यः। अष्टमांशम् अवशेषयेत्। पूते शीते प्रक्षपद्रव्याणि प्रदापयेत्।

प्रक्षेपद्रव्याणि :—धातकीपुष्पम् ६४ भागाः, मधु १२०० भागाः, त्रिकटुचूर्णम् ८ भागाः, त्रिजातचूर्णम् १६ भागाः, प्रियंगुः १६ भागाः, नागकेशरम् ८ भागा।

मात्रा १–२ कर्षः। (भै. र.)

अष्टमूर्तिः

शु–पारदः, शु–गन्धकं, शु–हिंगुलं, शु–मनःशिला, शु–मल्लः प्रत्येकं १ तोला, शु–तालः ६ माषाः, शु–रसकर्पूरम् ६ तोला, शु–मृद्दारशृंगः ६ माषाः, स्फटिका-पुष्पं १ तोला, स्वर्णपत्रम् ६ माषाः, रजतपत्रम् ६ माषाः।

वालुकायंत्रे क्रमात् पचेत। मात्रा १–२ गुंजा। अनुपानम् आर्द्रकस्वरसः मधु।

(र. यो. सा.)

अस्थिसंधानकलेपः

ऐलेयम्, हीराबोलं, गुग्गुलुः, रेवंदचीनी, लोध्रम्, सौराष्ट्री, मेदालकडी, आम्रहरिद्रा, स्वर्जिकाक्षारः, मायुफलम् प्रत्येकं १ भाग।

आनन्दभैरवरसः

हिंगुलं, वत्सनाभं, शुण्ठी, मरीचं, मागधी, सौभाग्यं, गन्धकं प्रत्येकम् ५ तोला। जम्बीरस्वरसस्य १ भावना। (भै. र.)

आमराक्षसी

हिंगुलम् , अहिफेनम् , कर्पूरम , जातिफलम् , लवंगम् प्रत्येकम् १ भागः । जलेन मर्दयेत् विजयारसेन वा । मात्रा १–२ गुंजा ।

(वैद्यक चिकित्सासार पूर्वार्द्ध)

आरोग्यवर्धनीरसः

शुद्धपारदः, शुद्धगंधकः, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म प्रत्येकम् १ भागः, अभया, बिभीतकः, आमलकम् (त्रिफला) प्रत्येकम् २ भागौ, शिलाजतु ३ भागाः, शुद्धगुग्गुलुः ४ भागाः, चित्रकमूलत्वक् ४ भागाः, कटुरोहिणी २२ भागाः ।

निम्बपत्ररसेन मर्दयेत् । मात्रा ३–६ गुंजा । (सि. यो. सं.)

आर्द्रकावलेहः

द्रव्याणि :—आर्द्रकम २०० तोला, गुडः २०० तोला, जलम् ८०० तोला ।

प्रक्षेपकल्कद्रव्याणि :—धान्यकम् , मुस्ता, अजमोदा, अगरम् , जीरकम् , त्वक्, तमालम , एला, बालकं प्रत्येकं ४ तोला ।

विधि :—आर्द्रकं खण्डशः कृत्वा जले क्वाथयेत् ; चतुर्थांशशेषे क्वाथे तस्मिन् गुडं दत्त्वा लेहवत् साधयेत् । सुशीते तस्मिन् कल्कं क्षिपेत् ।

प्रयोग :—कास, अर्शो, ज्वर, पीनस, श्वथथु, गुल्म, क्षयहारी ।

मात्रा १ तोला । (यो. र.) (वै. जी.)

इच्छाभेदीरसः

पारदं, गंधकं, सौभाग्यं, शुण्ठी, मरीचं, प्रत्येकम् १ भागः, शुद्धजयपालः ३ भागाः । निम्बुस्वरसस्य १ भावना । (भै. र.)

इरिमेदादि-तैलम्

द्रव्याणि :—इ(अ)रिमेदत्वक्, ४०० तोला, जलम् १०२४ तोला, तैलम् १२८ तोला ।

कल्कद्रव्याणि :—इरिमेदत्वक्, लवङ्गम् , गैरिकम् , अगुरु, पद्मकाष्ठम् , मुस्ता, त्वक् , जातीफलम् , कर्पूरम्, एला, मंजिष्टा, लोध्रम , मधुकम् , लाक्षा, न्यग्रोधत्वक्, कंकोलम् , खदिरत्वक्, पतंगम , धातकीकुसुमम् , नागकेशरम , कट्फलम् ।

विधि :— प्रथमम् अरिमेदत्वचः चतुर्थांश क्वाथम् कृत्वा, वस्त्रपूतम् क्वाथम्, कल्कद्रव्याणाम् कल्कं, तैलं च ऐकध्यं, मृदुवह्निना पाचयेत्।

प्रयोग :—प्रदुष्टमांसं-मुखपाकं, चलितं शीर्णदन्तं, सौशिरम्, शीतादं, दन्तहर्षं, क्रिमिदन्तकम्, जिह्वा-तालु–ओष्ठादिपाकं नाशयति, व्रणानां शोधनं रोपणं च करोति।

मात्रा–गंडूषधारणार्थं १॥ तोला।

लेपनार्थं व्रणे वर्तिदानार्थं च उपयुज्यते। (यो. र.) (भा. प्र.)

उन्मादगजकेशरी

शुद्धसूतं वचाक्वाथैस्त्रिदिनं मर्दयेत्। शंखपुष्पीरसैः तद्वत् गन्धकं मर्दितं क्षिपेत्। गोमूत्रमर्दितं गोलं कृत्वा मूषायां निरोधयेत्, तत्पश्चात् पुटं दद्यात्।

पारदः ५ तोला, गन्धकं ५ तोला।

मात्रा–४ वाल, समसर्षपचूर्णकम्।

अथवा

पारदः, गन्धकं, मन शिला, कनकबीजं प्रत्येकं ५ तोला, वचायाः ७ भावना, ब्राह्मयाः ७ भावनाः।

मात्रा १ गुंजा घृतेन।

उशीरासवः

उशीरम्, बालकम्, श्वेतपद्मम्, काश्मरी, नीलोत्पलम्, प्रियंगुः, पद्मकाष्ठं, लोध्रः, मंजिष्ठा, धन्वयासकम्, पाठा, किराततिक्तम्, वटत्वक्, उदुम्बरत्वक्, शठी, पर्पटः, पटोलः, काञ्चनारः, जम्बूत्वक्, शाल्मलीनिर्यासः प्रत्येकं ४ भागाः, द्राक्षा ८० भागाः, धातकी ६४ भागाः, जलम् २०४८ भागाः, शर्करा ४०० भागाः, मधु २०० भागाः। विधिवत् साधयेत्। मात्रा १–२ कर्षः।

एकांगवीररसः

गन्धकं, रससिन्दूरं, कान्तलोहभस्म, वंगभस्म, नागभस्म, ताम्रभस्म, अभ्रकभस्म, तीक्ष्णलोहभस्म, शुण्ठी, मरीचं, मागधी प्रत्येकं १ भागः।

त्रिफला, त्रिकटु, निर्गुण्डी, चित्रकं, आर्द्रकं, शि, कुष्ठं, आमलकं, विषतिन्दुकं, अर्कः, कनकपत्रम् प्रत्येकं ३ भावनाः।

एलादिगुटिका

एला, पत्रम्, त्वक् प्रत्येकं १ भागः, पिप्पली ४ भागाः, शर्करा, मधुयष्टी, खर्जूरं, द्राक्षा प्रत्येकं ८ भागाः। मधुना गुटिका कार्या। मात्रा १–८ गुटिकाः।

(चरक चि. अ. ११)

एलादिघृतम् (रसायनम्)

द्रव्याणि :—सूक्ष्मैला, अजमोदा, हरीतकी, बिभीतकं, आमलकं, मरीचं, शुण्ठी, सुराष्ट्रजा, पिप्पली, चित्रकमूलं, खदिरसारः, विजयसारः निम्बत्वक्, सालसारः, भल्लातकं, विडङ्गम्, वचा, नागरमुस्ता प्रत्येकम् १६ तोला।

विधि :—सर्वम् कुट्टयित्वा...अष्टगुणे अंभसि चतुर्थांश शेषं क्वाथयित्वा, वस्त्रपूतं क्वाथं गृहीत्वा, वंगोपलिप्ते कटाहे क्वाथं १२८ तोलकप्रमाणं घृतं च सिद्धम् कृत्वा तस्मिन्–

वंशरोचना २४ तोला, शर्कराचूर्ण १२० तोला, एलाचूर्ण ४ तोला, त्वक्चूर्ण ४ तोला, तमालपत्रम् ४ तोला, मधु २५६ तोला संमेल्य खजेन एकरसं कृत्वा सुष्ठु रक्षयेत् घृतलिप्ते भाण्डे।

प्रयोग :—क्षये–क्षतजकासे, क्षयजकासे, उरःक्षते, बालशोषे, राजयक्ष्मणि, कार्श्ये, मांसक्षये च। मात्रा १–२ तोला दुग्धेन सह। (सुश्रुत)

कट्फलादिचूर्णम्

कट्फलम्, मुस्ता, तिक्ता, शुण्ठी, शृंगी, पुष्करमूलम् प्रत्येकं १ भागः।

मात्रा–०। कर्षः। (शा. सं.)

कनकारिष्टः

आमलकम् ४०० भागाः, पिप्पली, मरिचम्, विडंगः प्रत्येकं १६ भागाः, पाठा, पिप्पलीमूलम्; क्रमुकः, चव्यम, चित्रकः, मंजिष्टा, एलवालुकम्, लोध्रः प्रत्येकं ४ भागाः, कुष्टम्, दारुहरिद्रा, देवदारु, अनन्ता, श्यामा, इन्द्रवारुणी, भद्रमुस्तम प्रत्येकं २ भागौ, नागपुष्पम् १६ भागाः, जलम् ८१९२ भागाः।

क्वाथः कार्यः। पादावशेषे पूते च शीते तस्मिन् प्रदापयेत–

द्राक्षाक्वाथः ५१२ भागाः, शर्करा ८०० भागाः, मधु ३२ भागाः, त्वक् १ भागः, एला १ भागः।

तत् सर्वम् सुचोक्षे घृतलिप्ते अगुरुधूपिते पात्रे पक्षम् स्थापयेत्।

मात्रा १–२ कर्षः। (चरक चि. अ. १४)

कन्यालोहादि गुटिका

ऐलेयकः, कासीसम, त्वक्, एला शुण्ठी, गुलकन्द।

वल्लमात्रा गुटिका कार्या। मात्रा — ३–६ वल्लः।

कफकेतुरसः

शंखभस्म, शुण्ठी, मरीचं, पिप्पली, सौभाग्यं प्रत्येकं १ तोला, वत्सनाभः ५ तोला। आर्द्रकस्वरस भावनाः ३।

करवीरतैलम्

द्रव्याणि :— करवीरपत्रम्, निशा, दन्तीमूलं, लाङ्गलीमूलं, सैन्धवं, चित्रकं, मातुलुङ्गम्, अर्कदुग्धं प्रत्येकं १ तोला, जलं १२८ तोला, तैलम् ३२ तोला।

विधि :— द्रव्याणां कल्कं विधाय तैलं पाचयेत्।

प्रयोग :—अभ्यंगार्थं, वर्तिदाने च। भगंदरे, उपदंशे, कुष्ठे च शोधनं रोपणं च भवति। (यो. र.)

कर्णानंदतैलम्

तिलतैलम् २० शेर, अपामार्गस्वरसः १० शेर, निम्बपत्रकल्कः ४ शेर, दारुहरिद्रा, दशमूलक्वाथः, यष्टिमधु, शतपुष्पा, शिग्रुत्वक्, रसवन्ती, कुष्ठं, वचा, देवदारु प्रत्येकं २० तोला। तैलविधिना पाचयेत्।

कर्पूररसः

कर्पूरं, हिंगुलं, अहिफेनं, मुस्ता, शक्रयवः, जातिफलम् प्रत्येकम् १ भागः। आर्द्रकरस-भावना।

कर्पूरासवः

मद्यम् १०० भागाः, कर्पूरम् ८ भागाः, एला, मुस्ता, शुण्ठी, अजमोदा, विडंगः प्रत्येकम् १ भागः।

काचभाण्डे मासमेकम् निधाय वस्त्रपूतम् प्रयोजयेत्।

मात्रा—१०–२० बिन्दवः। (भै. र.)

कल्पतरुरसः

पारदं, गन्धकं, वत्सनाभः, मनःशिला, रौप्यमाक्षिकं, सौभाग्यं, शुण्ठी, प्रत्येकम् १ तोला, मरिचं १० तोला, पिप्पली २ तोला। (भावप्रकाश)

कल्याणवटकाः

द्राक्षा ५ तोला, हरीतकी ५ तोला। आमलक प्रमाणान् वटकान् कारयेत्।

मात्रा—१–२ वटकाः। अनुपानम् जलम्।

कस्तूरीभैरवः

शुद्ध हिंगुलं, शुद्ध वत्सनाभं, सौभाग्यं, जातिफलं, जातिपत्री, मरीचं, कस्तूरी, कर्पूरं प्रत्येकं १ तोला, ताम्बूलरसस्य १ भावना।

मात्रा १–२ गुंजा। ताम्बूलरसेन।

कंटकारीलवणः

कंटकारीपंचांगं १ भागः, सैन्धवम १ भागः। मृत्पात्रे निधाय पुटं दद्यात्।

मात्रा – १/४ कर्षः।

कंटकार्यवलेहः

द्रव्याणि :—कंटकारीपंचांगं ४०० तोला, जलं १०२४ तोला।

१/४ क्वाथं कृत्वा वस्त्रपूतं कारयेत्। तस्मिन् गुडूचीचूर्णं, चव्यं, चित्रकं, मुस्ता, कर्कटशृंगी, त्र्यूषणं, धन्वयासः, भार्ङ्गी, रास्ना, शठी प्रत्येकं ४ तोला, शर्करा ४० तोला, घृतं ३२ तोला, तैलं ३२ तोला क्षिप्त्वा लेहवत् पक्त्वा शीते तस्मिन् मधु ३२ तोला, तुगाक्षीरी १६ तोला, पिप्पली १६ तोला प्रक्षिप्य मृद्भाजने निदध्यात्।

प्रयोग :—कासं, हिक्कां, पार्श्वशूलं, श्वासं च हरति।

मात्रा—१–२ तोला यावत्।

काञ्चनारगुग्गुलुः

काञ्चनारत्वक् ४० भागाः, त्रिफलाचूर्णं २४ भागाः, त्रिकटुचूर्णं १२ भागाः, वरुणत्वक् ४ भागाः, एला, त्वक्, पत्रकं प्रत्येकं १ भागः, शुद्ध गुग्गुलुः ८३ भागाः घृतेन पिण्डीकृत्य शाणमात्रा गुटिका कार्या। घृतपात्रे धारयेत्।

मात्रा—२–६ गुटिकाः। (शा. सं.)

कामदुघारसः

मुक्तापिष्टिः, प्रवालपिष्टिः, शुक्तिभस्म, कपर्दिकाभस्म, शंखभस्म, सुवर्णगैरिकं, अमृतासत्वं प्रत्येकं २ तोला। मात्रा—१–३ गुंजा।

जीरक शर्कराभ्यां वा आमलकघृताभ्याम्। (र. यो. सा.)

कालकचूर्णम्

गृहधूमं, ताक्ष्यं, पाठा, शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली, यवक्षारम् , चित्रकं, अगुरु, हरीतकी, बिभीतकः, आमलकः, तेजोह्वा प्रत्येकं १ भागः।

मुखदन्तगलविकारे सक्षौद्रं मुखेन धारयेत्। (चरक चि. २६)

कासीसादितैलम्

कासीसं, सैन्धवं, कृष्णा, शुण्ठी, कुष्ठं, लाङ्गली, स्वर्णक्षीरी, शिलाभिद्, अश्वमारः, दन्ती, विडंगं, चित्रकं, तालकं, मनःशिला, एषां कल्कः, अर्कपत्रं, स्नुहीपयः प्रत्येकं ३ तोला।

विधि:—तिलतैलं...१६० तोला गोमूत्रं...६४० तोला सर्वम्...एकत्र कृत्वा तैलं पाचयेत्।

प्रयोग:—अभ्यंगार्थं एव युज्यते अर्शसां, व्रणानां, नाडीव्रणानां च क्षार-कर्मकरम। अर्शांसि शातयति। (शार्ङ्गधरः, भै. र.)

कुटजघनवटी

कुटजत्वक् १०० भागाः, जलं १६०० भागाः।

क्वाथः अष्टमांश शेषः; घनक्रिया।

प्रक्षेपद्रव्यम् :— अतिविषा......वटीनिर्माणे यथावश्यकम्। चणकप्रमाणा वटी कार्या। मात्रा—४–८ वटिकाः। (सि. सं.)

कुटजादिवटी

कुटजत्वक्, मायुफलं, लवंगम , कर्कटशृंगी, बिभीतकमज्जा, विडंगं, बिल्वफलमज्जा, जातिफलं, शुण्ठी, मरिचं, जातिपत्री, नागकेशरम् प्रत्येकं १ भागः। गुंजाभा गुटिका कार्या। मात्रा—२–४ वट्यः। (वै. चि.)

कुटजारिष्टः

कुटजमूलम् ४०० भागाः, द्राक्षा २०० भागाः, मधूकपुष्पं ४० भागाः, काश्मरी ४० भागाः, जलम् ४०९६ भागाः। क्वाथः, चतुर्थांश शेषः। धातकी-पुष्पम् ८० भागाः, गुडः ४०० भागाः।

विधिवत् साधयेत्। मात्रा १–२ कर्षः। (शा. सं.)

कुटजावलेहः

कुटजत्वक्चूर्णम् ४०० तोला, जलं १६०० तोला।

पादशेषः क्वाथः कार्यः......तस्मिन्......गुडं २०० तोला प्रक्षिप्य अवलेहः कार्य......शीते तस्मिन्—

रसवंती, मोचरसः, शुण्ठी, पिप्पली, मरिचं, बालकं हरीतकी, बिभीतकं, आमलकं, लज्जालुः, चित्रकमूलं, अतिविषा, पाठामूलं, बिल्वफलं, वचा, इन्द्रयवः, भल्लातकं, विडंगं प्रत्येकं ४ तोला।

इत्येषां चूर्णं...प्रक्षिपेत्। मधु च तोला ३२ प्रक्षिपेत्।

प्रयोग :—अर्शःसु, अतिसारे, अरुचौ, ग्रहण्यां, आमातिसारे, पाण्डुरोग–रक्तपित्ताम्लपित्तेषु, कार्श्ये, शोथे, सुधातत्त्वक्षये च।

मात्रा—०॥–१ तोला दिने द्विःकृत्वः। अनुपानं तक्रं दुग्धं, जलं घृतं वा। (नि. र.)

कुमारकल्याणरसः

रससिंदूरं, मुक्ताभस्म, सुवर्णभस्म, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, सुवर्णमाक्षिकभस्म प्रत्येकं १ भागः।

कुमारीस्वरसस्यः भावना १। (भै. र.)

कुमार्यासवः

कुमारीरसः १०२४ भागाः गुडः ४०० भागाः, हरीतकीक्वाथः २५६ भागाः, (हरीतकी १०० भागाः, जलम् १०२४ भागाः), मधु २५६ भागा, धातकीपुष्पं ६४ भागाः, जातिफलं, लवंगं, कंकोलं, जटामांसी, चव्यं, चित्रकः, जातिपत्रं, कर्कटशृंगी, बिभीतकं, पुष्करमूलं प्रत्येकं ४ भागाः, लोहभस्म २ भागौ, ताम्रभस्म २ भागौ।

विधिवत् साधयेत्। मात्रा १–२ कर्षः। यो र.)

कूष्मांडावलेहः

एकं पक्वं कूष्मांडं गृहीत्वा तस्य गर्भं, कुट्टितं निष्पीडितं आतपे शोषयेत्। तस्य चूर्ण–तोला ५ घृतेन भृष्ट्वा स्थापयेत्। तस्यैव गर्भपीडनात् लब्धेन कूष्मांड-रसेन, ८० तोला शर्कराचूर्णं संमेल्य–अवलेहपाकं कृत्वा पूर्वं भृष्टं कूष्मांडचूर्णं दापयेत्। गुडपाकसमं ज्ञात्वा तस्मिन् निम्नानां प्रक्षेपः कार्यः—

त्वकचूर्णं, तमालपत्रं, एला, नागकेसरं, वंशरोचना, पिप्पली, लवंगं, जातीफलं, जातीपत्रं, कमलबीजं, धान्यकं, शुण्ठी प्रत्येकं १। तोला, मधु २० तोला।

प्रयोग :—रक्तपित्तं, दाहं, भ्रमं, अम्लपित्तं, शोषं, यक्ष्माणं, जीर्णज्वरं, कासं, गलरोगान् च नाशयेत्।

मात्रा—१–२ तोला, दुग्धेन। (भै. र.)

कृमिकुठाररसः

कर्पूरं ८ तोला, शक्रयवः, त्रायमाणं, अजमोदा, विडंग; शुद्ध हिंगुलं, वत्सनाभं, केशरं प्रत्येकं १ तोला, पलाशबीजचूर्णं १५ तोला ।

भृंगराजस्वरसस्य १ भावना, आखुकर्णीरसस्य १ भावना, ब्राह्मीरसस्य १ भावना ।

(र. रा. सु)

कृमिमुद्गररसः

पारदः १ तोला, गंधकं २ तोला, अजमोदा ३ तोला, विडंगं ४ तोला, विषतिन्दुकं ५ तोला, पलाशबीजं ६ तोला ।

(र. रा. सु.)

केशरादिवटी

कुंकुमं, रसकर्पूरं, शर्करा, श्वेतचन्दनं, लवंगं, जातिपत्री प्रत्येकं १ भागः ।

गुंजाप्रमाणा गुटिका कार्या । मात्रा—१ २ गुटी (र. यो. सा.)

कैशोरगुग्गुलुः

त्रिफलाचूर्णं १९२ भागाः, गुडूची ६४ भागाः, जलं २०४८ भागाः ।

क्वाथः कार्यः अर्धांश शेषः । वस्त्रपूते क्वाथे गुग्गुलुं पचेत् । अयःपात्रे दर्व्या संघर्षयेत् । शुद्ध गुग्गुलुः ६४ भागाः ।

प्रक्षेप द्रव्याणि :—त्रिफलाचूर्णं ६ भागाः, त्रिकटुः ६ भागाः, विडंगं २ भागौ, दन्ती १ भागः, त्रिवृत् १ भागः, गुडूची ८ भागाः ।

घृते पिण्डीकृत्य घृतपात्रे विनिक्षिपेत् । शाणमात्रा गुटिका कार्या ।

मात्रा—२–८ गुटिकाः । (शा. सं.)

कोषातक्यादितैल

तिलतैलं २ प्रस्थौ, कल्कार्थ—तिक्तकोशातकी बीजानि ११ तोला, कटुतुम्बीबीजानि ११ तोला, शुण्ठी ११ तोला, जलं ८ प्रस्थाः ।

विधि :—सर्वं एकत्र्यं कृत्वा तैलं विपाचयेत् गालयेत् च ।

प्रयोग :—अभ्यंगात् वर्त्यादि दानाच्च दुष्टं व्रणं नाशयति ।

(भै. र. आर्यभिषक्)

क्रव्यादरसः

गंधकं ८ तोला, पारद ४ तोला, ताम्रभस्म २ तोला, लोहभस्म २ तोला।

पर्पटीं कृत्वा ४०० तोलके निम्बुस्वरसे पाचनम्।

पंचकोल, जम्बीर, अम्लवेतस एषां १०० पलमितेन रसेन भावना।

सौभाग्यं सर्वतुल्यं, बिड्लवणं सौभाग्यार्धं, मरिचं, बिड्लवणार्धं। सर्वम् एकीकृत्य चणकाम्लस्य सप्त भावनाः। (र. रा. सु.)

खदिरघृतम् (महत्)

खदिरत्वक्चूर्णं ५ तोला, शिंषपाचूर्णं १ तोला, असनचूर्णं १ तोला, करंजत्वक्, अरिष्टत्वक्, वेतसं, पर्पटं, कुटजः, आटरुषकः, विडंगं प्रत्येकं १२॥ तोला, हरिद्रे द्वे २५ तोला, कृतमालकं १२॥ तोला, गुडूची १२॥ तोला, त्रिफला ७॥ तोला, त्रिवृत् १२॥ तोला, सप्तपर्णं १२॥ तोला।

सर्वम् संक्षुण्णं दशद्रोणे (१०२४० तोला) वारिणि क्वाथयित्वा १/८ शेषं वस्त्रपूतं कृत्वा धात्रीरसं तुल्यांशं सर्पिशश्च आढकं दत्वा पचेत् निम्नोक्तानां कल्कानावाप्य पलसंमितान्–

सप्तच्छद, प्रतिविषा, शम्याक, कटुरोहिणी, पाठा, मुस्ता. उशीर, त्रिफला, पटोल, पिचुमन्द, पर्पट, धन्वयवास, चन्दन, पिप्पली, पद्मकाष्ठ, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, वचा, इन्द्रवारुणी, शतावरी, सारिवा, कृष्णसारिवा, इन्द्रयवः, वासा, मूर्वा, अमृता, किराततिक्त।

मात्रा १–४ तोला यावत्। पानाभ्यंगात् कुष्ठं हन्ति। (यो. र.)

खदिरादिगुटिका

खदिर ३२ भागाः; कमलं, कर्कटशृंगी, कट्फलं, मधुयष्टी, हरीतकी, लवंगं, शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली, अतिविषा, कारवी, यासं, अमृता, बृहती कण्टकारिका, बिभीतक प्रत्येकं २ तोला।

दाडिमत्वक्रसैः बब्बूलत्वक्दलरसै वासारसैः च बहुशः भावयेत्।

गुंजामात्रा गुटिका कार्या। (यो. र.)

खदिरारिष्टः

खदिरत्वक् २०० भागाः, देवदारु २०० भागाः बाकुची ४८ भागाः, दार्वी ८० भागाः, त्रिफला ८० भागाः, जलं ८१९२ भागाः।

क्वाथः अष्टमांश शेषः।

प्रक्षेपद्रव्याणि :—मधु ८०० भागाः, शर्करा ४०० भागाः, धातकीपुष्पं ८० भागाः, कंकोलं, नागकेशरं, जातीफलं, लवंगं, एला, त्वक्, तमालपत्रं प्रत्येकं ४ भागाः, पिप्पली १६ भागा ।

विधिवत् साधयेत् । मात्रा १–२ कर्षः । (भै. र.)

गर्भपालरसः

शुद्ध हिंगुलं, नागभस्म, बंगभस्म, त्वक्, तेजबलं, एला, शुण्ठी, मरिचं, कणा, धान्यकं, कृष्णजीरकं, चव्यं, द्राक्षा, देवदारु प्रत्येकं १ तोला, लोहभस्म २ तोला ।

विष्णुक्रान्तायाः सप्त भावना । (र. चं.)

गण्डमालाकण्डनरसः

पारदः, १ तोला, गंधकं २ तोला, ताम्रभस्म, ३ तोला, मण्डूरभस्म ३ तोला, शुण्ठी २ तोला, मरिचं, २ तोला, मागधी २ तोला, सैन्धवं ०॥ तोला, काञ्चनारत्वक् १५ तोला, शुद्ध गुग्गुलुः १५ तोला ।

गोघृते वटिकां कारयेत् । (यो. र.)

गंधकरसायनम्

शुद्ध गंधकं ४० तोला, गोदुग्धस्य ३ भावना, त्वक्, तमालपत्रं, नागकेशरं, एला, गुडूची, पथ्या, अक्षं, धात्री, शुण्ठी, भृंगराजः आर्द्रकं प्रत्येकं ८ भावनाः ।

सिद्धे तुल्यभागा सिता । (यो. र.)

गृहधूमादितैलम्

गृहधूमः, कणा, देवदारु, अपामार्गक्षारः, करंजबीजं, अपामार्गबीजानि प्रत्येकं १ तोला तिलतैलं २४ तोला, जलं ९६ तोला ।

यथाविधि पाचयेत् । पीनसे नासार्शसां च नस्यार्थे हितम् ।

ग्रहणी कपाटरसः

पारदः, २ तोला, गंधकं १० तोला, वत्सनाभं १ तोला, अहिफेनं ४ तोला, कपर्दिका ७ तोला, मरिचं, ८ तोला, कनकबीजं २० तोला ।

केचन पोसडोडायाः भावनात्रयं व्याख्यानयन्ति ॥

(र. रा सु.) (र. चं.) (र. का.)

ग्रहणीगजकेसरीरसः

शु–गन्धकं, शु–पारदः, अभ्रकभस्म, जातिफलं, लोहभस्म, बिल्वं, मोचरसः, वत्सनाभः, अतिविषा, शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली, धातकीपुष्पं, विजया, हरीतकी, कपित्थं, मुस्ता, अजमोदा, चित्रकं, दाडिमं, टंकणं, शक्रयवः, कनकबीजं, सर्जरसः प्रत्येकं १ तोला, अहिफेनं ०। तोला । कनकस्वरसस्य भावना ।

मात्रा–२ गुंजा । अनुपानं–जातिफलजलम् । (यो. र.)

गोक्षुरादिगुग्गुलुः

गोक्षुरः ११२ भागाः, जलम् ६७२ भागाः ।

क्वाथः कार्यः । अर्धांश शेषः । वस्त्रपूते क्वाथे गुग्गुलुम् पचेत् । गुग्गुलुः २८ भागाः ।

प्रक्षेपद्रव्याणि— त्रिकटु ३ भागाः, त्रिफला ३ भागाः, मुस्ता १ भागः ।

घृतेन पिण्डीकृत्य गुटिका कार्या । मात्रा —४–८ गुटिकाः । (शा. सं.)

गोजिह्वादिक्वाथः

गावजबान, मुलेठी, सौंफ, मुनक्का, अंजीर, उन्नाब, वासा, जूफा, सपिस्तान, खूबकलां, हंसराज, गुलबनफशा, अलसी, खतमीकी जड़, कंटकारी प्रत्येक १ तोला, मरिच ०।। तोला । मात्रा —१ तोला । (सि. यो. सं.)

चन्दनादिचूर्णम्

चन्दनं, शाल्मलीपुष्पं, त्वक्, एला, पत्रं, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, अनन्ता, सारिवा, मुस्ता, उशीरम्, यष्टिमधु, आमलकं, मुशली, वंशलोचनं, भार्गी, देवदारु, हरीतकी प्रत्येकं १ भागः, लोहभस्म ३६ भागाः । मात्रा—४–८ गुंजाः । (भै. र. प्रमेहाधिकारः)

चंदनादितैलम्

चन्दनं, मुस्ता, नखं, दारुहरिद्रा, यष्टिमधु, शिलापुष्पं, पद्मकं, मंजिष्ठा, सरलनिर्यासः, देवदारु, शुण्ठी, एला, जातिः, नागकेसरम्, तमालपत्रं, बिल्वमज्जा, उशीरम्, कंकोलं, चन्दनं, बालकं, हरिद्रा, सारिवा, तिक्ता, लवंगम् अगुरु, केसरम्, त्वक्, रेणुका, नलिका प्रत्येकं १ भागः; तैलं १२० तोला, दधिमस्तु च १२० तोला, वारि ३६० तोला ।

विधिः—चन्दनादि द्रव्याणां कल्कं कृत्वा ततः तैलमस्तुवारिभिः तैलं पाचयेत् ।

प्रयोग :—ग्रहपीडां, अपस्मारम्, दाहं, पित्तज्वरम्, उन्मादं, अलक्ष्मीं, रक्तपित्तं, यक्ष्माणं च नाशयति। आयुः पुष्टिकरम्, बलवर्णकृत् च। मात्रा— पानार्थं १–२ तोला; अभ्यंगार्थं च उपयुज्यते। (चरक; यो. र.)

चन्दनासवः

चन्दनं (श्वेतं), उशीरम्, गम्भारी, नीलोफर, पद्मकं, लोध्रं, प्रियंगुः, मंजिष्ठा, रक्तचन्दनं, कटुकी, किरातः, वटजटा, मागधी, कर्चूरः, पर्पटः, यष्टिमधु, श्वेतरास्ना, कटुपटोलं, कांचनारत्वक्, आम्रत्वक्, मोचरसः, दारुहरिद्रा, हरिद्रा, शतावरी, वरुणत्वक्, पाषाणभेदः, अनंतमूलं प्रत्येकं १० तोला, द्राक्षा ५ शेर, शर्करा ३० शेर, धातकीपुष्पं ४ शेर। (भै. र.)

चन्द्रकलारसः

पारदः, ताम्रभस्म, अभ्रकभस्म प्रत्येकं १ तोला, शुद्ध बलिः ६ तोला, दाडिमस्वरसः, दूर्वास्वरसः, केतकीस्वरसः, सहदेवीस्वरसः प्रत्येकं १ भावना। (र. र. स.)

चन्द्रप्रभावटी (चन्द्रप्रभागुग्गुलः)

चन्द्रप्रभा (कर्पूरः वा शठी), वचा, मुस्ता, भूनिम्बः, गुडूची, देवदारु, हरिद्रा, अतिविषा, दार्वी, पिप्पलीमूलं, चित्रकः, धान्यकं, हरीतकी, बिभीतकः, आमलकं, चव्यं, विडंगं, गजपिप्पली, शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली, स्वर्णमाक्षिकं, स्वर्जिकाक्षारः, यवक्षारः, सैन्धवं, सौवर्चलं, बिडं प्रत्येकं १ भागः, त्रिवृत्, दन्ती, पत्रकं, त्वक्, एला, वंशलोचनः प्रत्येकं ४ भागाः, लोहभस्म ८ भागाः, शर्करा १६ भागाः, शिलाजतु ३२ भागाः, गुग्गुलुः ३२ भागाः।

मात्रा—४–१२ गुटिका। (शा. सं.)

चन्द्रामृतरसः

शुण्ठी, मरिचम्, पिप्पली, हरीतकी, बिभीतकं, आमलकं, चव्यं, धान्यकं, जीरकं, सैन्धवं, पारदः, गन्धकं, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, प्रत्येकं १ भागः, सौभाग्यं ८ भागाः, वासापत्ररसस्य ३ भावनाः। (भै. र.)

चन्द्रामृतावटी

अभया (शिवा), हरीतकी, मत्स्या, इन्द्रवारुणीमूलं, चक्रमर्दबीजम्, कंकुष्ठः, कालादाना, शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली, बिभीतकं, मार्कंडी, त्रिवृत्, इन्द्रयवः, ऐलेयकः, आमलकम्।

वल्लमात्रा गुटिका कार्या। मात्रा—२–४ वटी। (आयुर्वेद निबन्धमाला)

चन्द्रोदयरसः (वटी)

सुवर्णभस्म १ तोला, मकरध्वजः, कर्पूरं, लवङ्गम्, केशरं, जातिफलं प्रत्येकं ८ तोला, कस्तूरी १ तोला। मात्रा—३–६ गुंजाः। प्रातः सायं।

अनुपानं—ताम्बूलस्वरसः वा आर्द्रकस्वरसः मधुना।

चविकासवः

चव्यं २०० भागाः, चित्रकं १०० भागाः, बाष्पिका (डीकामाली) ४० भागाः, पुष्करमूलं, वचा, हपुषा, शठी, पटोलमूलं, हरीतकी, बिभीतकः, आमलकं यवानी, कुटजत्वक्, विशाला (इन्द्रवारुणिका), धान्यकं, दन्ती, रास्ना प्रत्येकं ४० भागाः, विडंगं, मुस्ता, मंजिष्ठा, देवदारु, शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली प्रत्येकं २० भागाः, जलं ८१९२ भागाः; अष्टमांशं अवशेषयेत् (१०२४)।

प्रक्षेप द्रव्याणि :—गुडः ३०० भागाः, धातकी ८० भागाः, त्वक्, तमालपत्रं, एला, नागकेशरं प्रत्येकं ८ भागाः, लवंगं, शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली, कंकोलं प्रत्येकं ४ भागाः। विधिवत् साधयेत्। मासमेकं घृतभाण्डे निदध्यात्।

प्रातः चतुष्पलां मात्रां पिबेत्। (गदनिग्रहः)

चाङ्गेर्यादिघृतम्

नागरम्, पिप्पलीमूलं, चित्रकं, हस्तिपिप्पली, श्वदंष्ट्रा, पिप्पली, धान्यं, बिल्वं, पाठा, यमानिका प्रत्येकं १॥ तोला, एषां कल्कः कुडवः, चाङ्गेरी स्वरसः ८ प्रस्थं, दधि ८ प्रस्थं, घृतं २ प्रस्थम्।

विधि :—नागरादीनां कल्कैः घृतं पाचनीयम्।

प्रयोग :—ग्रहणी–प्रवाहिका–अर्शोगुदभ्रंश रोगेषु। मात्रा—०॥ तोला

(चरक, भै. र.)

चिञ्चाभल्लातकवटी

चिञ्चा, भल्लातकः प्रत्येकं १ भागः।

बदराकारा वटिका कार्या। मात्रा—१–२ वटी। (आयुर्वेद-निबंधमाला)

चित्रकादिवटी

चित्रकमूलत्वक्, पिप्पलीमूलं, सर्जक्षारः, यवक्षारः, सैन्धवं, सौवर्चलं, सामुद्रलवणं, बिड्लवणं, सांभरलवणं शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली, हिंगु, अजमोदा, चव्यं प्रत्येकं १ भागः।

निम्बुरसेन दाडिमरसेन वा मर्दयेत्। मात्रा—२–६ गुंजा।

(चरक चि. अ. १५)

च्यवनप्राशः

बिल्वमूलं, अग्निमन्थमूलं, श्योनाकमूलं, काश्मरीमूलं, पाटलामूलं, बलामूलं, शालिपर्णीमूलं, पृश्निपर्णीमूलं, मुद्गपर्णीमूलं, माषपर्णीमूलं, श्वेतचन्दनं, वासामूलं, पिप्पली, श्वदंष्ट्रा, बृहतीमूलं, क्षुद्रामूलं, शृंगी, आमलकी, द्राक्षा, जीवन्ती, पुष्कर-मूलं, अगुरुः, रक्तचन्दनं, काकोली, अभया अमृता, ऋद्धिः, जीवकः, ऋषभकः, शठी, मुस्तं, पुनर्नवा, मेदा, सूक्ष्मैला, उत्पलं, विदारी, काकनासा प्रत्येकं ४ तोला आमलकानि ५०० संख्याकानि, जलं १०२४ तोला ।

सर्वम् एकध्यं विपाचयेत् । आमलकानि सुस्विन्नानि ज्ञात्वा निष्कुलीकृत्य संक्षुद्य घृते षट्पले तैले च षट्पले भृष्ट्वा, पादशेषं क्वाथं च गृहीत्वा, मत्स्यण्डिकां २०० तोला दत्वा सर्वम् लेहवत् साधयेत् ।

शीते मधु षट्पलं (२४ तोला), तुगाक्षीरी १६ तोला, पिप्पली ८ तोला, चातुर्जातं प्रत्येकं १ तोला दद्यात् ।

प्रयोग :— क्षये, स्वरभेदे, सर्वेषु कासेषु, श्वासेषु, क्षतक्षीणे, वृद्धेषु, बालेषु च अंगवर्धनार्थं, षण्ढत्वे, रसायनार्थे च युज्यते ।

मात्रा— १–२ तोला, दुग्धेन । (शार्ङ्गधर)

छुछुन्दरतैलम् (मूषकतैलं)

अन्त्रविहीनः छुछुन्दरः ५ तोला, तैलं २० तोला, जलं ८० तोला ।

विधि :— सम्यक् तैलं पाचयेत् ।

प्रोग :— लेपाभ्यंगात् गण्डमालां नाशयेत् योनिभ्रंशं गुदभ्रंशं चापि ।

जयमंगलरसः

पारदः, गन्धकं, सौभाग्यं, ताम्रभस्म, बंगभस्म, सुवर्णमाक्षिकभस्म, सैन्धवं, मरिचं प्रत्येकं १ तोला, सुवर्णभस्म १६ तोला, कान्तलोहभस्म ८ तोला, रौप्य-भस्म ८ तोला । कनकद्रवः, शेफालीद्रवः, दशमूलं, किराततिक्तः प्रत्येकं ३ भावनाः । (भै. र.)

जलोदरारिरसः

शु–पारदः २ तोला, शु–गन्धकं ४ तोला, मनःशिला, हरिद्रा, शुद्धजयपालः, त्रिफला, चित्रकमूलं प्रत्येकं २ तोला; दंतीमूलक्वाथः, स्नुहीदुग्धं, भृंगराजस्वरसः प्रत्येकं ७ भावनाः । मात्रा—२ रक्तिका, अनुपानं-दशमूलक्वाथेन । (भै. र.)

जातीफलादिचूर्णम्

जातीफलं, देवकुसुमं, एला, पत्रम् , त्वक्, नागकेशरं, कर्पूरं, चन्दनं, तिलः, वंशलोचनं, तगरः, आमलकं, तालीसपत्रम् , पिप्पली, हरीतकी, कृष्णजीरकः, चित्रकं, शुण्ठी, विडंगं, मरिचं प्रत्येकं १ भागः, विजया २० भागाः, शर्करा ४० भागाः। (शा. सं.)

जात्यादिघृतम्

जातिपत्राणि, निम्बपत्राणि, पटोलपत्राणि, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, कटुकी, मंजिष्ठा, यष्टिमधु, करंजबीजं, बालकं, अनंतमूलं, तुत्थं, मधूच्छिष्टं प्रत्येकं १ तोला, घृतं ५० तोला।

सर्वाणि वनस्पतिद्रव्याणि कल्कीकृत्य कटाहे घृतेन सार्धं पाकं कृत्वा मधूच्छिष्टं चान्ते दत्वा गालयेत् घृतम्। विशेष मधूच्छिष्ट प्रक्षेपात् घनो मलहरो भवति। बाह्यप्रयोगेषु एव युज्यते।

प्रयोग :— व्रणे, नाडीव्रणे, भगंदरे, कुष्ठे, फिरंगजे उपदंशजे व्रणे, अर्शआदौ च व्रणबंधनात् लेपाभ्यंगात्, वर्तिप्रदानत् च साधु भवति। शोधनं रोपणं च। (यो. र.)

जात्यादितैलम्

जातिपल्लवाः, करंजपत्राणि, निम्बपत्रं, कुष्ठम् , दारुहरिद्रा, मंजिष्ठा, लोध्रं, नीलोत्पलं, कृतमालबीजं, पटोलपत्रं, मधूच्छिष्टं, यष्टिमधु, हरिद्रा, कटुका, पद्मकाष्ठं, हरीतकी, अनंतमूलं प्रत्येक १ तोला, तिलतैलं ६० तोला, जलम् २०० तोला।

विधि :—तैलाद् विना सर्वेषां द्रव्याणां कल्कं कृत्वा, तैलं जलं कल्कं च एकत्र वह्नौ पाचयेत्, तैल शेषे च गालयेत्।

प्रयोग :—व्रण–नाडीव्रण, पामा, कंडू, किटिम सद्योव्रण विद्रधि दग्धव्रणेषु— बहिःप्रयोगार्थं वर्ति पिचु द्वारेण युज्यते। (शा. सं)

जांबवासवः

जम्बूस्वरसः ४०० तोला, शर्करा १०० तोला, रोहितकत्वक् ५ तोला, विडंगं २ तोला, लोहभस्म ५ तोला, मंडूरभस्म ५ तोला, धातकीपुष्पं १० तोला, त्रिवृत् , शक्रयवः, त्वक् , तमालत्वक् , नागपुष्पं, नागरं प्रत्येकं १ तोला, मरिचं, मागधी, अभया, बिभीतकं, आमलकं, यवानी, चित्रकं प्रत्येकं २ तोला, हरिद्रा, कटुकी, एला प्रत्येकं १ तोला, विजयसारः २ तोला।

जीवन्त्यादिघृतम्

जीवन्ती, मधुकं, द्राक्षा, कुटजफलं, शटी, पुष्करमूलं, दुरालभा, व्याघ्री, गोक्षुरकं, बला, नीलोत्पलं, आमलकं, त्रायमाणा, पिप्पली प्रत्येकं १ तोला।

विधि :—एतेषां कल्कैः क्षीरं अष्टगुणं दत्वा घृतस्य प्रस्थं विपाचयेत्।

प्रयोग :—रक्तपित्ते, क्षयजकासे, एकादशरूपयुक्ते त्रिरूपे च राजयक्ष्मणि। मात्रा—१–२ तोला दुग्धेन। (यो. र.)

जूफादिक्वाथः

जूफा, गुले गावज़बां, कासनी, उस्तखुद्दूस, उन्नाब, यष्टिमधु, बिभीतकं, कर्कटशृंगी, अंजीर, मुनक्का, वासा, कुलत्थः। (नूतन कल्प)

ज्वरघ्नक्वाथः

कटुरोहिणी, वन्यजीरकं, धन्वयासः, सिंहलतिक्ता, कुटजत्वक्, कुबेराक्षः, गुडूची, निम्बपत्रं, पटोलपत्रं, सिंकोनात्वक्, सप्तपर्णत्वक्। मात्रा—२–४ कर्षः।

(नूतन कल्पः)

ज्वरघ्नी

पारदः, गन्धकं (कटुतैल शोधितं), अैलेयकः, पिप्पली, हरीतकी, आकारकरभः, इन्द्रवारुणीफलं प्रत्येकं १ भागः। गुंजाप्रमाणा गुटिका इन्द्रवारुणीफलरसेन कार्या। मात्रा—२–४ वट्यः। (शा. सं.)

तक्रारिष्टः

हपुषा, कुञ्चिका, धान्यं, अजाजी, कारवी, शटी, पिप्पली, पिप्पलीमूलं, चित्रकं, हस्तिपिप्पली, यमानी, अजमोदा प्रत्येकं १ भागः, तक्रम् १२८ भागाः।

मिश्रितं घृतभाजने स्थापयेत्। व्यक्ताम्लकटुकं जातं तक्रारिष्टं मात्रया पिबेत्। मात्रा – भोजनस्य आदिमध्यान्तेषु तृषितः पिबेत्। (चरक, चि. अर्शोऽधिकारे)

तगरादिक्वाथः

तगरः, अश्वगन्धा, पर्पटः, शंखपुष्पी, देवदारु, तिक्ता, ब्राह्मी, जटामांसी, मुस्ता, कृतमालः, हरीतकी, द्राक्षा प्रत्येकं १ भागः। मात्रा १–२ कर्षः।

(यो. र.)

ताप्यादिलोहः

सुवर्णमाक्षिकभस्म, लोहभस्म, विडंगम् , शिलाजतु, अभया प्रत्येकं १ भागः। मात्रा — ३–६ गुंजा। (सि. यो. सं.)

ताम्रपर्पटी

ताम्रभस्म ३ तोला, पारदः ३ तोला, गन्धकं ६ तोला, वत्सनाभः १ तोला। मात्रा—१–३ गुंजा। अनुपानम्—जीरकसंयुता। (यो. र.)

तालसिन्दूरम

शु–तालं ५ तोला, शु–पारदः १० तोला, शु–गंधकम् १० तोला, कुमारी-स्वरसस्य १ भावना। वालुकायंत्रे क्रमात् पचेत्। मात्रा—१–२ गुंजा।

अनुपानम्—आर्द्रकस्वरसः मधु।

तालीसादिचूर्णम्

तालीसपत्रं २ भागौ, मरिचम् ४ भागाः, शुण्ठी ६ भागाः, पिप्पली ८ भागाः, वंशलोचनम् १० भागाः, एला १ भागः, त्वक् १ भागः, शर्करा ६४ भागाः।

मात्रा—२–८ गुंजा (चरक, चि. अ. ८)

तिक्तकघृतम्

त्रिफला ६ पलानि, हरिद्राद्वयम् ४ पलानि, वासा, यवासः, पर्पटः, त्रायमाणा, कटुका, निम्बपत्राणि प्रत्येकं २ पले, जलं २ द्रोणौ।

चतुर्थांशशेषे क्वाथमवतार्य वस्त्रपूतं कृत्वा तस्मिन्

घृतं २ प्रस्थौ, पिप्पलीकल्कः, मुस्ताकल्कः, चन्दनकल्कः, त्रायमाणाकल्कः, इन्द्रयवकल्कः, भूनिम्बकल्कः प्रत्येकं २ पले दत्त्वा

सर्वम् एकत्र पाचयेत्। सिद्धम् घृतं वस्त्रपूतं रक्षयेत्।

प्रयोग :— कुष्टे, ज्वरे, पाण्डुरोग–कामला–विसर्पेषु च पानार्थम्।

(भै. र.)

त्रायमाणघृतम्

त्रायमाणा १६ तोला, जलं १६० तोला, कल्कार्थे—रोहिणी, कटुका, मुस्ता, त्रायमाणा, दुरालभा, द्राक्षा, तामलकी, शतावरी, जीवन्ती, चन्दनम् , कमलं, प्रत्येकं १ तोला, आमलकानां रसः ३२ तोला, क्षीरम् ३२ तोला, घृतं ३२ तोला।

विधि :— प्रथमं त्रायमाणां जलेन क्वाथयित्वा पंचमांशः क्वाथः ग्राह्यः। तस्मिन् कल्क द्रव्याणां कल्कं, शेषाणि द्रव द्रव्याणि च संमेल्य घृतं पाचयेत्।

प्रयोग :—पित्तगुल्मं, रक्तगुल्मं, विसर्पम्, कामलां, कुष्ठं, हृद्रोगं च हरेत्। (वृन्दात्)

त्रिकटुचूर्णम्

शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली प्रत्येकं १ भागः। मात्रा—६–१२ गुंजा।

त्रिफलागुग्गुलुः

त्रिफलाचूर्णम् १२ भागाः, कृष्णा ४ भागाः, गुग्गुलुः २० भागाः।

घृतेन पिण्डीकृत्य मोदकाः कार्याः। मात्रा—४–८ गुटिकाः। (शा. सं.)

त्रिफलाघृतम्

त्रिफला ३ कर्षाः, त्रिकटु ३ कर्षाः द्राक्षा, यष्टिमधु, कटुरोहिणी, प्रपौण्डरीकं, सूक्ष्मैला, विडंगम्, नागकेशरम्, नीलोत्पलं प्रत्येकं १ कर्षः, सारिवाद्वयं २ कर्षौ, चन्दनं १ कर्षः, हरिद्राद्वयं २ कर्षौ, गोघृतं २ प्रस्थौ, गोदुग्धम् २ प्रस्थौ, त्रिफलाक्वाथः ६ प्रस्थः। यथाविधि पचेत्।

प्रयोग :—नेत्ररोगेषु, तिमिरे, विषमज्वरे, कामलायाम्, विसर्पप्रदर-पाण्ड्वादिषु च। मात्रा—१ तोला, पानांजननस्यादिषु। (भै. र.)

त्रिफलाचूर्णम्

हरीतकी, बिभीतकं, आमलकम्। मात्रा—०॥–१ कर्षः।

त्रिफलारिष्टः

हरीतकी, बिभीतकं, आमलकं, पिप्पली, चित्रकमूलं, अजमोदा, विडंगं प्रत्येकं १६ भागाः, जलम् २००० भागाः। क्वाथः कार्यः। चतुर्थांशं शेषयेत्।

प्रक्षेपद्रव्याणि – लोहभस्म १६ भागाः, गुडः ४०० भागाः, मधु ३२ भागाः। घृतभाण्डे मासमेकं निधाय वस्त्रपूतं प्रयोजयेत्। मात्रा—१–२ कर्षः।

(ग. नि.)

त्रिभुवनकीर्तिरसः

हिंगुलं, विषं, शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली, सौभाग्यं, ग्रन्थिकं, प्रत्येकं ५ तोला। तुलसीस्वरसः आर्द्रकस्वरसः धत्तूरस्वरसः प्रत्येकं ३ भावनाः। (यो. र.)

त्रिविक्रमरसः

ताम्रं, पारदः, गन्धकं प्रत्येकं ५ तोला। निर्गुण्डी स्वरसे मर्दनम्।

यामैकं वालुकायन्त्रे पक्त्वा योज्यं द्विगुंजकम्।
बीजपूरस्यमूलञ्च सजलं चानुपाययेत्॥ (शा. सं.)

त्रैलोक्यचिन्तामणिरसः

पारदः, हीरकभस्म, सुवर्णभस्म, रजतभस्म, ताम्रभस्म, अभ्रकभस्म, गंधकं, मुक्ताभस्म, शंखभस्म, प्रवालभस्म, हरितालभस्म, मनःशिला प्रत्येकं १ तोला। चित्रकक्वाथः, अर्कदुग्धं, निर्गुण्डीस्वरसः, स्नुहीदुग्धं, सूरणस्वरसः प्रत्येकं ३ भावनाः। (भै. र.)

दद्रुघ्नसोगठी

सौभाग्यपुष्पं, स्फटिकापुष्पं, सर्जनिर्यासः, गन्धकं, चक्रमर्दबीजम्, जम्बीरस्वरसेन वर्तिः कार्या। (नूतन कल्पः)

दन्तोद्भेद गदान्तकरसः

पिप्पली, पिप्पलीमूलं, चव्यम्, चित्रकं, शुण्ठी, अजमोदा, यवानी, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, विडंगं, एला, नागकेशरम्, नागरमुस्ता, कर्पूरम, कर्कटश्रृंगी, बिड्लवणं, अभ्रकभस्म, शंखभस्म, लोहभस्म, सुवर्णमाक्षिकभस्म, प्रत्येकं १ तोला। दुग्धेन भावयेत्। (भै. र.)

दशमूलक्वाथः

बिल्वः, अग्निमन्थः, श्योनाकः, काश्मरी, पाटला, शालिपर्णी, पृश्निपर्णी, बृहती, कंटकारिका, गोक्षुरः प्रत्येकं १ भागः। मात्रा—१–२ कर्षः। (शा. सं.)

दशमूलारिष्टः

दशमूलानि २०० भागाः, चित्रकत्वक् १०० भागाः, पुष्करमूलं १०० भागाः, लोध्रम् ८० भागाः, अमृता ८० भागाः, आमलकं ६४ भागाः, दुरालभा ४८ भागाः, खदिरः, बीजसारः, हरीतकी प्रत्येकं ३२ भागाः, कुष्ठम्, मंजिष्ठा, देवदारु, विडंगम्, यष्टिमधु, भार्गी, कपित्थः, अक्षः, पुनर्नवा, चव्यं, मांसी, प्रियंगुः, सारिवा, कृष्णजीरकं, त्रिवृत्, रेणुका, रास्ना, पिप्पली, क्रमुकः (पूगीफलं), शठी, हरिद्रा, शतपुष्पा, पद्मकम्, नागकेशरम्, मुस्ता, इन्द्रयवः, शुण्ठी, जीवकः, ऋषभकः, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धिः, वृद्धिः प्रत्येकं ८ भागाः।

अष्टगुणजले क्वाथः, चतुर्थांश शेषः । पश्चात्

द्राक्षा २५६ भागाः, जलम् १०२४ भागाः दत्त्वा

क्वाथः कार्यः, त्रिपादशेषम् पूर्वक्वाथे क्षिपेत् । तत्र,

मधु १२८ भागाः, गुडः १६०० भागाः, धातकीपुष्पं १२० भागाः, कंकोलः, उशीरम्, चन्दनं, जातिफलं, लवंगम्, त्वक्, एला, तमालपत्रम्, पिप्पली, नागकेशरम् प्रत्येकं ८ भागाः, कस्तूरी ०। भागः इमानि प्रक्षेपद्रव्याणि निक्षिप्य विधिवत् साधयेत् । मात्रा—१–२ कर्षः ।

दशांगलेपः

शिरीषत्वक्, मधुयष्टी, तगरम्, रक्तचंदनं, एला, मांसी, दारुहरिद्रा, हरिद्रा, कुष्ठम्, बालकम् प्रत्येकं १ तोला ।

विधि :—संचूर्ण्य पंचमांशघृतप्लुत लेपः जलेन क्रियते ।

प्रयोग : —विसर्प, विष, विस्फोट शोथ–दुष्टव्रणान् जयति, विषज शोथं च ।

दार्व्यादिक्वाथः

दार्वी, रसांजनम्, वृषः, मुस्ता, किराततिक्ता, श्रीफलम् (बिल्वः), भल्लातकं प्रत्येकं १ भागः ।

मात्रा—१–२ कर्षः । (शा. सं)

दावानलचूर्णम्

शुण्ठी, मरिचम्, पिप्पली, सैन्धवम्, सौवर्चलम्, विड्लवम् (नरसारः), कपित्थगर्भः, घृतभर्जितहिंगु प्रत्येकं १ भागः । मात्रा— १–२ शाणः ।

दीपिकातैलम्

बृहत्पंचमूलस्य काष्ठानि, अष्टांगुल परिमितानि ।

विधि :—अतसी वस्त्रेण आवेष्ट्य तैलेन संसिच्य दहेत् । तस्मात् च्युतेन तैलेन सुखोष्णेन कर्णपूरणम् ।

प्रयोग :—कर्णशूले, बाधिर्ये च ।

नोंध :—निर्दिष्टया रीत्या देवदारुकाण्डस्यापि तैलं क्रियते ।

(भै. र., सुश्रुत, उ. तं.)

दुग्धवटी

वत्सनाभः, कनकबीजं, अहिफेनम् । (भै. र.)

देवदार्वादिक्वाथः

देवदारु, वचा, कुष्ठम् , पिप्पली, विश्वभेषजम् , कट्फलं, मुस्ता, भूनिम्बः, तिक्तकं (कटुका), धान्यकं, हरीतकी, गजकृष्णा, दुःस्पर्शा (दुरालभा), गोक्षुरः, धन्वयासकं, बृहती, अतिविषा, छिन्ना (अमृता), कर्कटशृङ्गी, वन्यजीरकं (कालीजीरी), प्रत्येकं १ भागः ।

मात्रा—२-४ कर्षाः ।

दोषघ्नलेपः

पुनर्नवामूलं, देवदारु, शुण्ठी, सिद्धार्थकः, शिग्रुः प्रत्येकं १ तोला ।

तक्रेण पिष्ट्वा वा काकमाचीरसेन पिष्ट्वा प्रलेपः कार्यः । (शा. सं.)

द्राक्षादिगुटिका (कल्याणवटकः)

उद्धृतबीजा कपिला द्राक्षा १ भागः, अभया १ भागः, शर्करा २ भागौ ।

मात्रा—१-२ कर्षः । (ग. नि.)

द्राक्षारिष्टः

द्राक्षा २०० कर्षाः, जलम् १०२४ कर्षाः ।

क्वाथयेत् , पादशेषं च गालयेत् । गुडः ८०० कर्षः ।

प्रक्षेपद्रव्याणि—त्वक्, एला, पत्रम् , नागकेशरम , प्रियंगुः, मरिचं, कृष्णा, विडंगं प्रत्येकं ४ कर्षाः ।

जातरसं पिबेत् । मात्रा—१-२ कर्षः । (शा. सं.)

द्वात्रिंशदाख्यक्वाथः (भार्ग्यादिक्वाथः)

भार्गी, भूनिम्बः, निम्बः, मुस्ता, कटुकी-का, वचा, शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली, वासा, विशाला (इन्द्रवारुणी), रास्ना, अनन्ता (अनन्तमूलं), पटोलः, देवदारु, हरिद्रा, पाटला, टुण्टुकः, ब्राह्मी, दारुहरिद्रा, अमृता, त्रिवृत् , अतिविषा, पुष्करमूलं, त्रायमाणा, व्याघ्री (कंटकारिका), सिंही (बृहती), कलिंगः (इन्द्रयवः), हरीतकी, बिभीतकं, आमलकं, शठी प्रत्येकं १ भागः ।

मात्रा—२-४ कर्षाः । (यो. र.)

द्विरुत्तरचूर्णम्

हिंगु १ भागः, वचा २ भागौ, चित्रकं ४ भागाः कुष्ठं १६ भागाः, विडंगं ३२ भागाः।

विडंगस्थाने हिंगुपत्रिका (डीकामाली) ग्राह्या। मात्रा - २-४ माषाः।
(च. चि. २६/२०)

धात्रीरसायनम्

पक्वानि आमलकानि, दुग्धम्, जलम् प्रत्येकं २॥ शेर, गोघृतं १० तोला, शर्करा ५ शेर, अर्कगुलाब ०॥ शेर।

प्रक्षेपद्रव्याणि :—सूक्ष्मैला, बृहदैला, नागरमुस्ता, अगुरुः, तगरम्, जटामांसी, तालीसं, लवंगम्, तरुणीपुष्पं, गन्धशठी, अबरेशम, श्वेतचन्दनं, वंशरोचना, रूमीमस्तगी, जातीफलं, जातिपत्री, केशरम्, तमालपत्रं, धान्यकं, कृष्णजीरकं, जद्वार, त्वक्चूर्णं, बीजपूरकत्वक् प्रत्येकं १ तोला, रौप्यपत्राणि १०० (नंग) संख्याकानि, सुवर्णपत्राणि २५ (नंग) संख्याकानि।

विकल्पे प्रक्षेपः—कस्तूरी, मुक्तापिष्टी, अम्बर, प्रवालपिष्टी प्रत्येकं १ तोला।

विधि :—आमलकानि अहोरात्रं दुग्धे स्थापयित्वा-द्वितीयेदिने प्रक्षाल्य जले, क्वाथयेत्-अस्थि विमुक्तावस्थापर्यंतम्। पश्चात् तेषां कल्कं घृतेन मंदाग्नौ भृष्ट्वा किंचित् स्नेहवियोगावस्थाभावम् यावत्। पश्चात् अर्कगुलाबे, शर्करायाः अवलेहं कृत्वा तस्मिन् आमलककल्कं आलोड्य भूमौ उत्तार्य प्रक्षेपद्रव्याणां चूर्णं दत्वा सुष्ठु रक्षेत् ४० दिनपर्यंतम्।

प्रयोग :—रसायनं, वाजीकरम्, पुष्टिदं, मेध्यं च।

मात्रा—१ तोला, दुग्धेन, भोजनात् ३ होरा अर्वाक्। (सि. यो.)

धात्रीलोहः

आमलकचूर्णं ८ पलानि, लोहभस्म ४ पलानि, यष्टिमधुचूर्णं २ पलानि। गुडूचीक्वाथस्य ७ भावनाः। (चक्रदत्त भै. र.)

धान्वन्तरम् घृतम्

दशमूलं १० पलानि, द्वि-करंजफलानि ४ तोला, देवदारु, हरीतकी, वर्षाभूः, वरुणत्वक्, दन्तीमूलं, चित्रकं, पुनर्नवामूलं, सुधामूलं, निम्बफलं, कदम्बफलं, बिल्वफलं, भल्लातकं, शटी, पुष्करमूलं, पिप्पलीमूलं प्रत्येकं २ तोला।

यवकोलकुलत्थाः प्रत्येकं ३ प्रस्था, जलं द्रोणः (१०२४ तोला), एतेषां १/४ क्वाथः कार्यः । तेन घृतप्रस्थं निम्नानां कल्कं दत्वा पाच्यम् । कल्कद्रव्याणि—३२ तोला सर्वाणि मिलित्वा ।—हिज्जलः, त्रिफला, भार्गी, रोहिषं, गजपिप्पली, शृंगवेरम्, विडंगानि, वचा, कंपिल्लकः ।

प्रयोग :—कुष्ठे, गुल्मे, प्रमेहे, शोथे, वातरक्ते, प्लीहोदरे, प्रमेहपिडकासु, अपस्मारे, उन्मादे, अर्शस्सु । मात्रा—१ तोला । (भै. र.)

नवायसलोहः

शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली, हरीतकी, बिभीतकं, आमलकं, मुस्ता विडंगम्, चित्रकमूलत्वक् प्रत्येकं १ भागः, लोहभस्म ९ भागाः ।

मात्रा—२–४ गुंजाः । (चरक. सं. चि. अ. १६)

नारसिंहचूर्णम्

शतावरीचूर्णम् ६४ भागाः, गोक्षुरः ६४ भागाः, वाराहीकंदः ८० भागाः, गुडूची १०० भागाः, भल्लातकं १२८ भागाः, चित्रकमूलत्वक् ४० भागाः, तिलः ६४ भागाः, त्वक् ११ भागाः, पत्रकं ११ भागाः, एला ११ भागाः, शर्करा २८० भागाः, विदारीकंदः ६४ भागाः ।

मात्रा—०॥–१ कर्षः । (सि. यो. सं.)

नाराचरसः

ताम्रभस्म, पारदः, गन्धकं, शु–जयपालः, हरीतकी, बिभीतकं, आमलकं, शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली प्रत्येकं १ तोला । (यो. र.)

नारायणतैलम्

अश्वगंधा, बलामूलं, बिल्वमूलं, काश्मरीमूलं, कंटकारीमूलं बृहतीमूलं प्रत्येकं ४ तोला, गोक्षुरम्, अतिबला, निम्बत्वक्, टुण्टुकमूलं, पुनर्नवामूलं, अरणीमूलं, प्रसारणी प्रत्येकं ५ तोला, जलम् ५०० तोला ।

एतेषां क्वाथं चतुर्थांशं कृत्वा । शतावरी १२ तोला, जलम् १०० तोला । एतस्यापि चतुर्थांशं क्वाथं गृहीत्वा ।—

वचा, चन्दनं, कुष्ठं, एला, बलामूलं, जटामांसी, सैन्धवं, तगरम्, अश्वगंधा, रास्ना, शतपुष्पा, देवदारु, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, मुद्गपर्णी, माषपर्णी प्रत्येकं १ तोला ।

एतेषां कल्कं कृत्वा पश्चात् तिलतैलं ४० तोला, प्रथमं द्वितीयं च क्वाथं, कल्कं गोदुग्धं १०० तोला, एकत्र विपाचयेत् ।

प्रयोग :—वातव्याधो पानाभ्यंगे, नस्ये, बस्तौ च। मूढगर्भे, वन्ध्यत्वे, षाण्ढ्ये, शूले, वृषणवाते, भग्ने, पंगुरोगे, क्षीणेन्द्रियत्वे, शुक्रक्षये अन्त्रवृद्धौ, मन्दबुद्धौ, बाधिर्ये, वैस्वर्ये चापि उपयुज्यते। (शा. सं. यो. र.)

नित्यानंदरसः

पारदः, गन्धकं, ताम्रभस्म, कांस्यभस्म, बंगभस्म शु–हरितालं, शु-तुत्थं, शंखभस्म, कपर्दिकाभस्म, शुण्ठी, मरिचं, पिपली, हरीतकी, बिभीतकं, आमलकं, लोहभस्म, विडंगम् प्रत्येकं १ तोला, पंचलवणानि, चव्यं, पिप्पलीमूलं, हपुषा, वचा, कर्पूरम्, पाठाः, देवदारु, एला, वृद्धदारकं, त्रिवृत्, चित्रकं, दन्ती प्रत्येकं १ तोला, हरीतकीक्वाथस्य १ भावना। (भै. र.)

निदिग्धिकादिक्वाथः

निदिग्धिका, बला, रास्ना, त्रायमाणा, अमृता, श्यामात्रिवृत् प्रत्येकं १ भागः।
मात्रा—१–२ कर्षः। (भै. र.)

निद्रोदयरसः

अहिफेनम्, वंशलोचनम्, आमलकम्, हिंगुलम् १ भागः।
विजयाक्वाथेन मर्दयेत्। मुद्गाभा गुटिका कार्या।
मात्रा—१–२ वटी। (र. त.)

निर्गुण्डीतैलम्

निर्गुण्डीस्वरसः ४ प्रस्थाः, तिलतैलं १ प्रस्थम्, लांगलीमूलकल्कः १६ तोलकाः। यथाविधि तैलं पाचयेत्। नस्यार्थं गण्डमालायाम्; अभ्यंगार्थं वातव्याधौ।
(शार्ङ्गधर)

पंचकोलचूर्णम्

पिप्पली, चव्यं, शुण्ठी, पिप्पलीमूलं, चित्रकम् प्रत्येकं १ भागः।
मात्रा—०। कर्षः। (शा. सं.)

पंचगव्यघृतम्

गोशकृद्रसः, गोदधि, गोक्षीरम्, गोमूत्रं प्रत्येकं १० तोला, गोघृतं ४० तोला।
सर्वाणि द्रव्याणि एकस्मिन् कटाहे गृहीत्वा पाचयेत्।

प्रयोग :— उन्मादं, चातुर्थिकज्वरम्, ग्रहपीडां, अपस्मारम् च नाशयति।

मात्रा — १–२ तोला पानार्थं; ५–१० बिन्दवः नस्यार्थम्।

पंचगुणतैलम्

निम्बपत्राणि २० तोला, त्रिफला २० तोला, निर्गुण्डीपत्राणि २० तोला, जलम् ४०० तोला।

विधि :— सर्वम् क्वाथयित्वा ०। शेषे वस्त्रपूतं कृत्वा तेन निम्नोक्तानि द्रव्याणि संमेल्य तैलं पाचयेत्। तिलतैलं ८० तोला, गुग्गुलुः ६ तोला, सर्जरसः ६ तोला, मधूच्छिष्टं, शिलारसः, गंधबिरौजा प्रत्येकं ६ तोला, एसिड कार्बोलिक २॥ तोला संमेल्य उपयोगः कार्यः।

प्रयोग :— व्रणं, नाडीव्रणं, दग्धव्रणं, कर्णपाकं, घृष्टं–भिन्नं शस्त्राघातं अलर्जी च नाशयेत्। रक्तस्रावं च स्तम्भयति। व्रणोपरि तैलं दत्वा पट्टं बध्नीयात्।

(वै. चि. सा.)

पंचतिक्तघृतगुग्गुलुः

क्वाथ्य द्रव्याणि :— निम्बत्वक् २ शेर, गुडूची, २ शेर, वासा ४ शेर, कटुपटोलं २ शेर, कंटकारी १। शेर, गोरखमुंडी, कृतमालकमूलं, शिग्रुत्वक्, वरुणत्वक्, कांचनारत्वक्, निर्गुण्डीमूलं, मुस्ता प्रत्येकं ४ शेर।

कल्कद्रव्याणि :— गुग्गुलुः २।॰ शेर, गोघृतं ६॥ शेर, पाठामूलं, विडंगम्, देवदारु, मागधी, सर्जक्षारः, यवक्षारः, शुण्ठी, हरिद्रा, शतपुष्पा, यवकः, कुष्ठं, ज्योतिष्मतीबीजं, मरिचं, शक्रयवः, अजमोदा, चित्रकमूलं, कटुकी, भल्लातकं, वचा, ग्रंथिकं, मंजिष्ठा, अतिविषा, अभया, बिभीतकं, आमलकं, यवानी प्रत्येकं ४ तोला। घृतविधिना पाचयेत्।

पंचसकारचूर्णम्

मार्कण्डी ४ भागाः, शिवा २ भागौ, शुण्ठी, शतपुष्पा, सैन्धवम् वा सौवर्चलम् प्रत्येकं १ भागः।

मात्रा — ३–६ माषाः। (सि. भे. म.)

पंचामृतपर्पटी

गंधकं ८ तोला, पारदः १० तोला, लोहभस्म २ तोला, अभ्रकभस्म १ तोला, ताम्रभस्म ०॥ तोला।

मात्रा — १–२ रक्तिका। अनुपानम्–तक्रनम्।

पथ्यादिषडंगक्वाथः

पथ्या, अक्षः, धात्री, भूनिम्बः, हरिद्रा, निम्बः, अमृता प्रत्येकं १ भागः। क्वाथ कार्यः। सगुडः शीर्षशूलहृत्।

मात्रा – १–२ कर्षः। (शा. संहिता)

पद्मकादितैलम्

पद्मकाष्ठं, यष्टिमधु, उशीरः, हरिद्रा प्रत्येकं १० तोला, जलम् ६४० तोला, १/८ अवशेषयेत् क्वाथम्। तिलतैलं २० तोला।

कल्कद्रव्याणि :– सर्जरसः, मंजिष्ठा, शतावरी, चंदनम् प्रत्येकं १ तोला, विधिवत् तैलम् साधयेत्।

प्रयोग :—विसर्पे, पित्तजे व्रणे, विपादिकायां लेपार्थे च।

मात्रा—०।।–१ कर्षः।

पायोरिया प्रवाही

एरण्डतैलं २।। तोला, कर्पूरम् ०। तोला, त्वक्तैलम् ५ बिन्दवः, थाइमोल २ गुंजाः। दंतपूय रोगे।

पिप्पलीक्षीरघृतम्

गोघृतं १ प्रस्थः, दुग्धम् ४ प्रस्थः, जलम् १६ प्रस्थः।

कल्कार्थे :—गुडः ८ तोला, पिप्पली ८ तोला।

एकध्यं कृत्वा घृतं विपाचयेत्।

प्रयोग :—अम्लपित्ते, परिणामशूले, यकृत् प्लीहवृद्धौ, जीर्णज्वरे च।

मात्रा—०।। तोला यावत् क्षीरानुपानम्।

पीतकचूर्णम्

दार्वीत्वक् (दारुहरिद्रात्वक्), सैन्धवम्, मनःशिला, यवक्षारः, हरितालं प्रत्येकं १ भागः। दन्तास्यगलामये समध्वाज्यः मुखे धार्यः।

पुनर्नवादिक्वाथः

पुनर्नवा, दारुनिशा, हरिद्रा, शुण्ठी, हरीतकी, अमृता, चित्रकः, भार्गी, देवदारु प्रत्येकं १ भागः। मात्रा —२–४ कर्षाः।

पुनर्नवामण्डूरम्

पुनर्नवा, त्रिवृत्, शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली, विडंगम्, देवदारु, चित्रकं, कुष्ठः, हरिद्रा, हरीतकी, बिभीतकं, आमलकं, दन्तीमूलं, चव्यं, शक्रयवः, कटुकी, पिप्पलीमूलं, मुस्ता, कर्कटशृंगी, कृष्णजीरकं, यवानी प्रत्येकं ५ तोला, कट्फलम् २ तोला, शुद्ध मंडूरम् २२० तोला।

अष्टगुणे गोमूत्रे पाचयेत्। ४ रक्तिकोन्मिता गुटिका।

मात्रा—१–२ गुटिका। अनुपानम्—पुनर्नवादिक्वाथः।

पुनर्नवाष्टकक्वाथः

पुनर्नवा, हरीतकी, निम्बत्वक्, दारुहरिद्रा, तिक्ता, पटोलपत्रं, अमृता (गुडूची), शुण्ठी प्रत्येकं १ भागः। यकृत्प्लीह्नोः विद्रध्यादि–विकारेषु समभाग वरुण-रोहितक–शिग्रु संयोगः कार्यः। मात्रा—२–४ कर्षाः।

(सि. यो. सं.)

पुष्यानुगचूर्णम्

पाठाः, जम्बूबीजम्, आम्रबीजमज्जा, पाषाणभेदः, रसाञ्जनम्, अम्बष्ठा, मोचरसः, वत्सकत्वक्, लज्जालुः, कुंकुमम्, अतिविषा, बिल्वं, मुस्ता, लोध्रः, गैरिकं, कट्फलं, मरिचं, शुण्ठी, द्राक्षा, रक्तचन्दनं, वत्सकं, अनन्ता, धातकी, मधुयष्टी, अर्जुनः, अरलुः प्रत्येकं १ भागः।

मात्रा—२–४ माषाः। (चरक चि. अ. ३०)

प्रतापलंकेश्वररसः

शु–पारदः, अभ्रकभस्म, शु–गन्धकं, वत्सनाभः प्रत्येकं १ तोला, मरिचं ३ तोला, लोहभस्म ४ तोला, शंखभस्म ८ तोला, अरण्योपलभस्म १६ तोला।

(यो. र.)

प्रदरान्तकरसः

शु–पारदः, शु–गन्धकं, वंगभस्म, रजतभस्म, खर्परभस्म, कपर्दिकाभस्म प्रत्येकं ५ माषाः, लोहभस्म ३॥ तोला। कुमारीस्वरसभावना। (भै. र.)

प्रदरान्तकलोहः

लोहभस्म, ताम्रभस्म, शु तालः, बंगभस्म, अभ्रकभस्म, कपर्दिकाभस्म, शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली, हरीतकी, बिभीतकं, आमलकं, चित्रकं, विडंगम् प्रत्येकं १ तोला, पंचलवणं पृथक्, चव्यं पिप्पली, शंखभस्म, वचा, हपुषा, कुष्टः, शठी, देवदारु, एला, वृद्धदारकः प्रत्येकं १ तोला। (र. सा. सं.)

प्रभावतीवटी

माक्षिकभस्म, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, तुगाक्षीरी, शिलाजतु प्रत्येकं १ भागः। अर्जुनरसेन मर्दयेत्। गुंजाद्वयमितां वटीम् कुर्यात्।

मात्रा—४–८ गुंजाः। (भै. र.)

प्रमेहहरकषायः

दार्वी, हरिद्रा, अमृता, बिभीतकं, आमलकं, अभया, देवदारु, मुस्ता, उशीरम्, लोध्र, श्वेतचंदनं, कमलपुष्पं, पद्मकाष्ठम्, गोक्षुरं, पटोलः प्रत्येकं १ माषः।

मात्रा—तोला १ क्वाथः। (सि. यो. सं.)

प्रवालपंचामृतरसः

प्रवालभस्म २ तोला, शंखभस्म, मुक्ता, कपर्दिकाभस्म, शुक्तिभस्म प्रत्येकं १ तोला, अर्कस्वरसस्य १ भावना, १ पुटम्। (यो. र.)

फलघृतम्

मंजिष्ठा, यष्टिमधु, कुष्ठं, हरीतकी, बिभीतकं, आमलकं, शर्करा, वचा, अजमोदा, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, हिंगु, कटुकी, बला, कट्फलं, अनन्तमूलं, कमलं, चन्दनं, द्राक्षा, पद्मकं, देवदारु, मेदा, महामेदा, विदारी, काकोली, अश्वगंधा, पिप्पली, जातिपुष्पं, वंशरोचना, विडंगम्, नागरमुस्ता, गोक्षुरः, बृहतीद्वयम् प्रत्येकं १ तोला।

एषां क्वाथः चतुःप्रस्थः, गोघृतं चतुःप्रस्थं, शतावरीरसः द्विप्रस्थ, गोदुग्धं द्विप्रस्थम्।

विधि :—सिद्धं कृत्वा स्थापयेत् भाण्डे।

प्रयोग :—योनिव्यापत्तौ, मृतगर्भार्थे, गर्भपात भय दूरीकरणार्थे, वंध्यादोष हरणे वा योजनीयम्।

मात्रा—०॥–१ तोला, शर्करायुक्तम्। (सि. यो. सं.)

फलवर्तिः

इन्द्रयवः, मायुफलम्, विडंगम्, वापुंभा, स्फटिका–पुष्पिता, हरीतकी, आम्रहरिद्रा, वचा, चीमेड।

अग्निमन्थरसेन मर्दयेत्। बदरमात्रा गुटिका कार्या। योनौ धारयेत्।

(नूतन कल्पः)

बलातैलम् (महत्)

बलामूलक्वाथः, दशमूलक्वाथः, यवकोलकुलत्थानां क्वाथः, दुग्धम् प्रत्येकं ८ भागाः, तैलम् १ भागः।

कल्कद्रव्याणि :—मधुरो वर्ग, सैन्धवम्, अगुरुः, सर्जरसः, सरलः, देवदारु, त्रिफला, मांसी, पत्रं, तगरम्, पुनर्नवा, मंजिष्ठा, चन्दनं, कुष्ठं, एला, कोलः, अंजनम्, सारिवा, त्वक्, शतावरी, अश्वगंधा, शतपुष्पा प्रत्येकं योग्य भागः।

सर्वैः सिद्धम् तैलम् काचपात्रे स्थापयेत्।

प्रयोग :—सर्ववातविकारम्, सूतिकारोगं, वन्ध्यत्वम्, क्षीणशुक्रं, भग्नं, आक्षेपकं च अपनयति। मात्रा – १–२ तोलके पानाभ्यंगे वस्तौ च।

बालचातुर्भद्रचूर्णम्

मुस्ता, पिप्पली, अतिविषा, कर्कटशृंगी प्रत्येकं १ भागः।

मात्रा—२–८ गुंजाः। (सि. यो. सं.)

बिडालकलेपः

यष्टीमधु, गैरिकं, सिन्धूत्थं, दारुहरिद्रा (वा. शुण्ठी), रसांजनं प्रत्येकं १ तोला।

विधि :—जलेन पिष्ट्वा बहिर्लेपः कार्यः।

प्रयोग :—सर्वनेत्ररोगापहः। रक्तसंचयं वेदनां चापहरति।

बिल्वादिचूर्णम्

आमबिल्वमज्जा, शुण्ठी, मोचरसः, शुद्धविजया, धातकीपुष्पम् प्रत्येकं १ भागः, धान्यकं २ भागौ, मिशिः ४ भागाः। (सि. सं.)

बृहत्कस्तूरीभैरवरसः

कस्तूरी, कर्पूरम्, ताम्रभस्म, धातकीपुष्पं, वानरीबीजं, रौप्यभस्म, सुवर्णभस्म, मुक्तापिष्टिः, प्रवालभस्म, लोहभस्म, पाठा, विडंगम्, मुस्ता, शुण्ठी, उशीरम्, हरितालं, अभ्रकभस्म, आमलकं प्रत्येकं १ तोला, अर्कपत्रस्वरसस्य २ भावने।

प्रथमं कस्तूरीकर्पूर व्यतिरिक्तानां द्रव्याणां सम्यक् मर्दनम्। कस्तूरी कर्पूरयोः तदनन्तरम् निक्षेपणम्। तत्पश्चात् अर्कस्वरसस्य १ भावना। गुंजाद्वयमिता गुटिका कार्या।

मात्रा—२ गुंजा; अनुपानम्—आर्द्रकस्वरसः। (भै. र.)

बृहत्छागलादिघृतम्

छागमांसं क्षुण्णंकृत्वा, दशमूलं, अश्वगंधा, वाट्यालकी (बला) प्रत्येकं ४०० तोला। सर्वेषां ०। शेषो, जलेन सह, पृथक् पृथक् कृतः क्वाथः, सर्वे मिलित्वा ३२ प्रस्थाः। घृतं, गोदुग्धं, शतावरीरसः प्रत्येकं ५१२ तोला (२ आढकाः)।

कल्कद्रव्याणि :— जीवन्ती, मधुकं, द्राक्षा, काकोली, क्षीरकाकोली, नीलकमलं, मुस्ता, चन्दनं, रास्ना, शालिपर्णी, पृश्निपर्णी, सारिवाद्वयं, मेदा, महामेदा, कुष्ठं, जीवकः, ऋषभकः, शटी, दारुहरिद्रा, प्रियंगुका, त्रिफला, तगरम्, तालीशं, पद्मकं, एला, तमालपत्रं, शतावरी, नागवल्ली, जातिकुसुमं, धान्यकं, मंजिष्ठा, दाडिमं, देवदारु, रेणुकं, एलवालुकं, विडंगम्, जीरकं प्रत्येकं २ तोला।

सर्वैः घृतं पाचनीयम्। वस्त्रपूते शीते च शर्करा ६४ तोला प्रक्षेप्या।

प्रयोग :— सर्वेषु वातव्याधिषु, राजयक्ष्मणि, अपस्मारे, इन्द्रियध्वंसे, विषमज्वरे, मदात्यये, पक्षाघाते, नष्टशुक्रे, वन्ध्यत्वे, बालशोषे, नेत्रकर्णनासारोगे च।

मात्रा—१–२ तोला, दुग्धानुपानम्।

बृहत्मंजिष्ठादिक्वाथः (महामंजिष्ठादिक्वाथः)

मंजिष्ठा, मुस्ता, कुटजः, अमृता, कुष्ठं, शुण्ठी, भार्गी, कंटकारिका, वचा, निम्बः, दारुहरिद्रा, हरिद्रा, हरीतकी, बिभीतकं, आमलकं, पटोलः, कटुकी, विडंगं, असनः, चित्रकं, शतावरी, त्रायमाणा, पिप्पली, इन्द्रयवः, वासा, भृंगराजः, देवदारु, पाठा, खदिरः, चन्दनं, त्रिवृत्, वरुणः, किराततिक्तः, बाकुची, आरग्वधः, शाखोटकः, महानिम्बः, करंजफलं, अतिविषा, जलः (उशीरः), इन्द्रवारुणी, अनन्तमूलं, सारिवा, पर्पटः प्रत्येकं १ भागः। मात्रा—२–४ कर्षाः।

बृहद्वातचिंतामणिरसः

सुवर्णभस्म ३ तोला, रौप्यभस्म २ तोला, अभ्रकभस्म २ तोला, मुक्तापिष्टिः ३ तोला, प्रवालपिष्टिः ३ तोला, लोहभस्म ५ तोला, रससिंदूरम् ७ तोला।

घृतकुमारी रसेन संमर्द्य रक्तिद्वयमितां वटीं कुर्यात। (र. यो. सा.)

बोलपर्पटी

शु–पारदः १ तोला, शु–गन्धकं १ तोला, बोलचूर्णम् २ तोला।

मात्रा—६ रक्तिकाः। अनुपानम्...दुग्धम्। (यो. र.)

ब्राह्मीघृतम्

ब्राह्मीस्वरसः ८० तोला, गोघृतं पुराणं १२० तोला, गोदुग्धं २०० तोला।

कल्कद्रव्याणि :— यष्टिमधु, शतावरी, द्राक्षा, विदारी, वचा, कुष्ठं, विडंग, शंखपुष्पी, त्रिफला पृथक्, त्रिकटु पृथक्, हरिद्रा प्रत्येकं २ तोला।

सर्वम् एकध्यं कृत्वा घृतं पाचयेत्।

प्रयोग :— उन्मादे-अपस्मारे। मात्रा— १–२ तोला।

टिप्पणी :— योगरत्नाकरे, वचा–कुष्ठ–शंखपुष्पीणां कल्कैः एव घृतस्य २० तोला पाच्यते। अत्रोक्तानि सर्वाणि कल्कद्रव्याणि नोपयुज्यन्ते। द्रवार्थं गोदुग्धं अपि नैव गृहीतम्। (यो. र., व्या. वि.)

ब्राह्मीवटी

अभ्रकभस्म, संगेयशबपिष्टिः, अकीकपिष्टिः, माणिक्यपिष्टिः, चन्द्रोदयः, प्रवालपिष्टिः, कहेरबापिष्टिः, सुवर्णभस्म, मुक्तापिष्टिः प्रत्येकं ६ माषाः, जातिफलं, लवङ्गम्, कुष्ठम्, जातिपत्री कृष्णजीरकं, पिप्पली, त्वक्, अनीसून्, अश्वगन्धा, आकारकरभः, धान्यकं, वंशलोचनम्, एला, शंखपुष्पी, श्वेतचन्दनं, मिसिः, तेजपत्रम्, नागकेसरम्, रूमीमस्तकी, पिप्पलीमूलं, चित्रकमूलत्वक्, कुलिंजन प्रत्येकं ४ माषाः, कस्तूरी, अम्बरम्, ब्राह्मी, त्रिवृत्, अगुरुः, केसरम् प्रत्येकं १॥ तोला।

ब्राह्मीस्वरसस्य भावना १। गुंजाद्वयमितां गुटिकां कारयेत्। मात्रा — १–२ गुंजे। (सि. यो. सं.)

भल्लातकतैलम्

तैलं २ प्रस्थौ, भृंगराजस्वरसः ८ प्रस्थाः, कल्कद्रव्याणां कल्कः अर्धप्रस्थः, जलम् ८ प्रस्थं।

कल्कद्रव्याणि :— भल्लातकं, अर्कपत्रं, मरिचं, सैन्धवम्, द्वे हरिद्रे, चित्रकमूलत्वक् प्रत्येकं ५॥ तोला। सर्वम् एकध्यं पक्त्वा वस्त्रपूतं कारयेत्।

प्रयोग :— अभ्यंगात् कफवातोत्थाः नाडी–अपचीव्रणाः शाम्यन्ति।

भल्लातकादिघृतम्

भल्लातकानां क्वाथः ८० तोला, भल्लातककल्कः ५ तोला, घृतं २० तोला।

विधि :— भल्लातकानां २० तोला, ३२० तोला जलेन क्वथित्वा पादशेषं वस्त्रपूतं क्वाथं गृहीत्वा भल्लातककल्केन घृतं पाचयेत।

प्रयोगः — वातगुल्मे, रक्तगुल्मे च। कफगुल्मे तु मधुना समेतम् पिबेत्। मात्रा— ०॥ तोला शर्करया विमिश्रम्।

द्वितीयो विधिः—

भल्लातकानि ८ तोला, पंचमूलं २० तोला, विदारीगन्धा ४ तोला, जलम् ५०२ तोला, घृतम् २ प्रस्थौ।

आपोथ्य क्वाथः ०। ग्राह्यः। तस्मिन् क्षीरम् १०० तोलकं, कल्कं च प्रक्षिप्य घृतं साधयेत्।

कल्कद्रव्याणि—पिप्पली, नागरम्, वचा, विडंगं, सैन्धवं, हिंगु, यावशूकं, विडं, शटी, चित्रकं, मधुकं, रास्ना सर्वाणि कर्ष (१ तोला) प्रमाणेन।

प्रयोग :—कफगुल्मे, प्लीह्नि, पाण्डुरोगे, श्वासे, ग्रहणीरोगे, कासे च। मात्रा—१ तोला। (भै. र.)

भार्ग्यादिक्वाथः (द्वितीयः, लघुः)

भार्गी, गुडूची, मुस्ता, देवदारु, बृहती, शुण्ठी, कणा, पुष्करमूलम्। मात्रा—१-२ कर्षः। (भै. र.)

मंजिष्ठादिक्वाथः (लघुः)

मंजिष्ठा, बाकुची, चक्रमर्दः, निम्बः, हरीतकी हरिद्रा, धात्री, वासा, शतावरी, बला, नागबला, यष्टिमधुकं, इक्षुरकः (तालमखाना), पटोलः, गुडूची, रक्तचन्दनं प्रत्येकं १ भागः। क्वाथः कार्यः। मात्रा—१-२ कर्षः।

(भै. र. कुष्ठाधिकारः)

मधुरज्वरान्तकक्वाथः

चन्दनं, उशीरः, धान्यकं, बालकं, पर्पटः, मुस्ता, शुण्ठी प्रत्येकं १ भागः। मात्रा—२-४ कर्षाः। (यो. र.)

मल्लसिन्दूरम्

शु-मल्लः ५ तोला, शु-पारदः १० तोला, शु-बलिः १० तोला। कुमारी-स्वरसस्य १ भावना। वालुकायन्त्रे क्रमात् पचेत्।

मसिमिश्रणम्

अरिष्टफलत्वक्मसिः १ भागः, खदिरः १ भागः। मात्रा—१-४ गुंजाः।

(आर्यभिषक्)

महाज्वरांकुशरसः

पारदः, गन्धकं, वत्सनाभः प्रत्येकं १ तोला, कनकबीजं ३ तोला, शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली प्रत्येकं ४ तोला।

मात्रा—२ गुंजा। अनुपानम्—जम्बीररसः आर्द्रकस्वरसो वा। (र. सा. सं.)

महातिक्तकं घृतम्

कल्कद्रव्याणि :—सप्तपर्ण, प्रतिविषा, शम्याकं, कटुरोहिणी, पाठा, मुस्ता, उशीरः, पद्मकाष्ठं, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, सारिवा श्वेता, सारिवा-कृष्णा, इन्द्रयवः, यष्टिः, त्रायमाणा, त्रिफला, पटोलः, निम्बः, पर्पटक, धन्वयवासः, चन्दनं, पिप्पली, षड्ग्रन्था, विशाला, शतावरी, वासा, मूर्वा, अमृता, किरातिक्ता प्रत्येकं १ तोला, घृतं ३ शेर, जलं २४ शेर, धात्रीफलानां रसः ६ शेर।

कल्कद्रव्याणां कल्कं, घृतादीन् च एकत्र कृत्वा घृतं साधयेत्।

प्रयोग :—कुष्ठे, रक्तपित्ते, रक्तजेषु अर्शःसु, विसर्पे, अम्लपित्ते, वातरक्ते, पाण्डुरोगे, कामलायां, गुल्मे, प्रमेहपिटिकासु, भगंदरे।

मात्रा—१–२ तोला। (यो. र.)

महापैशाचघृतम्

मांसी, हरीतकी, वचा, श्वेतवचा, कपिकच्छूमूलं, प्रियालं, त्रायमाणा, शतपुष्पा, मिसिः, वृश्चिकाली, शालिपर्णी, अरणीमूलं, शतावरी, चोरकं, कटुरोहिणी, शिवा, वाराहीकंदः, गुग्गुलुः, नाकुली, कटभी, महापुरुषदन्ताः प्रत्येकं १ तोला।

विधि :—जलं अष्टगुणं, घृतं २ शेर, सर्वम् एकत्र कृत्वा घृतं पाचयेत्।

प्रयोग :—चातुर्थिकज्वर–उन्माद–अपस्मार–ग्रहपीडासु। मात्रा—१–२ तोला पानार्थम्।

महामृत्युंजयरसः

शु–मल्लः, शु–तालं, शु–वत्सनाभं, शु–जयपालः प्रत्येकं १ तोला, शु–हिंगुलं ४ तोला, श्वेतखदिरसारः ४ तोला, स्वर्णक्षीरीस्वरसस्य १ भावना।

मात्रा—०॥ गुंजा। अनुपानम्–आर्द्रकस्वरसः।

महारास्नादिक्वाथः

रास्ना ५० भागाः, धन्वयासः, बला, एरण्डमूलम्, देवदारुः, शठी, वचा, वासा, शुण्ठी, हरीतकी, चव्यम्, मुस्ता, पुनर्नवा, अमृता, वृद्धदारुकम्, शतपुष्पा

(मिशि:), गोक्षुर:, अश्वगंधा, अतिविषा, कृतमाल:, शतावरी, पिप्पली, सहचर:, धान्यकम् , कंटकारिका, बृहती प्रत्येकं १ भाग: ।

मात्रा—२–४ कर्षा: । (शा. सं.)

माषतैलम्

माषक्वाथ:, बलाक्वाथ:, रास्नाक्वाथ:, दशमूलक्वाथ:, यवकोलकुलत्थानांक्वाथ:, छागमांसक्वाथ: प्रत्येकं ४०० तोला, तैलम् १०० तोला, क्षीरम् १०० तोला ।

कल्कद्रव्याणि :—रास्ना, आत्मगुप्ता, सिन्धूत्थं, शतावरी, एरण्डमूलम् , मुस्तकं, जीवनीयगण:, बला, व्योष: प्रत्येकं १।। तोला ।

सर्वम् एकत्र कृत्वा तैलम् पचेत् ।

प्रयोग :—हस्तकम्पं, शिर:कम्पं, अवबाहुकं, पक्षाघातं, ऊर्ध्वजत्रुरोगान् नाशयेत् नस्य–अभ्यंग–पान बस्तिभि: ।

मात्रा—१–२ तोला ।

मूत्रलकषाय:

पुनर्नवामूलं, इक्षुमूलं, कुशमूलं, दर्भमूलं, कासमूलं, गोक्षुर:, खोरासानीयवानी, रक्तचन्दनं, अनंतमूलं, देवदारु, शतपुष्पा, धान्यकं, शाकफलं, काकमाची, कासनीबीजं, गुडूची, पाषाणभेद:, काकनज, कमलपुष्पं प्रत्येकं १ भाग: । क्वाथ: कार्य: ।

(सि. यो. सं.)

मेन्डल्स पेइन्ट

आयोडीन ५ ग्रेन, पोटास आयोडाईड २० ग्रेन, ओईलमेंथा ५ बिन्दव:, ग्लोसराईन १ औंस । मिश्रं कृत्वा काचकूप्यां स्थापयेत् ।

प्रयोग :—दन्तवेष्टपाके, गलपाके, गिलायुवृद्धौ, मुखपाके च कार्पास कृतोष्णोषया शलाकया प्रतिसारणम् लेपो वा ।

मेलेरियावटी

मत्स्या, भूनिम्ब:, निम्बत्वक्, सप्तपर्ण:, मामज्जक:, सिंकोनात्वक्, धत्तूर:, कुबेराक्ष: । एषां क्वाथं कृत्वा घन: कार्य: ।

प्रक्षेपद्रव्याणि :—अतिविषा, कुबेराक्षमज्जा, विषतिन्दुकं, ऐलेयक:, मन:शिला । मुद्गाभा गुटिका कार्या । मात्रा –२–४ वट्य: । (नूतन कल्प:)

यमानीषाडवम्

यमानी, तिन्तिडीकं, नागरं, अम्लवेतसं, दाडिमम् , बदरम् प्रत्येकं १ कर्षः, धान्यकं, सौवर्चलं, अजाजी, त्वक् प्रत्येकं ०।। कर्षः, पिप्पली १०० नंग, मरिचं २०० नंग, शर्करा १६ कर्षाः ।

एकत्र चूर्णयेत् । (चरक चि. अ. ८)

योगराजगुग्गुलुः (महान्)

नागरम् , पिप्पली, चव्यं, पिप्पलीमूलं, चित्रकं, भृष्टं हिंगु, अजमोदा, सर्षपः, श्वेतजीरकं, कृष्णजीरकं, रेणुका, इन्द्रयवः, पाठा, विडंगम् , गजपिप्पली, कटुका, अतिविषा, भार्गी, वचा, मूर्वा प्रत्येकं १ भागः, त्रिफलाचूर्णम् ४० भागाः, गुग्गुलुः ६० भागाः, वंगभस्म, रौप्यभस्म, नागभस्म, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, मण्डूरभस्म, रससिन्दूरम् प्रत्येकं ४ भागाः ।

यावता पिण्डीभूतं स्यात् तावत्परिमाणं घृतं ग्राह्यम् । शाणमात्रा गुटिकाः कार्याः । मात्रा—३–६ गुटिकाः । अयमेव भस्मरहितः लघुयोगराजगुग्गुलुः इति कथ्यते । (शा. सं.)

रक्तशुद्धियोगः

गन्धकं १ भागः, मरिचं १ भागः, त्रिफला ६ भागाः ।

आरग्वध–क्वाथेन सह पिबेत् । मात्रा—०।–०।। कर्षः ।

रजःप्रवर्तिनी वटी

ऐलेयकः, बोलः, सौभाग्यपुष्पम् , भर्जितहिंगु, कासीसं, जटामांसी, शुद्धमल्लः प्रत्येकं १ भागः ।

गुंजा प्रमाणा गुटिका कार्या । मात्रा—२–४ वट्य । (नूतन कल्पः)

रसकर्पूरम्

शु–पारदः, गैरिकचूर्णम् , इष्टिकाचूर्णम् , खटिकाचूर्णम् , स्फटिकाचूर्णम् , सैन्धवचूर्णम् , वल्मीकमृत्तिका, क्षारलवणं, भाण्डरंजकमृत्तिका प्रत्येकं ५ तोला ।

ऊर्ध्वपातनयन्त्रे पाचयेत् । मात्रा—१–२ गुंजा । (भा. प्र.)

रसगुग्गुलुः

शु–पारदः १० गुंजाः, शर्करा ३० गुंजाः, शु–गुग्गुलुः ४० गुंजाः, घृतम् १० गुंजाः ।

सर्वमेकत्र मर्दयेत्। विंशतिवटिकाः कार्याः। पूर्वम् दिनत्रयं यावत् प्रत्यहं वटिकात्रयं भक्षयेत्। शेषा एकादशवटीः प्रत्यहं एकवटीक्रमेण एकादशदिनेषु समापयेत्। एवम् सप्ताहद्वयम् यावत् औषधप्रयोगः। (भै. र.)

रसपर्पटी

पारदः १० तोला, शु-गन्धकं १० तोला।

पारदमूर्च्छनाः—कुमारीस्वरसः, त्रिफलाक्वाथः, चित्रकक्वाथः—प्रत्येकं सप्तवारम्।

पारदमर्दनं :— जयन्तीपत्रं, एरण्डपत्रं, आर्द्रकपत्रं, काकमाची। (भै. र.)

रससिन्दूरम्

शु-पारदः ५ तोला, शु-गन्धकं ५ तोला, वटांकुराणां ३ भावनाः।

वालुकायन्त्रे विधिवत् साधयेत्। (यो. र.)

रसायनचूर्णम्

गुडूची, गोक्षुरः, आमलकं प्रत्येकं १ भागः।

मात्रा—०।-०॥ कर्षः। अनुपानम्—दुग्धम्।

रसोनादिवटी

रसोनः, शुद्धगन्धकं, जीरकं, सैन्धवम्, शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली, घृतभर्जितहिंगु प्रत्येकं १ भागः।

निम्बुरसेन मर्दयेत्। मात्रा—३-६ गुंजाः। (वैद्यजीवन)

राजमृगाङ्करसः

पारदभस्म, स्वर्णभस्म, ताम्रभस्म प्रत्येकं १ तोला, मनःशिला, हरितालं, गन्धकं प्रत्येकं २ तोला।

एकीकृत्य वराटिकायां पूरयेत्। ततः अजाक्षीरेण टंकणम् पिष्ट्वा मुखं रुद्ध्वा गजपुटं दद्यात्।

मात्रा—१-२ गुंजे। अनुपानम्- पिप्पली मरिचं, क्षौद्रम्, घृतम्।

(भै. र.)

राढधूमादिवर्तिः

हिंगु, गृहधूमः बिड्लवणं, शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली, गुडः प्रत्येकं १ भागः। मूत्रेण संमर्द्य अंगुष्ठसमा वर्तिर्विधेया। (यो. र.)

रामबाणरसः

शु–पारदः, वत्सनाभः, लवङ्गम् , बलिः प्रत्येकं १ तोला, मरिचं २ तोला, जातिफलं ०।। तोला ।

तिन्तिडीफलस्वरसेन मर्दनम् । मात्रा—२–३ गुंजाः । अनुपानम्—क्षौद्रम् । (भै. र.)

रास्नादिक्वाथः

रास्ना, यष्टिमधुकं, अमृता, एरण्डमूलं, बला, गोक्षुरः ।

क्वाथः कार्यः । रुबुतैलेन मिश्रितः अन्त्रवृद्धि आशु हरति । मात्रा—१–२ कर्षः । (भै. र.)

लक्ष्मीनारायणः

शु–गन्धकं, शु–टंकणं, शु–वत्सनाभः, शु–हिंगुलं, कटुरोहिणी, अतिविषा, पिप्पली, शक्रयवः, अभ्रकभस्म, सैन्धवम् प्रत्येकं १ तोला । दन्तीमूलक्वाथस्य ३ भावनाः, त्रिफलाक्वाथस्य ३ भावनाः ।

मात्रा—६ गुंजाः । अनुपानम्—आर्द्रकस्वरसः, मधु । (भै. र.)

लक्ष्मीविलासरसः

शु–पारदः ५ तोला, शु–तालं ५ तोला, खर्पर २।। तोला, वंगभस्म, ताम्रभस्म, अभ्रकभस्म, कान्तलोहभस्म, कांस्यभस्म, गन्धकं प्रत्येकं ५ तोला । भृंगराजस्वरसस्य ३ भावनाः, कुलत्थक्वाथस्य ३ भावनाः; एला, जातिफलं, तेजपत्रम् , लवङ्गम्, यवानी, जीरकं, शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली, हरीतकी, बिभीतकं, आमलकं, प्रत्येकं समभागानां ३ भावनाः ।

मात्रा—०।।–१ वल्लः । (भै. र.)

लघुमालिनीवसन्तः

शुद्धखर्परः ८ तोला, श्वेतमरिचं ८ तोला, नवनीतं १। तोला । निम्बुस्वरस्य ४ भावनाः ।

मात्रा—२–४ गुंजाः । अनुपानम्—मधु वा दुग्धम् । (यो. र.)

लवणभास्करचूर्णम्

सामुद्रलवणम् १६ भागः, सौवर्चलम् १० भागः, बिड्लवणम् , सैन्धवम् , धान्यकं, पिप्पली, पिप्पलीमूलं, कृष्णजीरकं, पत्रम् , नागकेशरम् , तालीसपत्रम् , अम्लवेतसम् प्रत्येकं ४ भागाः, मरिचं, जीरकं, शुण्ठी प्रत्येकं २ भागाः, दाडिमम् ८ भागाः, त्वक् १ भागः, एला १ भागः । मात्रा—१।।–३ माषाः ।

लवंगादिवटी

लवंगम् ८ भागाः, बिभीतकमज्जा, पिप्पली, शक्करतिगाल प्रत्येकं ४ भागाः, कर्कटशृंगी २ भागौ, दाडिमफलत्वक् १ भागः, त्वक् २ भागौ, खदिरः १० भागाः, यष्टिमधुघनः २० भागाः, द्राक्षा १० भागाः, अर्कपुष्पं ५ भागाः, नवसादरः २ भागौ, कर्पूरम् १ भागः, सौभाग्यपुष्पं १ भागः।

मात्रा—२–१० वट्यः। (सि. यो. सं.)

लशुनतैलम्

लशुनम्, हरितालं, आमलकं प्रत्येकं ५ तोला, तैलम् १ प्रस्थः, दुग्धम् ४ प्रस्थाः, जलम् ४ प्रस्थाः।

विधि :— यथाविधि पाचयेत्।

प्रयोग :— कर्णं पूरणात् बाधिर्यं, कर्णशूलं, नादं च व्यपोहति।

(भै. र.)

लाक्षादितैलम्

तैलम् १ प्रस्थः (२५६ तोला), १/८ लाक्षाक्वाथः ४ प्रस्थाः (१०२४ तोला), दधिमस्तु ४ प्रस्थाः (१०२४ तोला)।

कल्कद्रव्याणि :— यष्टिमधु, निशा, मुस्ता, मूर्वा, कटुका, शतपुष्पा (मिसि र्वा), रास्ना, कर्पूरम् (वा चन्दनं), अश्वगंधा, देवदारु, निर्गुण्डीबीजं, कुष्ठं प्रत्येकं १ तोला। एतत् सर्वम् एकत्र कृत्वा तैलम् पाचयेत्।

प्रयोग :— विषमज्वरे, जीर्णज्वरे, राजयक्ष्मणि, कासे च, सगर्भायाः रक्तदर्शने, उरःक्षते च...सगर्भाणां गर्भपुष्टिकरम् अभ्यंगात्।

मात्रा— १–२ तोला; पानाभ्यंगार्थम्।

लीलाविलासरसः

शु-पारदः, गन्धकं, ताम्रभस्म, अभ्रकभस्म, अनारदानाचूर्णम्। हरीतकी, बिभीतकं, आमलकं एषां क्वाथस्य २५ भावनाः, भृंगराजस्वरसस्य २५ भावनाः।

मात्रा—५ गुंजाः। (यो. र.)

लोकनाथरसः

बुभुक्षितपारदः २ तोला, शु–गन्धकं २ तोला, कपर्दिका ८ तोला, सौभाग्यं १ तोला, गोदुग्धेन विमर्दयेत्, शंखखंडं ८ तोला।

मात्रा—६ गुंजाः। अनुपानम्—मरिचानि। (शा. सं.)

लोध्रासवः (मध्वासवः)

लोध्रः, शटी, पुष्करमूलम्, एला, मूर्वा, विडंगम्, हरीतकी, बिभीतकं, आमलकं, यमानी, चव्यं, प्रियंगुः, पूगीफलम्, इन्द्रवारुणी, किराततिक्तम्, कटुका, भार्गी, तगरम्, चित्रकमूलं, पिप्पलीमूलं, कुष्ठं, अतिविषा, पाठा, नखम्, मुस्ता, नागकेशरम्, तमालपत्रम्, मरिचं, इन्द्रयवः, लघु इन्द्रवारुणी प्रत्येकं १ भागः। जलम् १०२४ भागाः। क्वाथः, चतुर्थांश शेषः। मधु १२८ भागाः।

विधिवत् साधयेत्। मात्रा—१–२ कर्षः। (च. सं. चि. अ. ६)

लोहगर्भः

कासीसं, गोदन्ती प्रत्येकं १० तोला।

कुमारीस्वरसेन भावयित्वा पुटत्रयं दद्यात्। मात्रा—१–४ गुंजाः। अनुपानम् मधु, दुग्धम्।

लोहासवः

लोहचूर्णं, पिप्पली, मरिचं, शुण्ठी, हरीतकी, बिभीतकं, आमलकं, यवानिका, विडंगं, मुस्ता, चित्रकं प्रत्येकं १६ भागाः, धातकीकुसुमं ८० भागाः, मधु २५६ भागाः, गुडः ४०० भागाः, जलम् २०४८ भागाः।

एकत्र संयोज्य घृतभाण्डे विनिक्षिपेत्। मासैकम् संधातव्यम्। ततो जातरसम् भवति। मात्रा—१–२ कर्षः। (शा. सं.)

वरुणादिक्वाथः

वरुणत्वक्, अगस्तिकुसुमं, बिल्वः, अपामार्गः, चित्रकः, प्रत्येकं १ भागः, अग्निमन्थद्वयं (लघु–वृद्ध) २ भागौ, शिग्रुद्वयं (श्वेत–रक्त) २ भागौ, बृहतीद्वयं २ भागौ, सैरेयकत्रयं (श्वेत–नील–पीत) ३ भागाः, मूर्वा, मेषशृङ्गी, किराततिक्तम्, अजशृङ्गी, बिम्बी, करञ्जः, शतावरी प्रत्येकं १ भागः।

मात्रा—२–३ कर्षाः। (भै. र.)

वसन्तकुसुमाकररसः

सुवर्णभस्म २ तोला, रजतभस्म २ तोला, वंगभस्म, नागभस्म, कान्तलोहभस्म प्रत्येकं ३ तोला, रससिन्दूरं, अभ्रकभस्म, प्रवालभस्म, मुक्ताभस्म प्रत्येकं ४ तोला। गोदुग्धं, इक्षुस्वरसः, वासास्वरसः, श्वेतचन्दनक्वाथः, उशीरक्वाथः, सुगन्धबालाक्वाथः, हरिद्रास्वरसः, कदलीस्वरसः, कमलस्वरसः, मालतीकुसुमं प्रत्येकं ७ भावनाः, कस्तूरीजलं १ भावना। वल्लमितः सेव्यः, सिताज्यमधुसंयुतः।

(भै. र.)

वातविध्वंसनरसः

शु–पारदः, गन्धकं, ताम्रभस्म, लोहभस्म, सुवर्णमाक्षिकभस्म प्रत्येकं १ तोला, वत्सनाभं २ तोला, जयपालः १ तोला, शु–हरितालं १ तोला, त्रिकटु १८ तोला। निर्गुण्डीस्वरसः, सूरणद्रवः, अर्कदुग्धं, अग्निमन्थक्वाथः, भृंगराजरसः, धत्तूररसः प्रत्येकं ७ भावनाः।

मात्रा—२ रक्तिका। अनुपानम्—मरिचचूर्णम्। (बृ. नि. र.)

वासाघृतम्

वासाशाखा, वासादलं, वासामूलं प्रत्येकं ४० तोला, जलम् २४ शेर, घृतम् ६४ तोला, वासापुष्पकल्कः १६ तोला।

विधिः—वासायाः शाखाः, दलानि, मूलानि च संकुट्य चतुर्थांशः क्वाथः विधेयः। पश्चात् पुष्पकल्कं दत्वा घृतं पाचयेत्।

प्रयोगः—रक्तपित्ते, उरःक्षते, राजयक्ष्मणि, क्षयजे–क्षतजे च कासे।

मात्रा—१–२ तोला, मधुना सह। (यो. र.)

वृक्षाम्लघृतम्

प्रयोगः—उष्णं कृत्वा, हस्तपाददारी रोगे अभ्यंगः, ओष्ठस्फुटने अभ्यंगः।

वासादिक्वाथः

वासा, हरिद्रा, धान्यकम्, अमृता, भार्गी, पिप्पली, शुण्ठी, कंटकारिका प्रत्येकं १ भागः।

द्वितीयः पाठः

वासा, गुडूची, त्रिफला (पृथक्) भूनिम्बः, निम्बत्वक् प्रत्येकं १ भागः।

प्रयोगः—कामला रक्तपित्तादौ।

मात्रा—२–४ कर्षः।

वासावलेहः (बृहत्)

बासापत्रम् ४०० तोला, जलम् ८००० तोला, २०० तोला जले शेषे, क्वाथं गालयित्वा शर्करा ४०० तोला दत्वा अवलेहवत् कार्यम्। निम्नानां च प्रक्षेपो विधेयः।—

प्रक्षेपद्रव्याणि :– त्वक्, एला, नागरं, पिप्पली, धान्यकं, तालीसपत्रम्, पिप्पलीमूलं, वंशरोचना, कंपिल्लकं, तमालपत्रम्, नागकेसरम्, मरिचं, चविका, जीरकं, नागरमुस्तकं, कट्फलं, कुष्ठं प्रत्येकं २ तोला, मधु १६० तोला।

प्रयोग :– क्षये, कासे, रक्तपित्ते, उरःक्षते, श्वासे, पार्श्वशूले, अरुचौ, ज्वरे च।

मात्रा—१ तोला, अनुपानं—उष्णजलं, दुग्धम्। (भै. र.)

वासाहरीतकीअवलेहः

वासायाः मूलानि पल्लवानि च ४०० तोला, जलम् ३२०० तोला।

विधि :—०। शेषं क्वाथं कृत्वा तस्मिन् हरीतकीचूर्णं २५६ तोला, चीनशर्कराचूर्णं ४०० तोला आवाप्य लेहवत् साधयेत्। शीते तस्मिन् अष्टपलं क्षौद्रम्।

प्रक्षेपद्रव्याणि :—वंशरोचनं १६ तोला, पिप्पलीचूर्णं २ तोला, चातुर्जातं ४ तोला, शृंगीचूर्णं ४ पलानि प्रक्षिपेत्।

प्रयोग :—कासे, क्षये, श्वासे, रक्तपित्ते प्रतिश्याये च युज्यते।

मात्रा—०॥ तोला, गोदुग्धेन उष्णेन। (सि. यो., ग. नि.)

विडंगाद्यं तैलम्

विडङ्ग, स्वर्जिका, दन्तीमूलक्लकः, हिंगु प्रत्येकं १ तोला, सार्षपं तैलम् १६ तोला, गोमूत्रम् ६४ तोला।

विधिवत् तैलं साधयेत्। तेन कृमिजन्यशिरोरोगे नासाकृमिषु नस्यम्।

(यो. र.)

विषगर्भतैलम्

धत्तूररसः ४० तोला, तैलं ४० तोला, कांजिकं २५६ तोला।

कल्कद्रव्याणि :—तगरं ७॥ तोला, वचा ७॥ तोला, मनःशिला वा आमलकं २। तोला, मरीचं २। तोला, वत्सनाभं १॥ तोला, कृष्णधत्तूरबीजं ६॥। तोला, सैन्धवं ६॥। तोला।

सर्वं एकत्र कृत्वा तैलं पाचयेत्।

प्रयोग :– बाह्यप्रयोगार्थमेव। पक्षाघातं, हनुस्तंभं, मन्यास्तंभं, तीव्रवातव्याधिं, कटिग्रहं, आमवातं, सर्वांगग्रहणं, पृष्ठ–त्रिक–शिरःकम्पं च नाशयेत्। (यो. र.)

विषतिन्दुकवटी

शु–विषतिन्दुकं ५ तोला, मरिचम् ५ तोला। विशालारसस्य १ भावना। रक्तिकाद्वयोन्मिता गुटिका कार्या।

मात्रा—१–२ गुटिके। अनुपानम्–जलम्। (सि. भे. म.)

विषमज्वरघ्नी वटी

मामज्जकघनः, मरिचं, कुबेराक्षः प्रत्येकं ५ तोला।

वल्लप्रमाणां गुटिकां कारयेत्।

मात्रा—१–४ गुटिकाः। अनुपानम्–उष्णजलम्।

वृद्धगंगाधरचूर्णम्

मुस्ता, अरलुः, शुण्ठी, धातकी, लोध्रः, उशीरम्, आम्रबीजम्, प्रतिविषा, लज्जालुः प्रत्येकं १ भागः।

मात्रा—२–४ माषाः। (शा. सं.)

वृद्धिबाधिकावटी

शु–पारदः, शु–गन्धकं, लोहभस्म, वंगभस्म, ताम्रभस्म, कांस्यभस्म, शु–तालं, शु–तुत्थं, शंखभस्म, कपर्दिकाभस्म, शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली, हरीतकी, बिभीतकं, आमलकं, चव्यं, विडंगम्, वृद्धदारकः प्रत्येकं १ तोला। (भै. र.)

वेदनान्तकरसः

अहिफेनं, कर्पूरम्, पारसीकयवानी, हिंगुलं, विजया प्रत्येकं १ भागः।

विजयाक्वाथेन मर्दयेत्। मुद्गाभा गुटिका कार्या।

मात्रा—१–२ वटी। (र. त.)

शतधौतं घृतम्

गो–महिष्यादीनां घृतं १० तोला, जलं सुस्वच्छं प्रमाणपर्यंतम्।

विधि:—सुस्वच्छे वंगलिप्ते भाजने घृतं आस्थाप्य जलं स्तोकं स्तोकं संमेल्य दृढहस्तेन मर्दयेत्, पुनः पुनः जलं च परिवर्तयेत्।

प्रयोग:—अग्निदग्धे, विसर्पे, पैत्तिकव्रणे, नेत्रदाहे, शिरोदाहे, ज्वरादीनां दाहे च अभ्यंगार्थं प्रयुज्यते। (चरक)

शरपुंखलवणम्

शरपुंखः, सैन्धवम् प्रत्येकं १ भागः।

मृत्पात्रे निधाय पुटं दद्यात्। मात्रा—४–८ गुंजाः।

शंखवटी

पिप्पलीमूलं, चित्रकं, दन्तीमूलं, पारदः, गन्धकं, पिप्पली, यवक्षारः, सर्जक्षारः, टंकणं प्रत्येकं १ तोला, पंचलवणं २ तोला, मरिचं, शुंठी, शु–वत्सनाभः, अजमोदा, गुडूचो, हिंगु, तिन्तिडिकाक्षारः प्रत्येकं १ तोला, शंखभस्म २ तोला।

अम्लद्रवेण सम्भाव्य गुंजा द्वयोन्मिता वटी कार्या। अम्लदाडिमतोयेन भक्षयेत्।

(भै. र.)

शिलासिन्दूरम्

शुद्ध मनःशिला ५ तोला, शुद्ध पारदः १० तोला, शु–बलिः १० तोला, कुमारीस्वरसस्य १ भावना। वालुकायन्त्रे क्रमात् पचेत्।

मात्रा—१–२ गुंजा, अनुपानम्—मधु। (आ. नि. मा.)

शिवाक्षारपाचनचूर्णम्

हरीतकी, सजिकाक्षारः, हिंग्वष्टकचूर्णम् प्रत्येकं १ भागः।

मात्रा– ०॥–१ कर्षः। (नूतन कल्पः)

शीतभंजी रसः

पारदः, गन्धकं, वत्सनाभः, ताम्रभस्म, शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली प्रत्येकं ५ तोला, चित्रकमूलक्वाथस्य ३ भावनाः, आर्द्रकस्वरसस्य ७ भावनाः, ताम्बूलस्वरसस्य ३ भावनाः। मात्रा—१–२ गुंजा। अनुपानम्— आर्द्रकस्वरसः, मधु। (भै. र.)

शीतांशुरसः

त्रिकटु ५ तोला, शु–मनःशिला ५ तोला।

निम्बुस्वरसेन रक्तिकामिता वटी कार्या। मात्रा—१–२ रक्तिका क्षौद्रेण।

(संमेलनपत्रिका)

श्वासकासचिंतामणिः

कज्जली (समगुणा) २ तोला, सुवर्णमाक्षिकभस्म १ तोला, स्वर्णभस्म १ तोला, मुक्तापिष्टिः ०॥, शुद्धबलिः १ तोला, अभ्रकभस्म २ तोला, लोहभस्म ४ तोला।

कंटकारी, छागं पय यष्टिमधुक्वाथः, ताम्बूलपत्रस्वरसः प्रत्येकं ७ भावनाः।

(भै. र.)

श्वासकुठाररसः

पारदः, गन्धकं, वत्सनाभः, टंकणं, मनःशिला प्रत्येकं १ तोला, मरिचं ८ तोला, त्रिकटु ३ तोला, ताम्बूलस्वरसस्य १ भावना।

श्वासचिंतामणिः

कज्जली (द्विगुणा) १।। तोला, लोहभस्म २ तोला, अभ्रकभस्म १ तोला, सुवर्णमाक्षिकभस्म ०।। तोला, मुक्तापिष्टिः ०। तोला, स्वर्णभस्म ०। तोला। कंटकारी, आर्द्रकस्वरसः, छागं पयः, यष्टिमधुक्वाथः प्रत्येकं १ भावना।

(भै. र.)

षड पानीयः

मुस्ता, पर्पटकः, उशीरः, चन्दनं, उदीच्यं, शुंठी प्रत्येकं १ भागः।

जलं विधिवत् साधयेत्। शृतशीतं जलम् पिबेत्।

(चरकसंहिता चि. अ. ३)

षड्धरणो योगः (चूर्णम्)

चित्रकम्, इन्द्रयवः, पाठा, कटुका, अतिविषा, अभया प्रत्येकं १ भागः। सप्तरात्रं सुखाम्बुना पेयः। (सुश्रुत चि. अ.)

षड्बिन्दुतैलम् (महा)

हरीतकी, बिभीतकं, आमलकं, द्राक्षा, खदिरत्वक्, पाठा, विडंगम्, यष्टिः कुसुंभम्, विदारी, अश्वगंधा, शतावरी, एला, त्वक्, तमालपत्रम्, देवदारु, सैन्धवम्, नागरमुस्ता, करंजबीजं, रास्ना, तगरम्, हरिद्रा, कृतमालगर्भः, एरण्ड-मूलं, चन्दनं, वालकं, आवर्तनी, धन्वयासः, वचा, भल्लातकं, कमलं, चित्रकं, शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली, गुडूची, पिप्पलीमूलं, मंजिष्ठा, रक्तचन्दनं प्रत्येकं १ तोला। एषां कल्कं भृंगराजजलं ८०० तोला, मेषीदुग्धं ८०० तोला, तैलम् १०० तोला एकत्र पाचयेत् मंदानलेन।

प्रयोग :—मुखरोगं, नेत्र-नासा गलरोगान्, नक्तान्ध्यं, शिरःशूलं, पीनसं, मुखशूलं इत्यादीन् नाशयति।

मात्रा — ६ बिन्दवः, नस्यार्थे लेपार्थे वा। (आ. भि.)

सप्तामृतलोहः

मधुयष्टिः, हरीतकी, बिभीतकः, आमलकम्, लोहभस्म, घृतम्, मधु प्रत्येकं १ भागः।

मात्रा—२–४ गुंजाः। (र. सा. सं.)

समीरपन्नगः

पारदः, गन्धकम्, मल्लः, हरितालम् प्रत्येकं १ तोला।

तुलसीस्वरसेन मर्दनम्। वालुकायन्त्रे पचेत्।

मात्रा – १–२ गुंजा। (र. चं)

सर्पगंधाघनवटी

सर्पगन्धा १० रतल, खुरासानी यवानी (पत्र वा बीज) २ रतल, जटामांसो १ रतल, विजया १ रतल।

अष्टगुणे जले पचेत्, अष्टमांशं अवशेषयेत्। वस्त्रपूतं कृत्वा पुनः लेहवत् साधयित्वा तस्मिन् १०–२० तोला पिप्पलीमूलचूर्णम् निक्षिपेत्। गुंजाद्वयमितां गुटिकां कारयेत।

मात्रा—२–३ गुटिकाः, दुग्धेन वा जलेन। (सि. यो. सं.)

संग्राहकचूर्णम्

बिल्वमज्जा, मोचरसः, दाडिमपुष्प, मायुफल, तुख्महम्माज, जुफ्तबलूत, छोटीमांई, हब्बुल्लास, आम्रबीजास्थि, जम्बूबीजास्थि प्रत्येकं १ भागः।

मात्रा १॥–३ माशाः। अनुपानम् दधि। (सि. यो. सं.)

संजीवनी वटी

विडंगम्, शुण्ठी, पिप्पली, हरीतकी, बिभीतकं, आमलकम्, वचा, गुडूची, भल्लातकः, वत्सनाभः प्रत्येकं १ भाग।

गोमूत्रेण पेषयेत्। गुंजाभा वटिका कार्या। आर्द्रकजै रसैः दद्यात्।

(शा. सं.)

संधिवातहरवटी

हिंगुलः, बोलः, गुग्गुलुः, वृद्धदारुः प्रत्येकं १ भागः।

रसोनकल्के वा निर्गुण्डीजले मर्दयेत्। (किंचित् परिवर्तिता)

संशमनी वटी

गुडूचीघनस्य गुंजाद्वयप्रमाणां गुटिकां कारयेत्। मात्रा—४–२० गुटिकाः। अनुपानम्—जलम्।

सितोपलादिचूर्णम्

शर्करा १६ भागाः, वंशलोचनम् ८ भागाः, पिप्पली ४ भागाः, एला २ भागाः, त्वक् १ भागः।

मात्रा—४–१२ गुंजाः। (चरक, चि. अ. १)

सुदर्शनचूर्णम्

हरीतकी, बिभीतकं, आमलकं, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, कण्टकारिका, बृहती, शटी, शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली, ग्रन्थिकं, मूर्वा, गुडूची, धन्वयासः, कटुका, पर्पटः, मुस्ता, त्रायमाणा, बालकं, यवानी, इन्द्रयवः, भार्गी, शिग्रुबीजम्, सुराष्ट्रजा (स्फटिका), वचा, त्वक्, पद्मकं, उशीरः, चन्दनं, अतिविषा, बलामूलम्, शालिपर्णी, पृश्निपर्णी, विडंगं, तगरम्, चित्रकं, देवदारु, चव्यम्, पटोलपत्रम्, यवतिक्ता (कालमेघ), नक्तमालफलमज्जा, देवकुसुमम्, वंशलोचनं, पुण्डरीकं, काकोली, पत्रकं, जातिपत्रकं, तालीसपत्रम् प्रत्येकं १ भागः, किराततिक्तम् २५ भागाः।

(शा. सं.)

सुरमावटी

शु—सौवीरांजनम् निम्बुनीरेण मर्दयित्वा मुद्गनिभा गुटिका कार्या।

मात्रा—१–३ गुटिकाः, अनुपानम्—निम्बुरसः वा जलम्।

सुवर्णबंगम्

शु-वंगं, शु-पारदः, शु-गन्धकं प्रत्येकं ५ तोला, नरसारम् ४ तोला, सूर्यक्षारः १ तोला। सैन्धवजलेन प्रक्षालनम्; बालुकायन्त्रे क्रमात् पचेत्।

मात्रा—१–२ गुंजा, अनुपानम्—नवनीतशर्करा।

सुवर्णवसंतमालती

सुवर्णभस्म १ तोला, मुक्ताभस्म २ तोला, हिंगुलं ३ तोला, मरिचं ४ तोला, खर्परम् (यशदभस्म) ८ तोला, नवनीतं २ तोला। निम्बुनीरेण मर्दयेत् यावत् स्नेहः व्रजति विलयम्।

मात्रा—१–२ गुंजा, अनुपानम्—मागधी, क्षौद्रम्। (भै. र.)

सूतशेखररसः

शु—पारदः, सुवर्णभस्म, टंकणं, शु—वत्सनाभः, अभ्रकभस्म, शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली, कनकबीजं, शु-बलिः, ताम्रभस्म, त्वक्, तेजबलं, एला, नागकेशरम्, शंखभस्म, बिल्वमज्जा, कर्पूरम् प्रत्येकं १ तोला, भृंगराजस्वरसस्य १ भावना।

मात्रा—२ गुंजे, अनुपानम्—आर्द्रकं+मधु।

स्नुहीघृतम्

दुग्धम् १०२४ तोला, सुधाक्षीरम् ९६ तोला।

एतयोः दधि कृत्वा विमथ्य त्रिवृताकल्कं आवाप्य घृतं पाचयेत्। त्रिवृताकल्कः २४ तोलकमितो ग्राह्यः अस्मिन् पाकविधौ।

अथवा

घृतं ६४ तोला, दुग्धम् ५१५ तोला, स्नुक्क्षीरम् ४ तोला, त्रिवृता २४ तोला। यथाविधि पाकः। मात्रा— ०।–०॥ तोला पानार्थम्।

प्रयोग :—गुल्मानां, गरदोषाणां, उदरिणां च हितम्। (चरक)

स्मृतिसागररसः

शु–पारदः, शु–गन्धकं, शु–हरितालं, शु–मनःशिला, ताम्रभस्म प्रत्येकं १ तोला। वचायाः २१ भावनाः, ब्राह्म्याः २१ भावनाः, कटभीबीजतैलस्य १ भावना।

मात्रा—१–२ गुंजा। अनुपानम्—घृतम्। (यो. र.)

स्वर्णपर्पटी

शु–पारदः ५ तोला, स्वर्णपत्रम् १। तोला, शु-बलिः ५ तोला।

मात्रा—१ रक्तिका। अनुपानम्—मरिचम्+मधु। (भै. र.)

स्वादिष्ठ विरेचनचूर्णम्

शुद्ध गन्धकं, यष्टिमधु, मिशिः प्रत्येकं ५ भागाः, मार्कण्डी १५ भागाः, शर्करा ३० भागाः। मात्रा—३–६ माषाः। (आ. नि. माला)

हरीतक्यादि मल्लवटी

हरीतकी, शुद्ध मल्लः, मरिचं प्रत्येकं १ तोला। सर्षपतुल्यां वटीं कारयेत्।

मात्रा–१–२ गुटिका, अनुपानम्–गोदुग्धम्।

(सि. भै. म. ज्वराधिकार)

हिंगुकर्पूरवटिका

घृतभर्जित हिंगु, कर्पूरम् प्रत्येकं १ भागः, कस्तूरी १/८ भागः।

(हीरा हिंग ग्रहीतव्या) मात्रा—१ गुंजा। (सिद्धयोगसंग्रह)

हिङ्ग्वष्टकचूर्णम्

हिंगु, शुण्ठी, मरिचम्, पिप्पली, अजमोदा, जीरकं, कृष्णजीरकं, सैन्धवम् प्रत्येकं १ भागः।

मात्रा—२–४ माषाः। (वैद्यजीवन)

हृदयवातचिंतामणिः

शु–पारदः, शु–गन्धकं, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, वंगभस्म, शिलाजतु, अम्बरं, सुवर्णभस्म, मुक्तापिष्टिः प्रत्येकं १ तोला, रौप्यभस्म ०॥ तोला।

चित्रकमूलक्वाथस्य १ भावना, भृंगराजस्वरसस्य १ भावना, अर्जुनत्वक्क्वाथस्य ७ भावनाः। मात्रा—१ गुंजा। अनुपानम्—मधु-बलामूलकषायः। (भै. र.)

हेमगर्भपोट्टलीरसः

पारदः ४ तोला, सुवर्णपत्रं ४ तोला, शुद्ध बलिः १२ तोला, मुक्ताचूर्ण १६ तोला, शंखचूर्णम् २४ तोला, सौभाग्यं १ तोला।

निम्बुस्वरसेन मर्दनम्; गजपुटे पचेत्। (शा. सं.)

अवशिष्टाः पाठाः

असनादिगणः (अष्टांगहृदयम्)

असनः, तिनिशः, भूर्जः, अर्जुनः, पूतिकरंजः, खदिरः, कदरः, शिरीषः, शिंशपा, मेषशृंगी, चन्दनत्रयं, तालः, पलाशः, अगुरु, शांकं, शालः, पूगः, धवः, शक्रयवः, छागकर्णः, अश्वकर्णः प्रत्येकं १ भागः। क्वाथमात्रा—१-२।। कर्षः।

क्षारगुटिकाः

सुधाकाण्डम् १६ तोला, लवणत्रयम् १२ तोला, वार्ताकी १६ तोला, अर्कः ३२ तोला, चित्रकं ८ तोला।

अन्तर्धूमम् दाहयेत्। वार्ताकी रसेन गुटिका कार्याः। (चरक, चि अ. १५)

क्षारतैलम्

बालमूलककल्कः, शुण्ठी, हिंगु, अपामार्गक्षारः, शतपुष्पा, वचा, कुष्ठं, देवदारु, शिग्रुपत्रकल्कः, रसाञ्जनम्, सौवर्चलं, यवक्षारः, स्वर्जिका, सैन्धवम्, उषरः, भूर्जग्रन्थि, बिडं, मुस्तं प्रत्येकं २ तोला, मधुशुक्तं, ८ प्रस्थाः, मातुलुंगफलरसः ८ प्रस्थाः, कदलीस्वरसः ८ प्रस्थाः, तैलम् २ प्रस्थौ।

विधि :—तैलं पाचयेत्; तेन कर्णपूरणम्।

प्रयोग :—कर्णशूलम् बाधिर्यं स्रावान् हन्ति। (भै. र.)

ग्रहणीक्षारः

त्रिफला, कटभी, चव्यं, बिल्वः, अयोरज (लौहचूर्णम्), रोहिणी, कटुकी, मुस्ता, कुष्ठम्, पाठा, हिंगु, यष्टिमधु, मुष्ककः, यवक्षारः, त्रिकटु, वचा, विडंग, पिप्पलीमूलं, स्वर्जिका, निम्बः, चित्रकं, मूर्वा, अजमोदा, इन्द्रयवः, गुडूची, देवदारु प्रत्येकं १ तोला, लवणपंचकं प्रत्येकं ५ तोला, दधि ४८ तोला, तैलघृते ४८ तोला।

तत् सर्वम् एकीकृत्य अन्तर्धूमं दहेत्। मात्रा—८-२४ गुंजाः। (चरक)

चन्दनासवः

श्वेतचन्दनं, बालकं (उशीरम्), मुस्ता, गाम्भारी, नीलकमलं, प्रियंगुः, पद्मकं, लोध्रः, मंजिष्ठा, रक्तचन्दनं, पाठा, किराततिक्तम्, न्यग्रोधः (वटः),

पिप्पली, शठी, पर्पटकः, यष्टिमधु, रास्ना, पटोलं, कांचनारः, आम्रत्वक्, मोचरसः प्रत्येकं ४ तोला, धातकीपुष्पं ६४ तोला, द्राक्षा ८० तोला, जलम् ६४ शरावाः, शर्करा ४०० तोला, गुडः २०० तोला।

चूर्ण द्रव्याणि संचूर्ण्य सर्वं स्निग्धे भाण्डे निक्षिप्य मासं यावत् स्थापयेत्। संहितं विज्ञायापूय च यथाशक्ति पिबेत्। मात्रा—१–२॥ कर्षः। (भै. र.)

धान्यवलेहः

तुगाक्षीरी, विश्वभेषजं, यष्टिमधु प्रत्येकं २ पलौ, पिप्पली १ प्रस्थः, द्राक्षा १ प्रस्थः, शर्करा ०॥ तोला, धात्रीफलरसः १ द्रोणः। मात्रा—१–२ कर्षः। (चरक)

भूनिम्बाद्यं चूर्णम्

भूनिम्बः, इन्द्रयवः, शुण्ठी, मरिचं, पिप्पली, मुस्ता, तिक्ता (कटुका) प्रत्येकं १ भागः, चित्रकं २ भागौ, वत्सकत्वक् १६ भागाः।

मात्रा—२ माषाः। (चरक)

भैरवरसः

पारदः, गन्धकं, वत्सनाभं, टंकणं, कपर्दकं, मरिचं प्रत्येकं समभागम्।

आर्द्रकजलेन भावयित्वा गुंजार्द्धमिता वटीः कुर्यात्। मात्रा—१–२ वट्यः। (भै. र.)

मण्डूरवटकः

त्रिफला, त्रिकटुकं, चव्यं, पिप्पलीमूलं, चित्रकं, देवदारु, सुवर्णमाक्षिकं, दारुहरिद्रा, मुस्ता, विडंगं प्रत्येकं १ भागः, मण्डूरम् १४ भागाः, गोमूत्रम् अष्टगुणम्।

मात्रा—३–१२ गुंजाः। अनुपानम्—तक्रम्। (शार्ङ्गधर)

वीरतर्वादिगणः

वीरतरुः, सहचरद्वयं, दर्भः, वृक्षादनी, गुन्द्रा, नलः, कुशः, काशः, अश्मभेदकः, अग्निमन्थः, मोरटः, वसुकः, अपामार्गः, श्योनाकः, कुरण्टिका, इन्दीवरम्, सुवर्चला, श्वदंष्ट्रा प्रत्येकं १ भागः। क्वाथमात्रा—१–२॥ कर्षः। (सुश्रुत)

सारस्वतं चूर्णम्

कुष्ठं, अश्वगन्धा, सैन्धवम्, अजमोदा, जीरकं, कटुरोहिणी, पाठा, शंखपुष्पी, प्रत्येकं समभागाः; वचा सर्वसमा। ब्राह्मीरसस्य ३ भावनाः।

मात्रा—१ माषः। अनुपानम्—मधुघृतम्। (भै. र.)

✫

आतुरोपयुक्त आहार-कल्पनाएँ

विभिन्न रोगोंमें, रोगमुक्तिके अनन्तर एवं पंचकर्मके पश्चात् विशिष्ट आहार देना आवश्यक होता है। आयुर्वेदमें वर्णित आहार-कल्पनाओंको सामान्यतया दो वर्गोंमें विभक्त किया जा सकता है : (१) **कृत** (२) **अकृत**। शुण्ठी, मरिच आदि कटुरस द्रव्यों, घृत आदि स्नेह द्रव्यों तथा लवणसे साधित अर्थात् इनसे छोंकी हुई कल्पनाको कृत कहते हैं तथा इतरको अकृत[1]।

आतुरोपयुक्त कल्पनाओंके अन्य दृष्टिसे पुनः दो विभाग किये जाते हैं- (१) केवल आहार द्रव्य-साधित मण्ड-पेया आदि कल्पनाएं; (२) आहार द्रव्यों तथा रोगानुसार तत्-तत् औषध द्रव्यके योगसे साधित कल्पनाएं[2]।

यहाँ प्रसिद्ध आहार द्रव्य-साधित कल्पनाएं दी जाती हैं।

पानीय :—

औषध द्रव्य......तोला १

जल............तोला ६४

क्वाथ विधिसे अर्धावशिष्ट क्वाथ बना, कपड़ेसे छान, ठंडाकर रोगीको पानार्थ दें। पानीय अथवा औषधसिद्ध जल (षडङ्ग-पानीय आदि)का उपयोग रोग-विशेषमें पीनेके लिये होता है; साथ ही कोई आहार कल्पना औषध-सिद्ध बनानी हो तो औषधका पानीय बनाकर, जलके स्थान पर इस पानीयका उपयोग कल्पना बनानेमें किया जाता है।

मण्ड :—

धान्य......भाग १

जल........भाग १४

क्वाथ विधिसे लगभग १५ मिनट पकाएँ। धान्य अच्छी तरह पक जाने पर ऊपरका द्रव भाग नितार लें। इस द्रव भागको मण्ड कहते हैं। इस प्रकार चावल, यव, लाज (खील, धाणी) आदिका मण्ड बनाया जाता है। यवको सेककर उसका मण्ड बनाएँ तो उसे वाट्य-मण्ड कहते हैं।

१—अस्नेह लवणं सर्वम् **अकृतं** कटुकैर्विना।
विज्ञेयं लवणस्नेह-कटुकैः संयुतं **कृतम्**॥ (सु. सू. अ. ४६)

२—अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि यवागूः विविधौषधाः।
विविधानां विकाराणां तत्साध्यानां निवृत्तये॥ (च. सू. र.)

उक्त विधिसे बनाई हुई आहार कल्पनाओंमें अन्न और जलके प्रमाणके भेदके अनुसार नीचे लिखी कल्पनाएं बनती हैं—मण्ड, पेया, विलेपी, यवागू। मण्डका विधान ऊपर दिया है।

पेया :—

यवकूट धान्य......भाग १

जल...............भाग ४

धान्य जलके साथ पककर एकजीव हो जाय और कल्पना पीने योग्य स्थितिमें रहे तब उतारकर ठंडाकर पिलाए। इस प्रकार चावल, साबुदाना, यवकूट गेहूँ आदिकी पेया बनाई जाती है।

विलेपी :—

यवकूट धान्य......भाग १

जल...............भाग ४

धान्य पककर एकरस हो जाय और कल्पना चम्मच आदिमें चिपटे ऐसी स्थितिमें आ जाय तब उतारकर उपयोगमें लाए।

यवागू :—

धान्य और जलका प्रमाण विलेपीके समान ही लें परन्तु कल्पना कुछ गाढ़ी रहे वहाँ तक पाक करें तो इसे यवागू[1] कहते हैं।

स्मरण रहे, यवागू शब्द ऊपर कही विशिष्ट कल्पनाके लिये प्रयुक्त होता है; साथ ही मण्ड, पेया आदि कल्पनाओंके लिये इस संज्ञाका सामान्यतया भी उपयोग होता है।

केवल धान्यसे बनी विलेपी अथवा यवागूके लिये दलिया आदि शब्द भाषामें प्रचलित हैं। चावलके साथ मूँग आदि शिम्बी धान्य मिलाकर जो कल्पना बनती है उसे भाषामें खिचड़ी कहा जाता है।

मण्ड पेया आदि द्रव्य औषध-सिद्ध करने हों तो, जैसा कि ऊपर कहा, पहले विधिवत् औषधका क्वाथ बनाकर उस क्वाथका जलके स्थान पर उपयोग करें।

यूष :—

शिम्बी धान्य (मुद्ग आदि) तोला ४

जल.....................तोला १६

१-यवागूः बहु सिक्था स्यात् विलेपी विरलद्रवा। (सु. सू. ४६)

क्वाथ विधिसे पकाएं। चतुर्थांश जल शेष रहने पर छानकर यथावश्यक शुण्ठी आदि द्रव्यों तथा घृतसे छोंककर उपयोग करें।

चावल आदि शूक धान्योंसे जैसे मण्ड पेया आदि यवागू कल्पनाएं बनती हैं ऐसे मूँग, मसूर, मोठ आदि शिम्बी धान्योंसे यूष बनता है। यूष औषधसिद्ध बनाना हो तो औषध वीर्य-भेदसे एक, दो या चार तोले लें; तथा जल ६४ तोले। उसमें धान्य चारसे आठ तोला डालकर चतुर्थांश या अष्टमांश शेष क्वाथ करें।

तण्डुलोदक :—

यवकूट चावल......तोले ४
जल..............तोले ३२

लगभग चार घण्टे भिगोकर कपड़ेसे छान लें। तण्डुलोदकका प्रयोग अतिसार, रक्तप्रदर आदिमें अनुपानतया होता है।

मांसरस :—

मांस अथवा यकृत......तोले १६, २४ या ३२
जल..................तोले ६४

रोगीके बलाबलके अनुसार जितना मांस लेना अभीष्ट हो उतना उपर्युक्त प्रमाण लेकर मांसका सार भाग जलमें आ जाय वहां तक पकाएं। पश्चात् कपड़ेसे छान लें। रोगीका अग्निबल उत्तम हो तो छाने विना ही खरलमें अच्छी तरह घोटकर उपयोग करें।

मांसरसमें यथावश्यक लवण, रसोन, शुण्ठो, जीरक आदि संस्कारक द्रव्य तथा घृत आदि स्नेह द्रव्योंकी योजना करें।

क्षीरपाक :—

यवकूट औषध द्रव्य...तोला १
दूध...............तोले १५
जल...............तोले १५

जल उड़ जाय तब तक पकाएं। पश्चात् कपड़ेसे छानकर उपयोग करें। औषध द्रव्यका उक्त मान अर्जुन, अशोक आदि मृदु द्रव्योंके क्षीरपाकके लिये है। रसोन, पिप्पली, भल्लातक आदि तीक्ष्ण द्रव्य अल्प मात्रामें लेना चाहिये। उनके क्षीरपाकमें भी दूध १५ तोला लेना चाहिये।

तक्र :—

दधि.........भाग १
जल.........भाग ०॥

मधुर, अम्ल और कषाय रसवाला दही और जल उक्त प्रमाणमें ले, मथानीसे मथकर मक्खन निकाल लें। इस प्रकार जो न अति सान्द्र न अतिद्रव द्रव्य प्राप्त होता है उसको तक्र कहते हैं।

उदश्वित् :—

दधि.........भाग १
जल.........भाग ०॥

तक्रके समान प्रमाणमें ही दही और जल लेकर उन्हें मथ लिया जाय तो इस कल्पको उदश्वित् कहते हैं।

घोल :—

दहीमें जल न डाला जाय और मक्खन भी न निकाला जाय, किन्तु मथानीसे अच्छी तरह मथ दिया जाय, उसको घोल कहते हैं।

मस्तु (सर) :—

दहीके ऊपरके नितारे हुए जलको मस्तु अथवा सर कहते हैं।

आमिक्षा :—

उबाले हुए दूधमें दही, निम्बूका रस आदि अम्ल द्रव्य डाल, दूधको फाड़ कपड़ेमें बांधकर थोड़ी देर रखनेसे कपड़े पर जो गाढ़ा पदार्थ रहता है उसे आमिक्षा कहते हैं। हिन्दीमें इसे पनीर या छेना तथा बंगालीमें छाना कहते है, जिससे रसगुल्ला बनाया जाता है।

मोरट :—

उक्त प्रकारसे फाड़े हुए दूधसे पनीर पृथक् होनेपर नीचे जो जल शेष रहता है उसे मोरट कहते हैं। कभी कभी मस्तु शब्दका प्रयोग इसके लिये भी होता है।

पानक :—

आम, फालसा, इमली, मुनक्का, पिण्ड खजूर आदिके अधपके, खट्टे या पके हुए मीठे फलोंको सोलह गुने ठण्डे जलमें हाथसे खूब मसलकर कपड़ेसे छान लें। पश्चात् उसमें यथारुचि मिसरी तथा काली मिर्चका चूर्ण मिलावें। इस कल्पनाको पानक कहते हैं। इसमें इलायची, लौंग आदि अन्य सुगन्धि द्रव्योंका चूर्ण तथा जलमें पीसा हुआ केसर भी मिलाया जाता है।

जलमें निम्बू आदि खट्टे फलोंका रस और खाण्ड मिलानेसे जो कल्पना बनती है उसको भी पानक (शिकंजबीन) कहते हैं।

☆

मान-परिभाषा

चरकोक्त मान			मागध मान			प्रचलित मान	
४	यव	=	१	अंडक	=	२	रत्ती
४	अंडक	=	१	माषक	=	१	माशा
३	माषक	=	१	शाणक	=	३	माशा
२	शाणक	=	१	द्रंक्षण	=	६	माशा
२	द्रंक्षण	=	१	कर्ष	=	१	तोला
२	कर्ष:	=	१	पलार्ध	=	२	तोला
२	पलार्ध	=	१	पल	=	४	तोला
२	पल	=	१	प्रसृत	=	८	तोला
२	प्रसृत	=	१	कुडव	=	१६	तोला
२	कुडव	=	१	मानिका	=	३२	तोला
२	मानिका	=	१	प्रस्थ	=	६४	तोला
४	प्रस्थ	=	१	आढक	=	२५६	तोला
४	आढक	=	१	द्रोण	=	१०२४	तोला
२	द्रोण	=	१	शूर्प	=	२०४८	तोला
२	शूर्प	=	१	द्रोणी	=	४०८६	तोला
१००	पल	=	१	तुला	=	१०	सेर
३२	शूर्प	=	१	वाह	=	१६३८	सेर ३६ तोला

तुलनात्मकमान

१	रत्ती (गुंजा)	=	२	ग्रेन[1]
१	माशा	=	१५	ग्रेन (१ ग्राम)
४	माशे	=	१	ड्राम (६० ग्रेन)
२॥	तोले	=	१	औंस (८ ड्राम)
१	सेर	=	१६	औंस (४० तोले)

☆

१—३ रत्ती = १ वल्ल (वाल)।

SOME COMMON POISONS

Signs and Symptoms	Treatment
Acid Carbolic, *including phenols in general, lysol and other cresols, creosote, etc.* Characteristic odour of breath; whitened lips and mouth; burning pain from mouth to stomach which may become dulled owing to local anaesthetic effect; pupils contracted; body cold and clammy; temperature subnormal; feeble pulse; stomach contracted and rigid; reflexes may be abolished; urine black on standing.	Stomach may be washed out with a solution of magnesium or sodium sulphate, $\frac{1}{2}$ oz. to the pint, or an emetic may be given; stimulants if necessary; milk, egg albumen or other demulcents are given later and the sulphate repeated; hot water bottles to extremities; artificial respiration as necessary.
Acid Hydrocyanic (prussic acid), *including cyanides, cherry laurel water, bitter almond oil, etc.* Characteristic smell of bitter almonds; respiration rapid and vigorous, becoming slow and gasping; slow imperceptible pulse; glassy protruding eyes; dilated pupils; convulsions; limbs flaccid; skin clammy and cold; mouth may be covered with foam, frequently blood-stained.	Immediate action is imperative; if possible stomach tube or emetic; cold douche to head and spine; artificial respiration; inhalation of amyl nitrite or ammonia (smelling salts); brandy and other stimulants internally; ether subcutaneously; $\frac{1}{2}$ oz. of tincture of perchloride of iron in a wineglass of water followed by a teaspoonful of magnesium carbonate which may be repeated if necessary. With large doses death is almost instantaneous and little can be done. If the patient lives for 30 minutes, recovery is likely

Acids, Inorganic, Corrosive, *including hydrochloric (spirits of salt), nitric and sulphuric (oil of vitriol).*

Lips, mouth and tongue burned; pain in digestive tract; intense thirst; dysphagia; nausea and vomiting; pulse rapid and feeble; clammy skin; respiration shallow and difficult; collapse; convulsions possible.

Do not use stomach tube or emetics. Administer magnesia; cream of magnesia; lime water; soap solution; followed by milk; egg albumen; olive oil; barley water. Morphine for pain. Alkaline carbonates (chalk, whiting, magnesium carbonate, sodium carbonate, etc.) may be used in an emergency but are better avoided, if possible, in poisoning by concentrated acids, since they liberate CO_2 which may cause gastric distension and perhaps perforation.

Acid Oxalic
including oxalates, binoxalates, salt of sorrel, salts of lemon.

Severe pain in throat and stomach; dysphagia; intense thirst; muscular weakness; vomiting (frequently of bright or dark blood); skin clammy and cyanosed; respiration rapid and laboured; pulse feeble and fluttering; dilated pupils; collapse; convulsions possible.

Give magnesia, lime, lime water or a soluble magnesium or calcium salt with a small quantity of water and in mild cases follow with stomach tube; thereafter magnesium sulphate or castor oil; milk and demulcents; stimulants; external heat. Where a concentrated dose has been taken causing deep corrosion of the mucosa (indicated by severe burning pain and collapse) the stomach tube must not be employed. Treatment is continued on the same lines as for mild cases.

Alkalis (caustic),
including caustic potash, caustic soda, soap lees, strong ammonia, etc.

Pain in mouth, throat and abdomen; lips and tongue swollen;

Do not use stomach pump or emetics. Give diluted vinegar or lemon juice or solutions of citric and tartaric acids to neutralize the alkali. Follow with milk, olive oil, egg albumen; stimulants;

mucous surfaces first whitened, later brownish; vomiting; diarrhoea; skin cold and clammy; pulse rapid and weak; shock.

morphine for pain; heat to extremities.

Antimony Compounds, *including tartar emetic, butter of antimony, etc.*

Acute Poisoning. Burning heat and constriction or choking in throat; severe pain in abdomen; thirst; nausea; voilent vomiting; purging; cramp in calves; urine scanty or suppressed; pulse at first rapid then slow and imperceptible; skin cold, clammy and cyanotic; profuse perspiration; delirium; paralysis and coma.

Encourage vomiting by repeated draughts of tepid water. If it has not begun use stomach tube or administer emetic. Give tannic acid gr. 30 in water repeated until cessation of vomiting. Thereafter give milk and egg albumen; respiratory and circulatory stimulants; morphine to relieve pain; external heat; oxygen or artificial respiration as required.

Arsenical Compounds, *including arsenical weed-killer, sheep dip, horticultural sprays, etc.*

Acute Poisoning. Burning pain in oesophagus and stomach; intense thirst; vomiting (often blood-stained); profuse diarrhoea; urine scanty or suppressed; cramps; cold clammy skin; cyanosis; pulse small, frequent and feeble; collapse; convulsions.

Use stomach tube or emetic; give ferric hydroxide freshly prepared by diluting 1½ ozs. of ferric chloride solution with a wineglassful of water and adding the resulting solution to ½ oz. of sodium carbonate in half a tumblerful of water. Ammonia may be used in place of the sodium carbonate to precipitate the ferric hydroxide; 10 to 20 c.c. of 10 per cent. solution of sodium thiosulphate intravenously; milk and eggs; olive oil; barley water; stimulants, ice for thirst; glucose saline intravenously or subcutaneously; heat to extremities; morphine for pain. BAL (British anti-lewisite) intramusculary or BAL-INTRAV intravenously provide a specific antidote.

Aspirin

(acetylsaiicylic acid)

Nausea with or without vomiting; epigastralgia; dizziness; tinnitus, mental confusion; visual disturbance; profuse prespiration; pulse rapid and feeble; breathing laboured, sleepiness; coma.

Stomach lavage with water or solution of sodium bicarbonate; give saline purgative; stimulants; in severe cases intr venous sodium bicarbonate or sodium lactate solution for acidosis In some cases lumbar puncture and the removal of 30 c.c. of fluid is helpful. Administer vitamin K analogues to restore blood prothrombin levels.

Barbiturates,

including barbitone, pheno-barbitone, hexobarbitone, etc.

Giddiness; mental confusion. ataxia; delirium; coma; marked fall in blood pressure; depression of respiration; temperature may fall or increase; pupils moderately dilated; absence of corneal reflex; cyanosis; suppression of urine; constipation; skin rashes possible.

Gastric lavage or emetic. Lumbar puncture; stimulants; intravenous glucose saline; catheter or enema as required; artificial respiration if necessary, external heat.

Three to 10 c.c. of a 1 : 1000 picrotoxin solution intravenously every ten minntes until spontaneous muscular movements occur. Thereafter repeated injections at greater intervals to retain signs of stimulation.

Strychnine gr. $\frac{1}{8}$ repeated every 2 hours until signs of recovery occur may be used in place of picrotoxin.

Belladonna,

including atropine, night-shade berries, hyoscyamine, hyoscine, etc.

Dryness in mouth and throat; great thirst; voice hoarse; pupils

Use stomach tube or emetic. Give tannic gr. 20 in water, pilocarpine nitrate gr. $\frac{1}{3}$ repeated every 2 hours until mouth is moist, morphine gr. $\frac{1}{8}$ to $\frac{1}{4}$ cautiously (NOT in hyoscine

dilated (double vision); skin flushed and dry; skin eruptions possible; temperature raised; rapid bounding pulse; breathing slow and stertorous; purging; scanty urine; delirium.

poisoning or barbiturates; stimulants; hot coffee; external heat; catheterize if urine retained; artificial respiration as required.

Camphor

Characteristic odour, pallor of face, lividity of lips, mental excitement and dizziness, vomiting, colic, tinnitus, pulse, quickened; respiration difficult; skin clammy, delirium, convulsions.

Burning pain in stomach if large doses have been taken.

Use stomach tube or emetic, external heat, stimulants, artificial respiration, ether inhalations, opium or chloral hydrate for convulsions.

Cantharides

Burning pain in throat and stomach, swollen blistered tongue, dysphagia, salivation, intense thirst, colic, vomiting, diarrhœa (bloody), temperature raised, strangury, rapid pulse, respiration depressed, burning pain in back, bladder and urethra, delirium, convulsions.

Use stomach tube in early stages where no blistering. If throat is blistered produce emesis with apomorphine gr. 1/10. Give white of egg, milk, barley water, morphine gr. $\frac{1}{4}$ for pain, stimulants, external heat, anæsthetics to control convulsions.
Do not give oils.

Carbon Monoxide,
including coal gas.

Acute poisoning; dyspnœa on exertion; lassitude; nausea; giddiness; tinnitus and throbbing of the heart. There may be con.ulsions and incontinece of urine and fæces. Bright red colouration of the skin and mucosæ.

Remove patient to fresh air. If respiration has failed institute artificial respiration immediately. Administration of oxygen with 5 to 10 per cent of carbon dioxide. Keep paitent warm and absolutel quiet. Blood transfusions may be used.

Cocaine

Pallor; dry skin with later sweating; dry numb throat; dilated pupils; pulse rapid; laboured respiration; drop in blood pressure; tremors; delusions; convulsions.

Use stomach tube or emetics; strychnine gr. 1/30 hypodermically brandy; sal volatile; adrenaline intramusculary; inhalation of amyl *nitrite;* **oxygen** and artificial respiration if required; phenobarbitone sodium gr. 5 intravenously or ether inhalations to control convulsions.

Copper salts (including verdigris, blue vitriol)

Salivation, vomiting (blue green), diarrhœa (sometimes bloody);giddiness, headache; pulse rapid, shallow rapid respiration; skin cold and clammy; suppression of urine; delirium; convulsions; coma.

Give milk and eggs in large quantities followed by gastric lavage or an emetic; then gr. 5 of potassium ferrocyanide in water repeated at short intervals as necessary; demulcents; stimulants; opium or morphine for pain; external heat; artificial respiratiou and catheterization as required.

Digitalis (Fox Glove)

Headache; giddiness; abdominal pain; vomiting (green); purging; suppression of urine; salivation; muscular weakness; disordrred vision; pupils dilated; pulse slow and irregular, lethargy; delirium; convulsions; coma.

Gastric lav..ge (preferably with tannic acid) or an emetic; stimulants; warmth to extremities; artificial respiration and catheterization as required.

Recumbent position to be maintained for several days after improvement.

Food Posioning

Allergy. Malaise; gastro-intestinal disturbances; urticaria, etc.

Injections of adrenaline; purgatives. Antihistaminic agents, e.g. 'Anthisan' may be useful.

Botulism. Dizziness; blurring of vision; diplopia; photophobia; lachrymation; dry throat and

Botulinus antitoxin; penicillin; morphine; purgatives; posterior

mouth; muscular weakness and incoordination; constipation; mental faculties unaffected; temperature and pulse rate normal; gastro-intestinal symptoms usually absent.

pituitary extract to relieve the intestinal atony; stimulants.

Salmonella infection. Headache; abdominal pain; nausea; vomiting; diarrhoea; slight increase in temperature; muscle weakness; collapse; prostration.

Stomach lavage with a warm solution of sodium bicarbonate, castor oil, aromatic powder of chalk, glucose saline solution by intravenous infusion, stimulants.

Poisonous fungi. Two main types of mycetismus or poisoning by fungi occur, the rapid type and the delayed type. In the rapid type symptoms include lachrymation, salivation, sweating, cardiovascular collapse, vertigo, weakness, confusion, coma and occasionally convulsions. In the delayed type evidence of poisoning occurs up to 15 hours after ingestion of the fungus by the sudden onset of severe abdominal pains, nausea, vomiting, and diarrhœa, dehydration and thirst. Jaundice and oliguria or anuria from involvement of the liver and kidneys may occur. Low blood pressure and feeble heart action.

Endeavour to obtain identification of the causative fungus as an aid to prognosis and treatment. Conventional tests of toxicity such as peeling of the cap and tarnishing of silver coins are entirely fallacious. The rapid type may be caused by *Amanita muscaria* which contains muscarine to which atropine is a specific antidote, and provided it is administered early the prognosis is good. Delayed poisoning may be due to *Amanita phallodes* and allied species such as A. *verna* and in these the prognosis is grave. Administer anti-phallinic serum (Central Public Health Laboratory London, N. W. 9—Telephone: COLindala 6041). Give rabbit stomach brain treatment (C. A. Birch, *Practitioner*, 157, 135, 1946.). In all cases of fungus poisoning. gastric lavage or an emetic may be used together with symptomatic and supportive therapy by the used of external heat, morphine subcutaneously for pain and the inhalation of oxygen if required.

Iodine

Acute Poisoning. Metallic taste, burning pain in throat and stomach, vomiting (yellow, or blue if starch is present in stomach), purging (stools may be bloody), intense thirst, skin cold and clammy, cyanosis, small frequent pulse, giddiness, faintness, convulsions, coma.

Use stomach tube or emetic. give frequent draughts of starch, rice or barely in water or sodium bicarbonate or sodium thiosulphate in water, demulcents, stimulants, morphine to relieve pain, external heat, saline solution by intravenous infusion.

Lead and salts

Acute Poisoning. Metallic taste, dry throat, inteuse thirst, abdominal colic, constipation, vomiting (may be bloody), muscular weakness, giddiness, convulsions, coma.

Gastric lavage with magnesium or sodium sulphate solutions followed by plain water, or emetics may be given, followed by ½ oz. of magnesium or sodium sulphate in a tumblerful of water. Give demulcents, stimulants, morphine for pain, external heat.

Mercury Compounds, ***including corrosive sublimate, white precipitate, red precipitate, vermilion, cinnabar.***

Acute Poisoning. Metallic taste; burning pain in mouth, throat and stomach; choking sensation; tongue may be white and swollen; colic; vomiting; purging (watery stools containing coagulated mucous membrane and blood); temperature subnormal; pulse rapid, irregular, feeble; skin cold and clammy; acute kidney inflammation; urine scanty or suppressed.

Gastric lavage *after* giving large quantities of white of egg in milk or water. At the conclusion leave a quantity of white of egg in stomach; the stomach should be emptied again after a few hours and once more later.

Give tincture of opium or morphine for pain; demulcents; stimulants.

Sodium thiosulphate may be given intravenously in corrosive sublimate poisoning.

There is evidence that BAL (British anti-lewisite) intramus-

cularly or BAL-INTRAV intravenously may be valuable in mercurial poisoning.

On the termination of the acute symptoms a creful watch must be kept on the 24–hour urinary output so that the possible onest of anuria may be anticipated.

Nicotine

Burning sensation in mouth, throat and stomach; salivation; mental confusion; muscular weakness; giddiness; vomiting; cold clammy skin; pulse slow then rapid; sighing respiration; convulsions; coma.

Gastric lavage with tannic acid or emetics. Hypodermic injection of strychnine sulphate; stimulants; external heat; artificial respiration, oxygen.

Opium

including laudanum, morphine, codeine, heroin, chlorodyne, etc.

Preliminary mental excitement followed by headache; dizziness; "pin–point" pupils, skin cold and clammy; face cyanosed; muscular relaxation; pulse slow and feeble; respirations slow and shallow; temperature subnormal; convulsions possible in later stages.

Rouse patient and keep awake by walking, flagellation, cold douches, etc.

Gastric lavage with ½ per cent. solution of potassium permanganate leaving ½ pint in stomach at conclusion. This proceaure should be repeated in about 3 or 4 hours' time and perhaps once again later.

Give hot coffee and stimulants; strychnine; caffeine; atropine sulphate, gr. 1/30, repeatsd with caution; heat to extremities; artificial respiration; inhalation of oxygen and carbon dioxide.

Phosphorus

Odour of garlic in breath and eructations; vomiting of blood (green or black); burning abdominal pain; sometimes purging; headache; thirst; abdomen swollen; scanty albuminous urine frequently bloodstained; temperature subnormal; accelerated respiration; feeble pulse. In the later stages jaundice, delirium, convulsions, etc.

Repeated gastric lavage with large quantities of potassium permanganate solution 1 : 500 or 1 per cent. hydrogen peroxide; then active purgation with magnesium sulphate and high colonic irrigations with potassium permanganate solution.

Alternatively copper sulphate in doses of gr. 10 in half glass of water may be given and repeated until vomiting occurs.

Give opium or morphine for pain; demulcents; external heat; sodium bicarbonate or alkaline drinks.

Oils and fats including milk must be avoided in the diet for some time.

Silver Nitrate

Burning pain in throat and stomach; vomiting of whitish flaky matter which blackens on exposure to light; purging; dizziness; weak thready pulse; shallow respiration; convulsions possible.

Give 2 tablespoonfuls of sodium chloride in a glass of water and follow by stomach tube or emetic. Repeat this procedure as necessary, then give large draughts of white of egg in water; demulcents; opium or morphine for pain; stimulants; external heat.

Snake Bite

Snake venoms are composed mainly of two constituents, a hæmotoxin and a neurotoxin; the former destroys red blood cells and tissues, while the latter, which has a curare–like action,

Ligature the part above the bite; make deep cross–shaped incisions over the bite; suction–mechanically or by mouth–rinse mouth with diluted permanganate of potash first–cover bite with

attacks the nerve centres, particularly the sympathetic system. The venoms of different types of snakes contain varying proportions of each, the extremes being shown by the viper and cobra.

Viper bite—principally hæmotoxin. Immediate swelling and discolouration; oozing of blood from mouth and conjunctiva; frequently vomiting (bloody); coma; death in 6 to 2 hours.

Cobra bite–principally neurotoxin. Slow moderate swelling; little or no discolouration; paralysis of respiration and vaso-motor centre; asphyxia.

wet dressing–repeat suction for 15 minutes eveay hour for several hours; specific antivenom serum subcutaneously or in urgency, intravenously. The injection into or round the wound of ½ to 1 per cent, solutions of premanganate of potash, is sometimes recommended. but may cause destruction of tissue.

Give fluids by mouth, rectum or intravenously; inject adrenaline, nikethamide, etc ; artificial respiration: blood transfusion.

Strychnine

including nux vomica, vermin killers, brucine, etc.

Feeling of suffocation; face livid; tetanic convulsions; sweating and exhaustion; opisthotonos; *risus sardonicus*; staring eyeballs; rigid abdominal muscles.

Patient is fully conscious.

The jaw muscles are not affected till late (diagnosis from tetanus).

Control convulsions if already present by inhalation of ether or chloroform and then carry out gastric lavage with a solution of tannic acid, weak solution of iodine or permanganate of potash; alternatively emesis by apomorphine. Inject gr. 1/10 of phenobarbitone sodium for each pound of body weight and if convulsions recur a further injection containing half the dose may be given; alternatively chloral hydrate may be given orally. Give physiological saline by intravenous infusion; catheterize if necessary; artificial respiration and oxygen as required.